महाप्रयाण

लेखक

श्री. एस० मनोहर लाल

प्रो. भगवती प्रसाद पान्थरी

प्रकाशक

१९५८]　　प्रकाशन गृह, टिहरी गढवाल　　[मूल्य ४।।।)

प्रकाशक
श्री पांथरी
प्रकाशन गृह, टिहरी गढ़वालस्टेट

❀

मुद्रक
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, काशी।

समर्पण
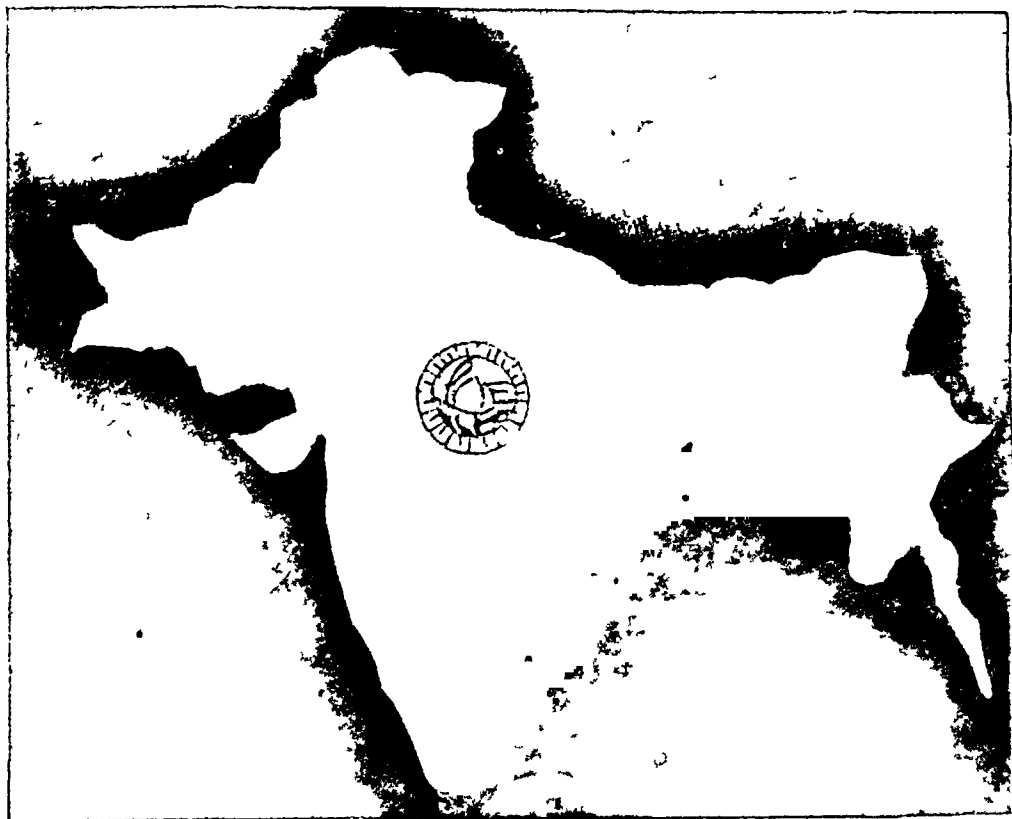
भारतीय आत्मा

पूज्य बापू के चरणों में श्रद्धा का यह फल

सादर समर्पित

दो शब्द

आज हम ढाइ हजार वर्ष के बाद भी बुद्ध के परिनिर्वाण को नहीं भूले है, नहीं भूल सकते हैं। बापू का 'महाप्रयाण' भारत भूमि के महिमामय इतिहास की एक ऐसी दुर्घटना है, जैसी उससे पहले कभी नहीं घटी। 'महाप्रयाण' के सम्पादक द्वय ने 'महाप्रयाण' का संकलन कर वर्तमान पीढी की ही नहीं, अपनी आने वाली पीढियो की भी सेवा की है।

प्रार्थना है कि बापू का जीवन और 'महाप्रयाण' हमारे अन्धेरे पथ को कुछ प्रकाशित करे।

काशी विद्यापीठ
२ ३. ४८.

} आनन्द कौसल्यायन

आमुख

हमें तो उस हत्यारे की बुद्धि पर तरस आता है जिसने यह सोचा कि गांधीजी के शरीर को गिराकर वह गांधीत्व को भी धराशायी कर देगा। वह वस्तुतः मृत्यु का अर्थ ही नहीं समझ सका। उसने यही समझा कि मृत्यु का अर्थ है केवल शरीरान्त और वह गांधीजी को मारकर गांधीजी के विचारों का भी अन्त कर डालेगा और उस महान् दीपक की लौको अकस्मात् शान्त कर देगा जो दुनिया को आज भी प्रकाश दे रहा है। अतः उसने गोलियां दागीं—गांधीजी का तपःपूत शरीर भूमिपर आ गया, लेकिन गांधीजी का गांधीत्व आवरण मुक्त होकर और भी चमक उठा। यह कैसा अचरज, पागल हत्यारे का भ्रांत मस्तिष्क भी सचमुच यह देखकर चक्कर काटने लगा होगा।

शरीरान्त में मौत देखना और जीवित रहकर जीवन की चरम उपलब्धि प्राप्त करने का प्रयास ये दोनों दंभी और अहंकारी मनुष्य की भावनाए रही है। ऐसे मनुष्य कायाके अमरत्वके पुजारी और आत्मा के विरोधी हुए है। और इस कारण वे अपनी मानवता तक को गवां बैठे। ऐसे ही प्रकार के मनुष्यों को हमारी पौराणिक गाथाओं में 'राक्षस' कहा गया है। रावण और हिरण्यकश्यप ऐसे दंभी मनुष्यों ही के प्रतीक हैं। ये दोनों कभी मरना न चाहते थे और सदा अमर रहकर जीवित रहना चाहते थे। वे जीवन के चरम सत्य, सुख और ऐश्वर्य को शरीर में रहकर ही प्राप्त करना चाहते थे। रावण ने तो कहा जाता है सदेह स्वर्ग जाने के लिए सोपान तैय्यार करने की योजना भी बना ली थी परन्तु इस सारे दंभ और अहंकार का अन्त क्या हुआ ?—घृणित मृत्यु और वह भी केवल एक साधारण मानव राम के द्वारा।

आज अमरत्व लोलुप रावण को मिटे अनन्त युग बीत चुके है, पर राम विना देह का अमरत्व प्राप्त किये भारतके प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में आज भी आसीन है। इससे प्रकट है कि देह का अमरत्व प्राप्त करने की चेष्टा एक राक्षसी प्रयास, और सत्य का विरोध है। अतः यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि अमरत्व देह का नहीं, सत्य का अथवा आत्मा का लक्षण या गुण है। इसलिए जो अनित्य है उसका विनाश आवश्यक है लेकिन उसके विनाश से 'नित्य' का विनाश नहीं हो सकता।

नश्वर देह अनश्वर आत्मा का परिधान मात्र है और गीता के कथनानुसार यह पुराना पड़ने पर बदला ही जाता है। परन्तु भौतिकता और देह के उपासक इस सत्य की उपेक्षा करते रहे हैं। वे देह को ही सब कुछ मानते है इसलिए उनका प्रहार देह पर हुआ करता है। गांधीजी के हत्यारे को प्रेरणा देने वाले व्यक्तियों ने भी यही सोचकर तो गाधीजी को मरवाया। परन्तु अब वे जरूर शिर धुनते होंगे यह देखकर कि गाधीजी का शरीर तो गिरा लेकिन देह के भीतर के गाधीजी आज और भी उज्वल, स्वर्णिम और स्वर्गीय आभा से युक्त होकर मानवता के हृदयाकाश मे जाज्वल्यमान सूर्य्य की तरह चमक रहा है।

मृत्यु तो जीवन का ही दूसरा पहलू है। अनन्त काल के अंधकूप से उसकी उत्पत्ति हुई है और उसी अनन्त मे जाकर उसकी निष्पत्ति भी होती है। महाकाल से सृष्टि की उत्पत्ति है और महाकाली से उसकी निष्पति, तो मरना जीवन की कोई विरोधी घटना नहीं वह तो जीवन के प्रवाह में एक धारा है। जीवन को पूर्णता प्रदान करने का काम भी इसी मृत्यु का है जिससे साधारण मनुष्य इतना डरा करता है। जीवन की बिखरी हुई सीमाओं को आबद्ध करने वाली यही मृत्यु तो है। जीवन एक गति है, एक लय है, एक बढता हुआ प्रवाह जिसे परिवेष्ठित नहीं किया जा सकता। जीवनका चल चित्र जबतक चलता रहता है उसकी पूरी तस्वीर अंकित नहीं की जा सकती। और बिना अंकन के जीवन का मूल्याकन करना भी कठिन है। जीवन असीम है और जबतक वह सीमाओं के भीतर वेष्ठित न कर लिया जाय उसका स्वरूप स्पष्ट नहीं हो सकता। इसलिए वर्तमान युग के एक जर्मन दार्शनिक ने कहा है कि 'The only frame for the fleetng picture of life is Death' जीवन की चलती हुई तस्वीर के लिए मृत्यु ही एक समुचित चौखट है (Immortality, by Kesserling, P 76)।

निःसन्देह आज मृत्यु की चौखट मे आवेष्ठित होकर महात्मा गांधी के जीवन की तस्वीर अपने पूर्ण रगों के साथ चमक उठी है। आज इस तस्वीर का सौंदर्य पूर्णिमा के चन्द्र को तरह पूर्ण समुज्वल होकर चमकने लगा है।

मृत्यु ने निःसन्देह और निर्विवाद रूप से गाधीजी के जीवन को पूर्णता प्रदान कर दी है। आज ससार स्वीकार करता है कि गांधी जी मरकर अमर हो गये हैं। गांधीजी जबतक जीवित रहे काया और शरीरके मोह से अलग रहकर आत्मा और परमात्मा के साथ मिलकर इस भूमि पर सत्य, अहिंसा और प्रेम

का राग आलापते रहे। उनके इस राग की ध्वनि मरने पर आज और भी तीव्र और मधुर होकर विश्व की आत्मा मे गूंजने लगी है। उनकी यह कल्याण कलित रागिनी कभी मर नहीं सकती। गानेवाला चला गया है लेकिन उसके संगीत की लय विश्व मे शाति बिखेरती हुई घूमती ही रहेगी। गांधीजी मर गये हैं, किन्तु उनके बोल जगत को नित्य सुनायी पड़ते ही रहेंगे। क्योंकि गांधीजी एक सत्य थे जिसका विनाश असंभव है। मानव में जबतक थोड़ी सी भी सभ्यता, हिंसा के प्रति विरक्ति और जीव तथा प्राणियों के प्रति दया-माया के भाव विद्यमान रहेंगे गांधीजी के सन्देश उनके कानों में साहस और उत्साह भरते जांयगे।

गाधी एक ऐसा प्रकाश पुंज है जिसका उजाला कभी शांत न होगा और हिंसा से पूरित काले और अधेरे मार्ग में फंसने से रोकने के लिए मानव जाति को रोशनी देता रहेगा। तब हम क्यों कहें गांधीजी मर गये—गांधीजी शरीर से मरे है लेकिन आत्मा के रूपमें सत्य के रूपमें वे अजर हैं अमर है और नित्य है। सत्य और ईश्वर का वह साथी भला मर कैसे सकता है। हमे आशा है गांधीजी के महाप्रयाण की कहानी हमें साधारण मौतके शोकके बदले जीवनपर विजय पाने की शक्ति और प्रेरणा प्रदान करेगी और हिंसा तथा द्वेष से पूर्ण इस संसार पर छाये अधियारेको प्रकाशित कर उसे दूर हटा देगी।

इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर हमने बापू के—महाप्रयाण की कहानी को प्रस्तुत पुस्तक मे संकलित किया है। यदि महाप्रयाण की यह कहानी अपने इच्छित ध्येय मे सफल हुई तो हम अपने इस प्रयास को व्यर्थ न समझेंगे।

इस पुस्तक के प्रूफ पढने और ब्लाक बनवाने में हमें अपने कर्नाटक के विद्यार्थी मित्र श्री गजानन शर्मा और श्री महाबलेश्वर भट्ट से बहुत मदद मिली है जिसके लिए हम आभारी है। पुस्तक के बारे हमे प्रो. गोरावाला खुशालजैन से उपयोगी सुझाव और लेखोंके संकलनमे श्री दिनेशचंद्र सकलानी (विद्यार्थी तृतीय वर्ष, शास्त्री विद्यापीठ) से सहयोग प्राप्त होता रहा है जिसके लिए हम उन्हें हृदय से धन्यवाद देते है।

पुस्तक मे जहां तहां जो कुछ त्रुटियां रह गयी हैं उनके लिए पाठक हमे क्षमा ही न करेगे किन्तु सुधार के सुझाव भी अवश्य देगे।

विषय सूची—

अंतिम लीला

सब व्याधियों की औषधराम

प्रकाश-स्तम्भ

अप्रत्याशित

बापू चले गये

बापू चले गये ! किसी को विश्वास न होता था। रेडियो और अखबार की खबरों को सुनकर और पढ़कर हृदय जम गया। आखे पथरा गईं और आत्मा मे शून्यता व्याप्त हो गई थी–लेकिन जो होना था सो हो चुका था ! निरभ्र आकाश से बिजली असभव है लेकिन गिर चुकी थी, और सतप्त हृदय से दुनिया ने अखबारो मे छपे नई दिल्ली से प्रेषित इस समाचार को पढ़ा—

नयी दिल्ली ३० जनवरी।

जब वे शामको बिड़ला भवन में प्रार्थना के मैदान की तरफ जा रहे थे तो किसी ने उन पर चार बार गोली चलायी। वे सख्त घायल हुए। डाक्टर तुरंत बुलाये गये।

गांधीजी ५ बजकर ५ मिनटपर बिड़ला भवनसे बाहर निकले और अपनी दो पोत्रियोंके कन्धोंके सहारे प्रार्थना की जगह पैदल जाने लगे। ज्योंही वे मचके पास आये भीड़ दो हिस्सोंमे छंट गयी ताकि गाधीजी बीचसे होकर निकल जाय।

भीड़मे से एक आदमीने, जो ३०–३५ की अवस्थाका था और खाकी वर्दी पहने था, गान्धीजीके पास आते ही करीब २ गजके फासले परसे उनपर रिवाल्वरसे ४ गोलियां चलायीं।

गाधीजीके पेटमे गोली लगी और वे उसी दम गिर पड़े। उनकी पौत्रियों आभा गाधी और मनु गाधीने उनको पकड़ लिया और रोने लगीं। यह सब इतनी जल्दी हुआ कि भीड़मे किसीको पता ही नहीं चला कि क्या हुआ। भीडमे से कुछ लोग हत्यारेपर टूट पडे और उसे पकड़ लिया। भीड़मे से कुछ तो आतकित होकर बेतहाशा भागने लगे और बाकी लोग उधर झपटे जहा गाधीजी पर गोली चलायी गयी थी। ११५

गांधीजी, जिनके शरीरसे खून बह रहा था, तुरंत ही बिड़ला भवनमें ले जाये गये जहां तुरत डाक्टर बुलाये गये। जिस कमरेमें गांधीजी पड़े रहे उसमें किसीको अन्दर नही जाने दिया जाता रहा।

आधे घंटे बाद ५-५० पर गांधीजी के कमरेसे एक आदमी बाहर आया और उसने कहा—

"बापू नहीं रहे !"

बाहर भीड़ जो गांधीजीके बारेमें जाननेको उत्सुक खड़ी थी गांधीजीके निधनकी बात सुनकर पत्थर जैसे हो गयी।

दाह संस्कारके लिए गांधीजीका शव कल जमुना घाटपर ले जाया जायगा। कल ११ बजे बिरला भवनसे रथी निकलेगी और ४ बजे शामको श्मशान घाट पर पहुँचेगी।

जिस व्यक्तिने महात्मा गांधीकी हत्या की है उसका नाम है नाथूराम विनायक गोडसे। यह व्यक्ति ३६ वर्ष का सुशिक्षित मरहटा हिन्दू है।

ज्ञात हुआ है कि हत्यारा कल ही दिल्ली आया था। पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनपर प्रथम दर्जेके "वेटिंग रूम" मे उसका बिस्तर पाया गया है।

वह निर्मम क्षण

ईश्वर के सिवाय किसे मालूम था कि उस साध्य प्रार्थना मे जाते हुए क्या होने वाला है। प्रार्थना की भीड़ तो गांधीजी की प्रतीक्षा में थी और प्रवचन सुनने की उत्सुकता लिए थी, और गांधीजी आ भी गये थे लेकिन भगवान की इच्छा वे आये और रुला करके चले गये। भगवान ने क्या उन्हे अपने पास बुला लिया था क्योंकि मनुष्य बहुत नीचे गिर चुका था और देवत्व के लिए स्थान न रह गया था ? इसीलिए वे आये और तुरन्त चले गये ! उस निर्मम क्षण का विवरण एसोसियेटेड प्रेस के सवाददाता ने इस प्रकार अखबारों मे दिया था—

"लगभग ५०० व्यक्तियोंकी भीड़ प्रार्थना सभाके लिए गांधीजीका इन्तजार कर रही थी। ५ बज चुके थे। गांधीजी अपनी पोतियों आभा गांधी और मनु गांधीके

कन्धेपर हाथ रखे हुए विरला भवनके बाहर निकले और जैसी उनकी आदत थी मंच की ओर तेजीसे बढ़ने लगे। जब गांधी भीड़के नजदीक पहुँचे तो वह उनको रास्ता देनेके लिए दो हिस्सोंमे बट गयी।

जब महात्मा गांधी मचसे १५ गज रह गये तो एकाएक गोली चलनेकी अवाज सुनायी पड़ी। अवाज दो गजकी दूरीसे आयी। मैने उस आदमीको देखा, जिसने गोली चलायी थी। वह अपने दाहिने हाथमे सीधी रिवाल्वर पकड़े हुए था। इसीके बाद तीन बार और गोली चलनेकी आवाज आयी।

इसके बाद ही मैंने गाधीजीको गिरते देखा। मालूम होता था कि उनके पेटमे गोली लगी है। गांधीजी की धोतीपर खून बहने लगा।

एकाएक भीड़मे भगदड़ और आतक फैल गया। एक मिनटके लिए मालूम होता था कि मेरी मृत्यु हो गयी।

गोली मारनेवालेके पास जो लोग खड़े हुए थे उन्होंने तुरन्त उसे पकड लिया। लोगोंने उसकी कलाई जोरसे पकड़ ली उसकी रिवाल्वर गिर पड़ी। गोली मारनेवाला फौजी ढर्रेकी खाकी कमीज और पतलून पहने हुए था।

पहरा देनेवाले सिपाहियोंने उस व्यक्ति को पकड़ लिया। महात्मा गाधी जहांपर पड़े थे मै उसी ओर दौड पड़ा।

मैने देखा गाधीजीके शरीरसे खून बह रहा था। उनकी आंखे बंद थीं और सर एक ओर झुका हुआ था। उनके दोनों हाथ जुडे हुए थे। मालूम हो रहा था कि वे प्रार्थना कर रहे हैं। उनकी पोतियोंने उन्हे बैठा दिया और तुरन्त ही चार पाच आदमी उन्हें उठाकर बिरला भवनमे ले गये। जिस कमरेमे गांधीजी लिटाये गये उसके दरवाजे बन्दकर दिये गये और किसीको उनकी जगह जानेकी इजाजत नहीं दी गयी।

बिरला भवनके बाहर मै अपार भीड़मे खड़ा रहा। उसके बाद मैंने दीवान चमनलालको बाहर निकलते हुए देखा। मैंने पूछा गांधीजी कैसे है। उन्होंने उत्तर दिया, महात्मा गाधी अभी जीवित हैं। इसके पाच मिनट बाद ही कैम्पका एक आदमी बाहर निकला। उसका चेहरा पीला पड गया था। उसने कहा "बापूका स्वर्गवास हो गया।"

जवाहर लाल रो पड़े, और पटेल अवसन्न थे !

वापू चला गया ! जवाहर लाल का हृदय सन्न हो उठा था ! बिड़ला भवन मे वापू की निष्प्राण काया के बगल मे आंखों को हथेली पर रख बापू का प्यारा जवाहर सुबकियां ले रहा था ! हां, तभी यकायक उनका और उन्हीं के पास शोक और सन्तापमे डूवे उन के प्रिय साथी सरदार पटेल का हृदय यह सोचकर और भी कराह उठा कि असख्य वापू की भारत सन्तान और विश्व के नर नारी वापू के निधन से वेहोश हो रहे होंगे ! उन्होंने आंसू पोंछ डाले और 'रेडियो' पर आकर लोगों को भर्राये कंठ से सांत्वना देने लगे। वे बोल रहे थे-या रुदन कर रहे थे यह सोचकर रेडियो पर वैठे नर नारी और वाल-वृद्ध भी रो पड़े।

दूसरे दिन अखवारों मे यह रुदन भरा भाषण सव ने पढा। नेहरुजी वोले थे: 'प्यारे भाइयो और साथियो ! मै आपके सामने बोलने आया हूँ पर किस तरह कहूं और क्या कहूँ समझमे नहीं आता। एक अंधेरासा छा गया है। हमारे प्यारे वापूका देहान्त हो गया। एक पागल आदमीके हाथसे ऐसा हुआ। हमारी वड़ी वड़ी उम्मीद खत्म हो गयी, और हम निराश हो गये। हमें गुस्सा, तकलीफ और निराशा तो होगी ही, दिल अफसोससे भरा है, लेकिन इसके वारेमे हम वादमे सोचेंगे। अव हमें करना क्या है ? ऐसे मौकेपर हमारा और देशका इम्तिहान होता है। जाहिर है कि प्यारे वापू जो करते वही हमे करना है। ऐसी कोई वात न हो जिसे वे पसन्द न करते। हमे वही करना है जो उनकी निगाहमे अनुचित न होता, हमे उनकी हिदायतें माननी है।

वे गये पर वे सदा हिन्दके साथ रहेंगे। न कभी हिन्दुस्तान उन्हे छोड़ सकता है और न वे कभी हिन्दुस्तानको छोड़ेंगे। उनकी आत्मा हमे हमेशा रास्ता वतायेगी, उनकी निगाह यहीं लगी रहेगी। ७८ सालकी उम्र तक उन्होंने हमे सवक सिखाया, हमे आजादीके दरवाजे तक पहुँचा दिया और आज वह रोशनी छिन गयी और अंधेरा छा गया। लेकिन नहीं इस देश और दुनियासे उनकी रोशनी कभी नहीं हटेगी। १००० साल वाद भी उनके सवक हमे और दुनियाको रास्ता दिखायेंगे। दुनिया कहेगी कि एक इन्सान था, जिसने इस देशको रोशनी दी। मैं कहां तक कहूँ। इस वक्त तो मुझे इतनाही कहना है कि हम मर्दोंकी तरह इस दुखको वरदाश्त करें। हमे

मिलकर, छोटे मोटे झगड़े खत्मकर एक होकर जहर और उत्तेजना का सामना करना है, उसपर काबू पाना है। और उसे खत्म करना है, जिसकी वजहसे हम गलत वात करते रहे हैं। लेकिन हमें इस जहरका सामना करना है अपने रास्ते चलकर वापू के रास्ते चल कर। इस शानदार मुल्कके शानदार नेताके रास्ते हमें चलना है। हमे उस नेताकी शानके खिलाफ कुछ भी नहीं करना है।

इस वक्त मैं कलका कार्यक्रम वता दूं।

कल साढ़े ग्यारह वजे विड़ला हाउससे वापूका शरीर उठेगा। शहरकी खास सड़कोंसे होता हुआ जमुना नदीके किनारे जायगा। शामको चार वजे दाहक्रिया होगी। जो लोग गांधीजीके अन्तिम दर्शन करना चाहें वे रास्तेसे किनारे खडे हो सकते हैं।

यह तो दिल्लीके लिए प्रोग्राम है। देशमे हर जगह लोग कल उपवास करें और शामको चार वजे नदी या समुद्रके किनारे जाकर प्रार्थना करे, और सोचें और अपनी खरावियां निकालें। और प्रतिज्ञा करें कि सारी उम्र उन्हींके वताये रास्ते—सच्चे रास्तेपर चलेंगे। यही प्रार्थनाका सवसे अच्छा तरीका है।'

और जवाहरलालके चुप होनेपर थोड़ी ही देर वाद हिन्दके उप-प्रधान मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल भी भारतके रोते हुए हृदयों को सम्हालने के लिये रेडियो पर आकर खडे हुए, वे कह रहे थे:—

"भाइयो और वहिनो। मेरे प्यारे भाई पडित जवाहरलाल नेहरू का पैगाम आपने सुन लिया है। मेरा दिल दर्दसे भरा है। क्या कहूँ और क्या न कहूँ? आजका अवसर भारतवर्षके लिए शोक दर्द और शर्मका है। मै आज शामको चार वजेसे वापूके साथ था, और एक घटेतक उनसे वातकी। फिर वे घटी निकालकर वोले-मेरी प्रार्थनाका समय हो गया है, मैं चलूंगा। वे भगवानके मन्दिरकी ओर चल दिये, मै वहासे चला आया। मकानपर पहुँचा भी न था कि मेरे पास एक भाई आया और वोला कि एक नौजवान हिन्दूने गांधीजीके ऊपर पिस्तौलसे चार वार गोली चलायी। मैं फौरन वापस पहुँचा। उनका चेहरा देखा। हमेशाका वही शान्त चेहरा था। उनके दिलके भीतर दया और क्षमाके भाव उनके चेहरेसे प्रकट थे। और वहुतसे लोग भी वहा पहुँच गये। लेकिन वह तो अपना काम करके चले गये। चन्द

दिनोंसे उनका दिल खट्टा हो गया था। पिछले उपवासमे ही वह चले गये होते तो बहुत अच्छा होता। पिछले हफ्ते भी वह बमसे बच गये। इस समय उन्हे जाना था। सो वह भगवानके मन्दिरमें पहुँच गये।

समय दुख-दरदका है, गुस्सेका नहीं, क्योंकि अगर हमने गुस्सा किया तो हम उनकी जिन्दगी भरका सिखाया सबक भूल जायगे। जो हमने उनके जीनेपर न माना उसे मरने पर भी भूले रहे, ऐसा धब्बा हम पर लगेगा। इसलिए भाई जो उन्होंने सिखाया उसकी परीक्षा है। हमे शान्तिसे और मजबूतीसे पैर जमीनपर रखना है। हमारे ऊपर इतनी मुसीबत आ पड़ी है,हमारे ऊपर इतना बोझ आ पड़ा है कि हमारी कमर टूटने लगी। हम हमेशा उनका सहारा लेते थे। लेकिन हमारे जीवनका सहारा चला गया। चला तो गया ही पर वे हर मिनट हमारे साथ रहेंगे। जो चीज वे हमें दे गये है, वह हमारे साथ रहेगी। उनकी मट्टी तो कल शामको चार बजे खत्म हो जायगी, पर उनकी आत्मा तो अब भी हमारे साथ है और देख रही है कि हम क्या कर रहे है। शायद ईश्वरकी यही मरजी थी कि इसी तरह हम उनका बाकी काम पूरा करेंगे। मैं उम्मीद करता हूँ कि हम ना हिम्मत न होंगे। एक साथ मिलकर हमे बाकी काम अपने ऊपर उठाना है। ईश्वरसे प्रार्थनाकर हम इसीकी प्रतिज्ञा करें।"

महामानव की महायात्रा

वापू महामानव थे। वे सब के प्राण थे। उन के चले जाने से सारे जीव और प्राणी व्याकुल हो उठे थे। दिल्ली तो मानों उनकी महायात्रा को देखने के लिए उलट पड़ी थी। सारी राजनगरीही शोक मे विह्वल होकर उन्मादिनी की भांति बापू के महाप्रयाण के जुलूस के पीछे रोती हुई चली जा रही थी, और जब रेडियो इस महायात्रा का वर्णन सुना रहा था, विश्वभर क्रन्दन कर उठा था—राजनगरी तू धन्य है, तूने बापू की महायात्रा मे उन्हें विदा देने का सौभाग्य तो प्राप्त किया।

बापू की इस महायात्रा का वर्णन हिन्दुस्तान टाइम्स के विशेष संवाददाता ने इस प्रकार दिया था—

'अर्थी के जुलूस की तैयारियां उसी समय अर्ध रात्री से शुरु हो गईं जब कि देवदास गांधी, श्रीमती गांधी तथा अन्य परिजन और महात्मा गांधी के निजी साथियों ने हिन्दुधर्म के अनुसार गांधी जी के शवको स्नान कराया। इसके बाद एक साधारण चटाई पर जो गुलाबके फूलोंसे ढँक दी गयी थी, प्यारे नेता को लेटा दिया गया। सारी रात लोग जागे रहे और गीताका पाठ, श्लोक पाठ तथा रामधुन करते रहे।

६ बजे सुबह बिड़ला भवन के द्वार खोल दिये गये ताकि भीड़ मृत नेताके दर्शन कर सके। दो घटे तक हजारोंने शातिपूर्वक दर्शन किया। लेकिन बाद मे भीड इस तरह से बढ़ गई कि पुलिस कोई रोक थाम न कर सकी। कईयोंको भीड़के बढ़नेसे चोटभी आई! अन्तमे गाधीजी के शवको ऊपर रख दिया गया ताकि लोग बाहर दूर से ही देख सकें।

इस सुबहको मंत्रियोंमे जो सबसे पहले पहुंचे वे थे—सरदार वल्लभ भाई पटेल। उनके तुरन्त बादही नेहरूजी पहुँचे! वे जुलूस के संबधमे निर्देश करते हुए इधर उधर जाते दिखलाई पड़ते थे। वे उन अनेक राजदूतोंको, जो राष्ट्रके बापूकी अभ्यर्थना और पूजाके लिए माला लेकर वहां आते जाते थे, बापूके शवका दर्शन करानेके लिए अन्दरभी लिवा जाते थे!

अमेरीकाके राजदूतकी पत्नी श्रीमती ग्रेडी गांधीजीके शवके पास खड़ी रो रही थीं।

इसके बाद सरकारके सचिव और सिविल तथा मिलिट्रीके उच्चाधिकारी तथा अमृतसरसे एक विशेष वायुयान द्वारा सिखोंकादल पहुंचा जो अपने साथ सुवर्ण मन्दिरसे फूल और भेंट लाया था।

१० बजे दिनतक सरकारके तमाम मंत्री, कॉग्रेसी नेता और विधान सभाके सदस्य तथा आचार्य कृपलानी, श्रीमती कृपलानी और श्री मेहरचन्द खन्ना बिरला भवनमे आ पहुँचे।

सरदार बलदेवसिह महाप्रयाणके जुलूसका प्रबन्ध करा रहे थे!

लन्दनके भारतीयोंके प्रतिनिधि डा० सी० एल० कतिअलभी वहाँ उपस्थित थे। हैदरावादके प्रधान मंत्री श्री लायक अली नेत्रोंमे आँसू भरे शवके निकट तक गये!

गाँधीजी की अर्थी १० बजे दिनको विड़ला भवनसे निकाली गई। अर्थीको ३० आदमी, जिनमे श्री देवदास गाँधी,श्री जी० डी० विड़ला और श्री गाडगिलभी थे, बाहर लाये और तव शवको फूलों से सुसज्जित सैनिक गाड़ी पर रखा गया! सारी भीड़पर आत्मिक शाँति सी छा गई और वे शवपर गुलाबके फूल बिखेरने लगे। दूसरी ओर स्त्रियाँ जोर जोरसे सिसक रही थीं। गाँधीजी का शव श्वेत खद्दरमे लिपटा हुआ था और राष्ट्रीय ध्वजासे ढॅक दिया गया था। सिर और चेहरा खुला हुआ था और माथे पर चदन लेप दिया गया था!

११ बजकर ४३ मिनट पर जैसे ही गाड़ी पर लदा हुआ गाँधी जी का शव वाहर आया, शंखोंकी ध्वनि हुई और गाँधीजी की जय से वायुमण्डल गूंज उठा। पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और सरदार वलदेवसिंह शोकातुर होकर जुलूसका नेतृत्व कर रहे थे। गाड़ीके वीचके पावदान पर दाहिनी ओर सरदार वलदेवसिंह और वायीं तरफ नेहरूजी खड़े थे।

सरदार वल्लभ भाई पटेल महात्माजीके चरणोंके पास वैठे थे और सामनेसे श्री देवदास गाँधी वैठे थे।

लार्ड माउण्टवेटन जुलूसके आगे आगे थे। गाड़ीके आगे गान्धीजीके परिजन और आश्रमवासी थे! भीड़को चीरती हुई पुलिस और फौज अर्थीके
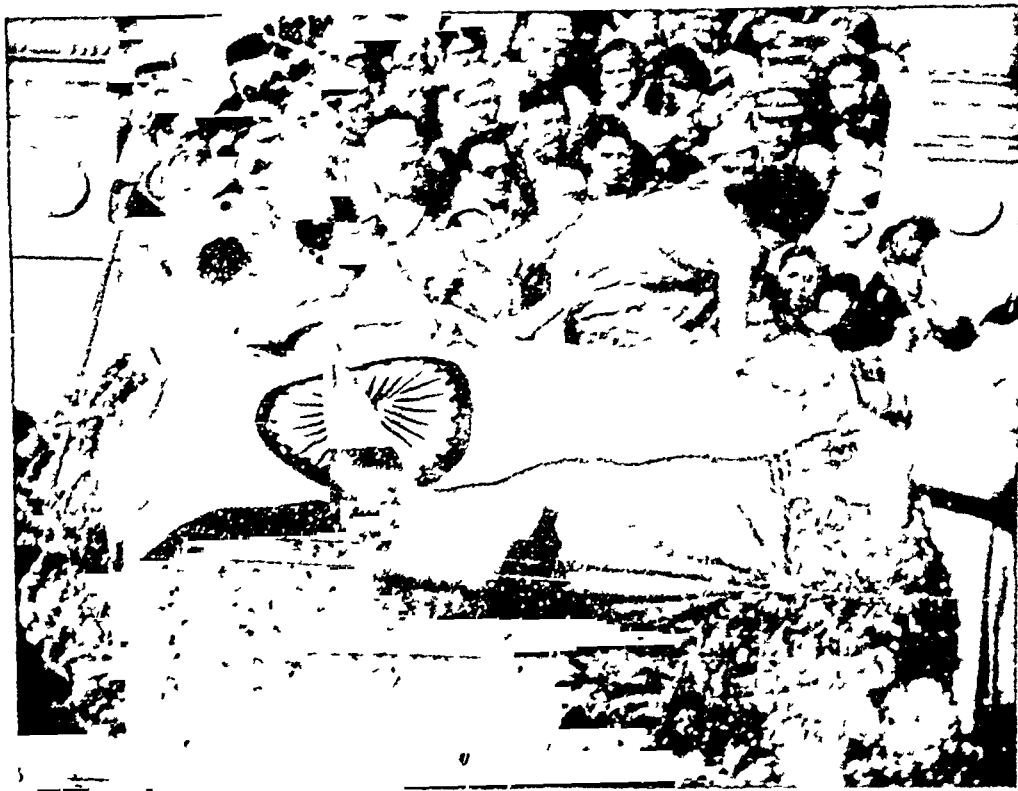
अन्तिम यात्रा
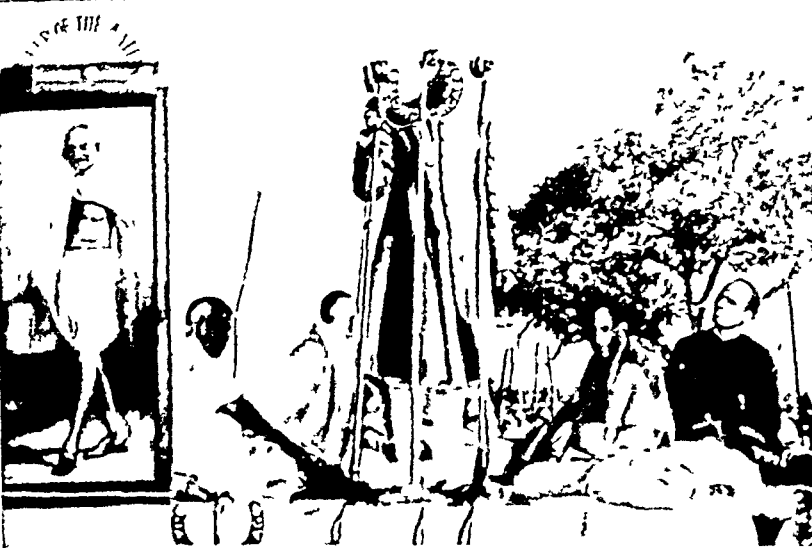
ऊपर
रामलीला मैदान—
शोक सभा में पंडित नेहरू
देशवासियों को सात्वना
देते हुए

नीचे—सरदार पटेल
शोकमग्न जनता को
सान्त्वना देते हुए

बापू–
आभा और मनु गांधी के साथ प्रार्थना सभा में जाते हुए
[३० जनवरी १९४८]

जुलूसके लिए मार्ग बनाती जाती थी। जुलूसके बढ़नेके साथ साथ 'महात्मा गान्धीकी जय !' और 'महात्मा गान्धी जिन्दाबाद'के नारे लगाए जा रहे थे !

जुलूसके आगे आगे सशस्त्र गाड़ीयाँ थीं। और उनके पीछे आर्मड फोरसेज और वालेंटियरोंके प्रतिनिधि थे। उनके पीछे अश्वारोही और हाथोंमे लाल वा श्वेत पताका लहराते हुए गवर्नर जनरलके अगरक्षक चल रहे थे ! उनके पीछे गोरखा फौज, प्रमुख कांग्रेसी नेता और सिविल तथा सैनिक अधिकारी थे। तब शव वाली गाड़ी थी जिसे आर्मड सर्विसके सैनिक खींच रहे थे।

गाड़ीके पीछे गाधीजीके कुटुम्बी और साथी थे। जुलूसके पीछले भागमे सभी जातियोंके लोग थे और स्त्रियों की अपार भीड़ थी, जो गांधीजीके प्रिय भजन 'रामधुन' को गाती जाती थीं !

जुलूसके बढ़नेके साथ साथ शवके पास बैठे हुए प्रमुख व्यक्ति अदलते बदलते जाते थे। आचार्य कृपलानी, डा० राजेन्द्र प्रसाद और कुमारी मनी बेन पटेल तथा श्री रामदास गांधी बारी बारीसे गाड़ी पर बैठते थे !

केवल सरदार वल्लभ भाई पटेल पांच घंटे तक चट्टानकी तरह अडिग होकर अपने प्यारे गुरुके चरणोंके पास बैठे रहे !

रास्ते भर लोग अर्थी तक पहुँचनेके लिए टूटे पडते थे और बहुतसे छतों पर चढ़कर गाधीजीके दर्शन करनेका प्रयास कर रहे थे ! बहुतसे पेड़ों पर चढ़ गये थे। कोई लैम्पपोस्ट पर ही बँधा बैठा था, तो कोई किसी खम्भे पर ही चढ़ गया था। अनेक लारियों और मोटरोंके सिर पर खड़े थे। प्रत्येक इस बातके प्रयासमे था कि वह गाधीजीके मुखका दर्शन करले और जुलूसके दृश्यको देख सके। सबसे अधिक भीड़ इंडिया गेट और प्रिंसेज प्लेसके पास थी। लोग रो रहे थे और 'महात्मा गाधी' की जयका नारा लगाते जाते थे।

नेताओंके चेहरा पर दुःख और शोककी स्पष्ट छाया अंकित थी। उन्हें पहचानना कठिन था। ये लोग ऐसे मालूम पडते थे जैसे १० वर्ष और बूढ़े हो गये हों।

जुलूस दिल्ली डिस्ट्रिक्ट जेलके पास आकर रुका। कुछ ही दिन पहले यहां गाधीजीने कैदियोंसे बातें की थीं। गाड़ी पर फूल और गुलाबकी पंखड़ियां बिखरी

गई ! अर्थीके चिता भूमिके पास पहुँचने से पूर्व जमुना पुल से लाल किले तक मानव मुंड ही दिखलाई पड़ते थे।

दाह संस्कारकी क्रिया इस महायात्राका अपूर्व दृश्यथा। सुन्दर सिकताकणोंके ऊपर चन्दनकी चिता बनाई गई थी। गांधीजी के परिजन और साथी चिताको घेरकर बैठे थे। प्रमुख आगतों को फूल और मालाएं बॉट दी गई थीं। तब शवको गाड़ी पहुँची।

आश्रमवासियोंने बापूका शव उठाकर चन्दनकी चितावेदी पर रखा। इस दृश्य को देखकर लक्षों हृदय तेजीसे धड़क उठे ! महायात्राकी यह अन्तिम मंजिल थी।

मानव समुद्र उमड़कर आगे बढ़ा और चिताके चारों तरफसे घिर गया। चारों तरफसे फूल और मालाओंकी वर्षा होने लगी। पहली माला चीनी राजदूतने अर्पित की।

अर्थी परसे झंडा हटाया गया तथा गांधीजीके शवपर चन्दनकी लकड़ियाँ रखी गयीं ! पण्डित रामधन शर्मा वेदके मन्त्रोच्चारण कर पौरोहित्य कार्य कर रहे थे।

चिताकी वेदी १५ मन चन्दनकी लकड़ी, ४ मन घी, २ मन सामग्री, १ मन नारियल और १५सेर कपूरसे बनाई गई थी।

४ बजकर ५.० मिनट पर—

श्री रामदास गाधीने चिताको प्रज्वलित किया। थोड़ी ही देरमें हवाके झोंकोंके साथ लपटे आसमानको उठने लगीं ! इस दृश्यको देखकर भीड़ करुणाद्र हो उठी ! आगकी लपटोंके ऊपर उठनेके साथ अपार जन समूह ने 'महात्मा गान्धी अमर हो गये' का तुमुल घोप किया।

सरदार वल्लभ भाई पटेलने जो भूमि पर बैठे हुए थे, एक रोती हुई बालिकाके सिर पर हाथ रखा, मानो उसे समझा रहे हों। सरदार पटेल आध घण्टे तक मूर्ति की भाति निश्चल बैठे रहे ! नेहरूजीके चेहरेसे ऐसा प्रकट हो रहा था, मानों वे अपनी अवस्था से १० वर्प अधिक वृद्ध हो गये हों।

चिता प्रज्वलित होने पर धूआं तो शांत हो गया लेकिन अपार जनसमूहके पैरोंसे उठने वाली धूलने सारे दृश्यको ढॅक दिया। तुरन्त ही हवाका एक जोरदार झोंका आया और दृश्य फिर खुल गया।

लपटें २० फीट तक ऊंची उठ रही थीं। चन्दनकी पवित्र अग्नि ने अमर गांधीके नश्वर शरीरको भस्म कर डाला था !'

इस प्रकार महात्मा गांधीकी नश्वर काया यद्यपि हत्यारेके गोली दागनेके २८ घंटे बाद पवित्र अग्नि देव द्वारा भस्मीभूत करदी गई, लेकिन उनकी अमर आत्मा भारत और विश्वके प्राणोंमे अमर होकर चिरकालतक रमण किया करेगी !

गांधीका शरीर चला गया लेकिन गांधीत्व कभी दुनियासे न जा सकेगा। जबतक संसारमे सत्य, अहिंसा, क्षमा और करुणा का अस्तित्व रहेगा तबतक गांधी का अस्तित्व मिटाये नहीं मिट सकता !

तब कौन कहता है गान्धी मर कर चले गये, गान्धीतो मरकर अमर हो गये हैं।

अन्तिम यात्रा समाप्त

शोकार्त्त भारत और भारत की सरकारने अपने राष्ट्रके बापूके महाप्रयाणपर १३ दिन का नियमित शोक मनाया! इन १३ दिन तक पूरे राष्ट्र ने सूतक रखा और हृदय तथा कर्म द्वारा 'बापू' के प्रति जैसा कि पुत्र पुत्रियोंको वांछित है अपना सांसारिक कर्त्तव्य पूरा किया।

किन्तु कितना कठोर था यह कर्त्तव्य? प्रत्येक दिन मौन और निस्तब्धता में बीता! इन १३ दिनों मालूम होता था मनुष्यके साथ प्रकृति भी दूखाभिभूत होकर मौन और निस्तब्ध है!

फूलोंने मुस्काना छोड़-सा दिया था, चिड़ियों ने चहकना और ऊषा ने विहंसना।

१२ ता० फरवरी सूतक का १३ वां दिन आया! महाप्रयाण का यह १३ वां दिन महायात्राका अन्तिम दिन था। गांधीजी की अस्थियां इस दिन त्रिवेणीके संगम पर गंगा और यमुनाकी अनन्त गोदमे विसर्जित होनेको थीं। अतः बापू की अस्थियों को लेकर ११ ता० फरवरी को सुवह ६ बजकर ३० मिनट पर दिल्लीसे स्पेशल गाड़ी रवाना हुई और १२ ता० सुबह नौ बजे प्रयागतीर्थ मे आ पहुँची।

स्पेशल गाड़ी जिस स्टेशन पर पहुँचती भारतके नर नारी और बाल-वृद्ध इस तरहसे 'अस्थियों' को देखनेके लिये टूट पड़ते मानों वे अपनी आंखों से यह जान लेना चाहते हों कि क्या सचमुच गाड़ी मे बापू नहीं केवल उनकी अस्थियां हैं, और तब प्रत्यक्षका दर्शन करने के बाद बोझिल हृदय और मनको लेकर वे मर्माहत से लौट जाते।

कितना हृदय विदारक वह दृश्य था?

हिन्दुस्तान टाईम्सके संवाददाताने जो स्पेशल ट्रेनके साथ दिल्लीसे प्रयाग आया था, इस प्रकार अन्तिम महायात्रा का विवरण दिया थाः—

"अस्थि स्पेशलने जो महात्मा गांधीके पवित्र अवशेषोंको लेकर दिल्ली से इलाहाबाद को रवाना हुई, तमाम पुराने रेकार्ड तोड़ डाले। गाधीजी के जीवनकाल में भी कभी प्रशंसा गाती हुई और 'महात्मा गाधी की जय' तथा 'बापू जिन्दा बाद' चिल्लाती हुई इतनी भीड़ गाडीके पास जमा न हुई थी। इतनी भीड़ होने पर भी पहले कभी किसी गाड़ी ने अपने नियमित समयका पालन न कर सका था। मार्ग मे आसानी से २० लाख आदमी अस्थिके डिब्बे का दर्शन कर सके।

मार्ग भरमे अनेक हृदयस्पर्शी घटनाएँ देखनेको मिलीं, लेकिन श्रीदेवदास गांधीके सबसे छोटे लड़के गोपू, जो अभी ३ वर्षका है, की भावुकता का दृश्य बहुत ही हृदय विदारक था। गाजियाबादमे 'महात्मागाधीकी जय' का नारा सुनकर वह जाग उठा और स्वयँ भी दो बार 'महात्मागाधी की जय' चिल्लाया। उसकी इस तोतली पुकार ने सबकी भावनाओं को जगा डाला और बहुतों की आखे भर आईं। चार घटे बाद रास्ते मे जब उसने एकाएक असख्य भीड़ को 'महात्मा गाधीकी जय' चिल्लाते सुना तो गभीर होकर गोपू ने अपनी माँ से पूछा "सब महात्मा गाधीकी जय कह रहे हैं तो क्या बापू लौट आवेंगे?" निःसन्देह ये ही भाव दूसरों मे भी थे!

दूसरा हृदयग्राही दृश्य वह था जब कि कानपुर स्टेशनपर मूर्च्छित हो जाने से एक अधेड़ व्यक्ति को स्पेशल कम्पार्टमेन्ट मे ले जाया गया। होश मे आने पर वह प्रार्थना करने लगा कि उसे भीड़ मे जाने दिया जाय, क्योंकि उसे अस्थिके दर्शन करने हैं। वह चला गया लेकिन फिर मूर्च्छित हो चला।

अस्थि स्पेशलमें

लगभग २५० आदमी थे जिन मे ३२ पत्रकार और फोटोग्राफर भी शामिल थे! भारत सरकार का प्रतिनिधित्व श्री० के० मी० नियोगी करते थे। रेलवे के चीफ कमिश्नर बकबेले भी यह देखने के लिए साथ थे कि गाडी निर्धारित समय पर चलती रहे। भारतीय रेलवेके इतिहास मे यह पहला अवसर था जबकि रेलके चीफ कमिश्नर ने भीड़ के साथ तीसरे दर्जे मे सफर किया। इन्तजाम मे कोई त्रुटी न थी।

गाडीकी देख रेख के लिए ४०० मीलके लम्बे रास्ते मे हर फर्लांग पर

एक गार्ड खड़ा कर दिया गया था। कानों कान गांव गांव में खबर पहुँच गई थी कि अस्थि स्पेशल आनेवाली है, इसलिये सर्वत्र ग्रामीणोंकी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। स्पेशलके पहुंचते ही सब हाथ जोड़कर मस्तक नवालेते और इस बात से हर्षित हो उठते थे कि उन्होंने अस्थि वाले डब्बे को देख सका!

गांवका एक धनी व्यक्ति हाथी पर चढ़कर आया था ताकि ठीक तरह से अस्थि के दर्शन कर सके!

एक गांवके पास ट्रेन के पहुंचने पर स्कूलके बच्चे दौड़े हुए ट्रेनकी तरफ बढ़े किन्तु उनके नन्हे पांव उन्हें वहां तक न पहुंचा सके। इसलिए २०० गजकी दूरी पर ही खड़े होकर उन्होने महात्मा गांधी की जय का नारा लगाया और श्रद्धाके साथ गाड़ीकी दिशा में अपने हाथमें के फूल फेंक दिये!

अस्थि ट्रेनकी यात्रा नई दिल्लीके प्लेटफार्म से आरम्भ हुई। तड़के ४ बजकर २० मिनट से ही दर्शकों की असंख्य भीड़ अस्थि कम्पार्टमेंट के अगल बगल में एकत्रित होनी शुरू हो गई थी। भीड़ संयमित थी! स्टेशन पर अन्य लोगोंके साथ प्रधान मत्री पं० नेहरू और ट्रान्सपोर्ट मंत्री श्री मथाई मौजूद थे!

स्टेशन पर अस्थिघटके इर्दगिर्द बैठे हुए प्रत्येक व्यक्ति गीताके श्लोक पढ़ते जाते थे!

महायात्रा का आरम्भ

स्पेशल ट्रेन ठीक ६ बजकर ३० मिनट पर महायात्राके लिए रवाना हुई! स्टेशन और उसके बाहर एकत्रित हुए अपार जन समूह ने गाड़ी के चलते ही गाधीकी जय के नारे से आसमान को गूजा दिया!

अवसर के अनुरूप दिल्ली स्टेशन बिलकुल शात था। सशस्त्र पुलिसका कदम कदम पर पहरा था! जिस समय अस्थि स्पेशल पुल से गुजरी यमुना नदी पर कुहरा छाया हुआ था। और नीचे बहता हुआ पानी तेजीके साथ अस्थि दानको लेनेके लिए प्रयागकी ओर बढ़ता मालूम पड़ता था!

अस्थि ट्रेन सबसे पहले गाजियाबाद मे रुकी। स्टेशन पर स्त्री पुरुषोंकी अपार भीड़ थी। अस्थि कम्पार्टमेट के पास पहली कतार स्त्रियों की थी और

उनके बाद पुरुष थे। स्पेशल ट्रेनके रवाना होनेके बाद तक भीड़ जमा होती ही जाती थी।

खुरजा में बहुत से लोग दर्शन के लिए पुल और पेड़ों पर चढ़ गये थे। अस्थि कम्पार्टमेंट से रामधुनकी आवाज आने पर हजारों की भीड़से भी वही प्रतिध्वनि होने लगी।

अलीगढ़मे अस्थि ट्रेन नियत समय पर पहुंची। हजारों स्त्री पुरुषोंके साथ स्टेशन पर छतारी के नवाब और श्री मुहम्मद इस्माईल भी मौजूद थे।

भीड़ ने चारों तरफ से ट्रेन पर फूल बरसाये।

मार्गमे गावके नर नारी ट्रेनको आते देख अपना कार्य जहांका तहा छोड़कर अस्थि की अर्चना मे मस्तक नवाते जाते थे।

हाथरस स्टेशन पर इतनी भीड़ थी कि उसे सम्हालना दुष्कर हो चला! सब अस्थि घटको देखने के लिये टूट पड़ते थे।

टुण्डला मे तो भीड़की हद ही हो गई! करीब एक लाख स्टेशन पर एकत्रित हो गये थे। उन्हें सम्भालना या सचालन करना पुलिस और सैनिकोंके वश मे न रह गया। सब अस्थिके दर्शनको पागल से होकर धंसते जा रहे थे। यह धका-पेल ट्रेनके रवाना होने पर ही शात हो सकी।

कानपुरका दृश्य अत्यन्त निराला था। यहा पर ट्रेन दो घटे रुकी। रेलवे लाइनके ५० मील तक दोनों तरफ भीड ही भीड़ खड़ी थी। कुल मिलाकर करीब ५० लाख स्त्री पुरुप भीड़ मे होंगे। इतनी भीड कभी न हुई होगी। कितने इस भीड़ मे मूर्च्छित हुए और गिरपड़े कुछ ठिकाना नहीं, लेकिन आहत कोई नहीं हुआ।

बीच बीच मे रामधुन गाया जाता था। लेकिन 'महात्मा गाधी की जय' की आवाज अविरल रूप से गूजती रही। ट्रेनके रवाना होने पर तो लोगों ने नारों से आकाश को ही मानों चीर डाला। १५ मीनट तक ट्रेन को केचुए की तरह घिसकना पड़ा, क्योंकि मीलों तक लाइन के दोनों ओर दर्शकोंकी घनी भीड़ जमा थी। भीड मे यूरोपियन भी शामिल थे।

इस भीड के कारण वातावरण इतना गरम हो चला कि कम्पार्टमेंट

में बैठे हुए लोग भी ऊब उठे। कानपुर से गुजरने के बाद ही खुली हवा मिल सकी! निःसन्देह गत नेताके वियोग मे कानपुर गला फाड़ फाड़ कर विलाप कर रहा था।

रजुलाबाद मे ट्रेन ११ घटे रुकी। यहाँ से फिर वह ७ बजे प्रातः चली और ९ बजे सुवह रामधुन के संगीत मे लहराती हुई प्रयाग के पुनीत स्टेशन पर आ लगी। स्टेशन पर पं० नेहरू और पं० पंत के नेतृत्व में तमाम मंत्रीगण एकत्रित थे।

त्रिवेणी में अस्थि विसर्जन

(ऐसोसियेटेड प्रेस द्वारा प्रकाशित अस्थि विसर्जन का मार्मिक विवरण)

महात्मा गांधीकी अस्थियोंको दिल्लीसे लानेवाली स्पेशल ट्रेन आज सवेरे ठीक ९ वजे प्रयाग पहुँच गयी।

स्टेशनपर कुछ खास लोगोंको जानेकी ही अनुमति दी गयी थी, क्योंकि आदमियोंके इस महासमुद्रको स्टेशनपर नहीं जाने दिया जा सकता था।

जैसे ही "रघुपति राघव राजाराम" के भजनके साथ ट्रेन स्टेशनपर पहुंची वैसे ही सारा वातावरण शोक और श्रद्धाके साथ बिलकुल शान्त हो गया। हिंद सरकारके प्रधानमंत्री पडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद और पंडित गोविन्द वल्लभ पंत गाड़ीके दरवाजेपर गये और उन्होंने अस्थिघट ले लिया।

अस्थिघट कुर्सीपर रखा हुआ था और उसे पडित जवाहरलाल और उनके अन्य साथी वाहर ले आये।

मन्त्रियोंने अपनी छोटी सी पक्ति बना ली और इनमे सवसे आगे थीं संयुक्त प्रान्तकी गवर्नर श्रीमती सरोजनी नायडू।

कुमाऊँ पलटनके सैनिकोंने अस्थिघटको सलामी दी और जुलूसके आगे आगे हो लिए। स्टेशनके पूरे मार्गपर जहासे होकर घट ले जाया गया, शुद्ध सफेद खादी विछी हुई थी।

स्टेशनके वाहर अस्थिघटको एक रथ पर रख दिया गया। घटको रखनेके लिए रथपर एक मंच वनाया गया था जो जमीन से १७ फीट ऊँचा था।

मंचपर महात्मा गांधीकी एक मूर्ति रखी गयी थी । और मूर्तिके बगलमें अस्थिघट।

बिगुल बजा और रथ चल पड़ा। रथपर बैठे हुए लोगोंमे थे प्रधानमंत्री नेहरू जी, सरदार पटेल, श्रीरफी अहमद किदवई।

जुलूसके आगे आगे बख्तरबंद गाड़ियां और जीप कारें थीं एवं पीछे १२-१२ की कतारमें घुड़सवार पुलिस। रथके पीछे और अगल बगल दोनों ओर भी रक्षा सैनिक थे।

क्वीन्सरोड और कैनिंगरोडके चौराहे पर स्थित गिरजेके निकट जब जुलूस पहुंचा तब तक भीड़ दो लाखसे ऊपर पहुच चुकी थी । गिरजेके अहाते में सैकड़ों व्यक्ति काले वस्त्रोंमे विश्ववन्द्य बापूके अवशेषोंके आगमनकी प्रतीक्षामे मौन और शान्तभावसे खड़े हुए थे ।

'जय' का कोई नारा नहीं लगा कोई फुस फुस भी नहीं, केवल घोड़ोंके टापों और मोटरके इजनकी आवाज सुनायी दे रही थी।

रथ गिरजेके सामने कुछ मिनट रुका और शोकाकुल पर शात वातावरणमे बापूका प्रिय अंग्रेजी गीत "लीड काइन्डली लाइट" सुनाई दिया।

जुलूस जैसे जैसे आगे बढ़ता था वैसे वैसे इसकी लबाई बढ़ती नजर आती थी। सुबह जुलूस निकलनेको था लेकिन जिन सड़कों से होकर उसे जाना था उनपर मध्यरात्रिसे ही लोगोंने अपना डेरा जमा लिया था।

पुरुषोत्तमदास पार्कके निकट आते आते जुलूसकी सख्या १५ लाखसे ऊपर हो गयी होगी। पंडितजी कुछ समयके लिए रथसे उतर पड़े और पैदल चलते रहे। बादमे अस्थिघटको एक बत्तख मोटरपर रखा गया जो जमीन और पानी दोनोंपर चल सकता है। बत्तख मोटरपर भी पं० नेहरू तथा अन्य मत्रियोंके अलावा युक्त प्रातकी गवर्नर श्रीमती सरोजनी नायडू थीं।

बत्तख मोटर पहले सरस्वती घाटकी ओर चला। बादमे इस प्रकार चक्कर काट कर कि दर्शन करनेके लिए आतुर जनता अस्थि घटका दर्शन कर सके, मोटर गगा यमुना सरस्वतीके संगमपर आया और श्रीरामदास गांधीने वैदिक मंत्रोंके

बीच लगभग २ बजे अपने पिता-राष्ट्रपिता और वस्तुतः जगतपिताके पार्थिव अवशेषोंका विसर्जन कर दिया।

विसर्जित होनेके पूर्व चारों विमानोंने बहुत नीचे आकर अस्थियोंपर पुष्पवृष्टि की। लोगोंने अंतिम प्रणाम किया। सहस्त्रों स्त्रियोंकी आखों से अश्रुधारा चल पड़ी-बहुत कठोर हृदय पुरुष भी अपने आपको रोक न सके। पं० जवाहरलाल नेहरूको भी लोगोंने कई बार देखा अपने रूमालको आंखों तक ले जाते हुए। अस्थियां जलमे प्रवाहित कर दी गयीं। घट रख लिया गया। कुछ और कृत्य संपन्न करनेके लिए थोड़ी देरके लिए संगमपर रह गये नेता किनारे वापस आ गये।

संगम तक आते आते दर्शनार्थी जनताकी संख्या ३० लाखसे ऊपर हो चुकी थी।

इस कृत्यकी समाप्तिके बाद ही प्रधान मंत्री पं० नेहरूने करीब करीब आधघंटे तक भाषण दिया, कुछ रूंधे हुए कंठसे प्रधानमंत्रीने शुरू किया-"आखिरी सफर खत्म हो गया, अंतिम यात्रा समाप्त हो गयी।"

अंतिम यात्रा समाप्त हो गई

(अस्थि विसर्जनके वाद संगमपर पं० नेहरू जी का श्रद्धांजलि भाषण)

आज राष्ट्रपिताकी अतिम यात्रा समाप्त हो गई। पिछले पचास सालसे महात्मा गांधी देशभरमे घूम घूम कर जनताको सत्य और अहिंसाका पाठ पढा रहे थे। उनकी जन-सेवा स्वार्थरहित थी। अब यह महान व्यक्ति हमारेवीच नजर नहीं आयगा, लेकिन उनका संदेश हमारे साथ सदैव रहेगा। आज इस महामानवकी अस्थियोंका विसर्जन कर देनेके वाद हमारा नाता समाप्त नहीं हो गया है वल्कि हमारा और उनका वंधन और भी दृढ़ हो गया है।

यह हमारा भाग्य था कि हम उसी समयमे रहे जिसमे महात्मा गाधीका अवतार हुआ और हमने उन्हें हाड़मासके शरीरमे देखा। आने वाली पीढी उन्हे शारीरिक रूपमें न देख सकेगी लेकिन उसेभी उनसे वही शक्ति मिलेगी जो शक्ति हमे मिली है, क्योंकि उनके व्यक्तित्वका प्रभाव अनत काल तक वना रहेगा।

महात्मा गाधीके निधनके पहले हमसव उनके पास जाते थे और उनकी सलाहसे लाभ उठाते थे। अव हम ऐसा न कर सकेंगे। अव हम उनको ओर न देख सकेंगे और न वे हमारी कठिनाइयों और वोझोंमे हिस्सा वांट सकेंगे। अव हमे विना उनके ही सव चीजोंका सामना करना है। लेकिन उन्होंने हमे जो सिखाया है वह सदा हमारे साथ प्रोत्साहन और प्रदर्शनके रूपमे रहेगा।

महात्मा गाधीने देशको स्वतन्त्रताकी ओर ले जाते हुए अहिंसा और साम्प्रदायिकताके विरुद्ध पाठ पढ़ाया। स्वतन्त्रता मिल जानेपर हम विभाजित हो गये और देशभरमे हिंसाकी एक वहुत वडी लहर दौड़ गयी। एक पददलित देशको अहिंसा द्वारा स्वतन्त्र कराना मानव इतिहासमे अद्वितीय है। लेकिन आज स्वतन्त्र भारत वाहरकी दुनियाकी नजरोंमे शर्मिन्दा है, उसकी आत्मामे ठेस लगी है।

कुछ दिनोंसे देशभरमें सांप्रदायिकताका विष फैला हुआ है। अधिकांश व्यक्ति हिंसाकी ओर झुक रहे हैं और इसी हिंसाके शिकार हमारे सबसे प्रिय बापू हुए। इस हिंसाको यदि न रोका गया तो यह हमारी आजादीको नष्ट कर देगी और आज हमे गंगाजीके किनारेसे यह प्रतिज्ञा करके ही जाना है कि इस हिंसाको समाप्त कर देंगे। हमारे देशके नवयुवकोंकी बहुत बड़ी संख्या हिंसाकी ओर जा रही है। हमें उनकी गलतियां दिखलाकर उन्हें हिंसाके मार्गसे वापस लाना है।

अपने राजनैतिक विरोधियोंके विरुद्ध हिंसाका प्रयोग करना हमारी इच्छाओंके विरुद्ध है। साथ ही साथ यह हमारे भविष्यके लिए खतरनाक है। हमने निश्चय करलिया है कि देशमे प्रजातांत्रिक शासनकी स्थापना होगी। बिना शान्ति-भंग प्रत्येक नागरिक को अपने विचार प्रकट करनेका अधिकार है। यहां वही सरकार काम करेगी जिसमें अधिकाश जनताका विश्वास होगा। जो लोग इस प्रकारकी सरकारको पसन्द नहीं करते और हिंसाके जरिये शक्ति छीनना चाहते हैं उनके लिये स्वतंत्र भारतमें कोई स्थान नहीं है।

देशमे हिंसा और सांप्रदायिक घृणाका वातावरण किस प्रकार उत्पन्न हुआ ? इसके मुख्य कारण थे कुछ जिम्मेदारीके स्थानपर काम करनेवाले व्यक्ति जिन्होंने नयी पीढ़ीको गुमराह किया और अपने स्वार्थ साधनके लिए अनजान जनताका बेजा फायदा उठाया। यह हो सकता है कि इस स्थितिका सामना करनेके लिए हम पहले कुछ कमजोर सावित हुए हों, लेकिन आज राष्ट्रपिताका अतिम संस्कार करके हममे कौन है जो हिंसाका नाश करनेकी प्रतिज्ञा न कर लेगा।

आज हम सभी उदास और भारी दिल लेकर घर लौटेंगे लेकिन हमारे इस दुखमे इस गर्वका मिश्रण भी होगा कि महात्मा गांधी ऐसे महान् व्यक्ति हमारे नेता थे।

महात्मा गांधीने हमारे लिये जो कुछ भी किया उसके लिए उनके प्रति हमारा कुछ कर्तव्य भी है। हमारा फर्ज है कि हम उनके द्वारा शुरू किये गये कामको पूरा करे और उनके विचारोंके भारतका निर्माण करे। हमे सांप्रदायिक भेदभाव

छोड़कर सबको समान अधिकार देना चाहिए। मनुष्यकी समानताका संदेश हमे दुनिया भरके सामने रखना है। यदि हम ऐसा न कर सके तो इसका मतलब होगा कि हम ऐसे महान नेताके योग्य न थे।

पिछले ४० साल से हम सभी 'गाधीजीकी जय' बोलते रहे है। गाधीजी कभी अपनी जय नहीं चाहते थे। भारत की विजय ही उनकी विजय थी। उन्होंने सत्य और अहिंसा की दृढ़ नींव पर भारतीय स्वतंत्रता की नींव डाली और हम सबको यही चेष्टा करनी चाहिये कि हम उनका सबसे बड़ा यही स्मारक बनावें।

भारत की अंतिम श्रद्धाञ्जलि

प्रयाग की प्रमुख अस्थि विसर्जन क्रिया के साथ साथ हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक प्रायः सभी क्षेत्रों (पवित्र स्थानों) में महात्मा गांधी की अस्थिया वैदिक रीति से संपन्न हुई। गंगा, यमुना, गण्डक, सतलज, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी आदि पवित्र नदियों तथा रामेश्वर, वम्बई और पुरी आदिमे समुद्रमें अस्थिया विसर्जित की गयीं। जिन स्थानों पर अस्थि विसर्जन नहीं हुआ (क्योंकि वहां के लोगो को अस्थि प्राप्त न हो सकी) वहां भी जनता ने नदियों के किनारे एकत्र होकर वापू को अपनी अतिम श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस पुण्यकार्य मे अपार जनताने, जिस मे सभी संप्रदायके लोग थे, भाग लिया। जनता की ऐसी भीड़ आज तक कभी न हुई थी। इस काररवाई के समय जनता वहुत शांत और नियंत्रित रही। जब हृदय ही व्यथासे मौन थें, मुख मुखरित होते भी कैसे।

दुनियाँ ने साथ दिया

अस्थि-विसर्जनके अवसर पर संसारने भी महात्मा गांधी को श्रद्धाजलियाँ अर्पित कीं।

वाशिगटन (१२ फरवरी) की एक विशाल सभामें भाषण करते हुए अन्तर-राष्ट्रीय सीनेटर श्री टामसने कहा "गाधी विश्वके नागरिक थे। मरने के वाद गाधी जिन्दा गांधीसे वढ़कर शक्ति संचारका काम करेंगे।

वे पच्छिम और पूरव का समन्वय करने वाले महात्मा थे। वे युगपुरुपथे युग युगान्तरके महामानव थे।"

श्रीमती पर्लवकने कहा—"हिन्द तभी वड़ा वन सकता है जव गांधीजी के आदर्श और उनकी अद्भुत महाशक्ति अहिंसा को अपनावे।"

प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्सटीनने कहा—"गांधीके प्राण इसलिए गये कि उपद्रवके दिनोंमे भी उन्होंने हथियारोंसे अपनी रक्षा पसन्द न की। उन्होंने प्रदर्शित करदिया कि मानवताके हृदय पर कावू करनेके लिए राजनीतिक कुचक्र तैयार करने की जरूरत नहीं है ? विशुद्ध नैतिक आचरणसे यह चीज प्राप्त हो सकती है।"

अमेरिकामें ग्रैण्ड इण्टर डिपार्टमेटल आडिटेरियम मे गांधीजी के लिए प्रार्थना की आयोजना की गई थी। हाल खचाखच भरा हुआ था।

अमरीकाके प्रेसीडेंट ट्रूमैन और—उनकी पत्नी भी समय पर पहुँचे।

प्रेसीडेंटके वगलमे अमरीकाके परराष्ट्र सचिव श्री जार्ज मार्सल थे और उनके पीछे कांग्रेस, अमरीकाके न्याय, शासन प्रवंध आदि विभागोंके प्रतिनिधि वैठे थे।

इस अवसरपर धूपवत्ती जला देनेसे वहांके पावन वातावरणमे और भी वृद्धि हो गयी।

उस निस्तब्ध शान्तिमे विश्वकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुरका एक गीत पढ़ा गया और उसके वाद ही फिर उसका अंग्रेजी अनुवाद भी।

कई धर्म ग्रन्थों के अंश पढ़े गये जिनसे इस शोक समारोहका उत्कर्ष और उसकी महत्ता और भी वढ गयी।

जिस स्थानसे धर्म ग्रन्थोंके वचन पढे जाते थे उसके दोनों ओर हिन्द और अमरीकाके झण्डे लगे हुए थे। झण्डोंमे मालाए पडी हुई थीं। और गुलावके फूल लगे हुए थे।

फिर कुछ देरकी पूर्ण श्रद्धामय निस्तब्धताके वाद प्रार्थना पढ़ी गयी और समारोह समाप्त हो गया (रायटर)।

सच्ची श्रद्धांजलि

लार्ड माउन्ट बेटन

१२ फरवरी को नयी दिल्लीसे रात रेडियो पर भाषण करते हुए गवर्नर-जनरल लार्ड माउण्टबेटनने कहा कि गांधीजीको जो सबसे बड़ी श्रद्धांजलि हम दे सकते हैं वह है कि "हम अपने दिलों, दिमागों और हाथोंको हिन्दमे एक असम्प्रदायवादी लोकतांत्रिक राज्य कायम करनेमे लगा दे, जिसके अन्दर सब लोग उपयोगी तथा रचनात्मक जिन्दगी बिता सके, और जिसमे सामाजिक तथा आर्थिक न्यायपर आधारित एक वास्तविक प्रगतिशील समाज बनाया जासके।"

इसके लिए आवश्यक है कि हम गांधीजीकी शिक्षाओंका पालन करें।

गवरनर राजगोपालाचार्य—

महात्मा गांधीके भस्मावशेषके प्रवाहित किये जानेके बाद, कलकत्ता रेडियोसे ब्राडकास्ट करते हुए पच्छिमी बंगालके गवर्नर श्रीराजगोपालाचारीने कहा कि, "यदि हम सब सच्चे दिलोंसे गांधीजीके सिद्धान्तोंको माने तो वे मरेंगे नहीं। वे हमारे अन्दर और हमारे द्वारा जीवित रहेंगे। किन्तु यदि हमने उनके सिद्धान्तोंको नहीं माना और शिक्षाओंको शिक्षकके साथ ही मर जाने दिया तो हम गिरेंगे, और वास्तवमें उनकी हत्याके हम भी दोषी होंगे।"

श्री० एस० के पाटिल

बम्बई प्रांतीय कांग्रेसके अध्यक्ष श्रीएस० के० पाटिलने अपने भाषणमे कहा कि बापूको वास्तविक तथा सच्ची श्रद्धांजलि हम तभी अर्पित करेगे जब हम अपने जीवन भर अहिंसा, सत्य, शांति तथा एकता आदि बापूकी शिक्षाओंका पालन करनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा करे।"

श्री एम० सी० छागला

बम्बई हाईकोर्टके चीफ जस्टिस श्रीएम० सी० छागलाने गांधीजीको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि "जब उत्तेजनामय पागल पनकी लड़ाई चल रही थी तब वे ही अकेले इस मतिहीन पागल संसारमे सुस्थिरमना बने रहे, और हमे सिखाया कि साम्प्रदायिक घृणा और विद्वेषका सिद्धात बिल्कुल गलत है।"

भारतके उपप्रधान–सरदार पटेल ।

उद्गार

सेवाके लिए जिन्दा रहें

जो अपनेसे बहुत दूर चला गया है उसके लिए शोक करनेकी जरूरत नहीं है। क्योंकि जानेवालेकी आत्माका नाश नहीं होता लेकिन जो लोग जीवित रह जाते है उनका कर्तव्य है कि मानवताकी सेवा करनेमें अपने प्राण न्योछावर कर देनेके लिए ही वे जिन्दा रहें।

जो नहीं रहे उनकी आत्माको शान्ति पहुंचाने और अपने आपको उनकी पवित्र धरोहरके योग्य बनानेके लिए आवश्यक है कि हम उनके सबसे प्यारे सपनों उनके जीवनकी सबसे बड़ी इच्छाओं और उद्देश्योको पूरा करे।

—महात्मा गांधी

(मरनेसे कुछ समय पहले एक पुराने मित्र को लिखे गये एक पत्र से।)

मृत्यु एक आनन्ददायक मित्र है

मेरी फिक्र किसीको नहीं करना है। फिक्र अपने लिए की जाय—हम कहां तक आगे बढ़ रहे है और देशका कल्याण कहां तक हो सकता है, इसका ध्यान रखे। आखिरमें सब इन्सानोंको मरना है। जिसका जन्म हुआ है उसे मृत्युसे मुक्ति नहीं मिल सकती। ऐसी मृत्युका भय क्या, शोकभी क्या करना ? मै समझता हूँ कि हम सबके लिए मृत्यु एक आनन्ददायक मित्र है, हमेशा धन्यवादके लायक है, क्योंकि मृत्युसे अनेक प्रकारके दुखोंमें से हम एक समय तो निकल जाते हैं।

(अंतिम अनशन की दफे दिया एक मौखिक संदेश जो १५ जनवरी को अखबारों में प्रकाशित हुआ था।)

बापू का अन्तिम दिन

श्री प्यारेलाल

[निधन के पूर्व गांधीजी के जीवन की अंतिम घड़ियां किस प्रकार से व्यतीत हुई उसका इस लेख में सजीव, सरल और मार्मिक वर्णन दिया गया है।]

२९ जनवरीको सारे दिन गांधीजीको इतना ज्यादा काम रहा कि दिनके आखीरमें उन्हें खूब थकान मालूम होने लगी। कांग्रेस विधानके मसविदेकी तरफ इशारा करते हुए, जिसे तैयार करनेकी जिम्मेदारी उन्होंने ली थी, उन्होंने आभासे कहा—'मेरा सिर घूम रहा है। फिर भी मुझे इसे पूरा करना ही होगा। मुझे डर है कि रातको देरतक जागना होगा।'

आखिरकार वे ९। बजे रातको सोनेके लिए उठे। एक लड़कीने उन्हें याद दिलाया कि आपने हमेशाकी कसरत नहीं की है। 'अच्छा, तुम कहती हो तो मैं कसरत करूँगा'—गांधीजीने कहा और वे दोनों लड़कियोंके कंधोंपर, जिमनाशियमके 'पैरलल बारकी' तरह, शरीरको तीन बार उठानेकी कसरत करनेके लिए बढ़े।

अन्तिम रात

बिस्तरमें लेटनेके बाद गांधीजी आमतौरपर अपने हाथ-पांव और दूसरे अंग सेवा करनेवालोंसे दबवाते थे—ऐसा करवानेमें उन्हें अपना नहीं बल्कि सेवा करनेवालोंकी भावनाओंका ही ज्यादा खयाल रहता था। वैसे तो उन्होंने अपने आपको इस बातमें एक अरसेसे उदासीन बना लिया था, हालांकि मैं जानता हूँ कि उनके शरीरको इन छोटी मोटी सेवाओंकी जरूरत थी। हमने उन्हें दिनभरके कुचल डालनेवाले कामके बोझके बाद मनको हलका करनेवाली बातचीत और हंसी-मजाकका थोड़ा मौका मिलता था। अपने मजाकमें भी वे हिदायतें जोड़ देते। गुरुवारको रातको वे आश्रमकी एक महिलासे बातचीत करने लगे, जो सेवाग्रामसे मिलने आ गयी थी। उन्होंने उसकी तन्दुरस्ती अच्छी न होनेके कारण उसे

डांटा और कहा कि अगर रामनाम तुम्हारे मन-मन्दिरमें प्रतिष्ठित होता तो तुम बीमार नही पड़तीं। उन्होंने आगे कहा—'लेकिन उसके लिए श्रद्धाकी जरूरत है।'

उसी शामको प्रार्थनाके बाद प्रार्थना सभामें आये हुए लोगोंमें से एक भाई उनके पास दौड़ता हुआ आया और कहने लगा कि आप २ फरवरीको वर्धा जा रहे हैं, इसलिए मुझे अपने हस्ताक्षर दे दीजिये। गांधीजीने पूछा—'यह कौन कहता है ?' हस्ताक्षर मांगनेवाले हठी भाईने कहा—'अखबारोंमे यह छपा है।' गांधीजीने हँसते हुए कहा—'मैंने भी गांधीके बारेमें वह खबर देखी है। लेकिन मैं नहीं जानता, वह 'गांधी' कौन है ?'

एक दूसरे आश्रमवासी भाईसे बात करते हुए गांधीजीने वह राय फिर दोहरायी जो उन्होंने प्रार्थनाके बाद अपने भाषणमें जाहिर की थी—'मुझे गड़बड़ीके बीच शांति, अन्धेरेमे प्रकाश और निराशामें आशा पैदा करनी होगी।' बातचीतके दौरानमें 'चलती लकड़ियों' का जिक्र आनेपर गांधीजीने कहा 'मैं लड़कियोंको अपनी चलती लकड़ियाँ बनने देता हूँ, लेकिन दरअसल मुझे उनकी जरूरत नहीं है। मैंने लम्बे समयमें अपने आपको इस बातका आदी बना लिया है कि किसी बातके लिए किसीपर निर्भर न रहा जाय। लड़कियाँ अपना पिता समझकर मेरे पास आती हैं और मुझे घेर लेती हैं। मुझे यह अच्छा लगता है। लेकिन सच पूछा जाय तो मैं इस बातमे बिलकुल उदासीन हूँ।' इस तरह यह छोटी-सी बातचीत तबतक चलती रही जबतक गाधीजी सो न गये।

३० जनवरीको सुबह गांधीजी हमेशाकी तरह ३॥ बजे प्रातः स्मरण प्रार्थनाके लिए उठे। प्रार्थनाके बाद वे काम करने बैठे और थोडी देर बाद दूसरी बार थोड़ीसी नींद लेनेके लिए लेटे।

आठ बजे उनकी मालिशका वक्त था। मेरे कमरेसे गुजरते हुए उन्होंने कांग्रेसके नये विधानका मसविदा मुझे दिया, जो देशके लिए उनका आखिरी वसीयतनामा था। इसका कुछ हिस्सा उन्होंने पिछली रातको तैयार किया था। मुझसे उन्होंने कहा कि इसे 'पूरी तरह' दोहरा लो। 'इसमे कोई विचार छूट गया हो तो उसे लिख डालो, क्योंकि मैने इसे बहुत थकावटकी हालतमे लिखा है।'

मालिशके बाद मेरे कमरेसे निकलते हुए उन्होंने पूछा कि 'मैने उसे

पूरा पढ़ लिया या नहीं, और मुझसे कहा कि नोआखालीके अपने अनुभव और प्रयोगके आधारपर मैं इस विषयमें एक टिप्पणी लिखूँ कि मद्रासके सिरपर झूमते हुए अन्नसंकटका किस तरह सामना किया जा सकता है। उन्होंने कहा – 'वहांका खाद्य विभाग हिम्मत छोड़ रहा है। मगर मेरा खयाल है कि मद्रास ऐसे प्रान्तमें, जिसे कुदरतने नारियल, ताड़, मूँगफली और केला इतनी ज्यादा तादादमें दिए हैं—कई किस्मकी जड़ों और कन्दोंकी बात ही जाने दो—अगर लोग सिर्फ अपनी खाद्य सामग्रीका सम्हालकर उपयोग करना जानें, तो उन्हें भूखों मरनेकी जरूरत नहीं।' मैंने उनकी इच्छाके अनुसार टिप्पणी तैयार करनेका वचन दिया। इसके बाद वे नहाने चले गये। जब वे नहाकर लौटे तब उनके बदनपर काफी ताजगी नजर आती थी। पिछली रातकी थकावट मिट गयी थी और हमेशाकी तरह प्रसन्नता उनके चेहरेपर चमक रही थी। उन्होंने आश्रमकी लड़कियोंको उनकी कमजोर शारीरिक बनावटके लिए डाटा। जब किसीने उनसे कहा कि वाहन न मिलनेके कारण अमुक जगह नहीं गयीं, तो उन्होंने कड़ाईसे कहा—'वह पैदल क्यों न चली गयीं ?' गांधीजीकी यह कड़ाई कोरी कड़ाई ही नहीं थी, क्योंकि मुझे याद है कि एक बार जब आन्ध्र देशके अपने एक दौरेमें हमें ले जानेवाली मोटरोंका पेट्रोल खतम हो गया तो उन्होंने सारे कागजात और लकड़ीकी हलकी नाद लेकर वहांसे १३ मील दूर दूसरे स्टेशन तक पैदल जानेके लिए तैयार होनेको हमसे कहा था।

अन्तिम निर्देश

बंगाली लिखनेके अपने रोजानाके अभ्यासको पूरा करनेके बाद गांधीजीने साढ़े नौ बजे अपना सवेरेका भोजन किया। अपनी पार्टीको तितर-बितर करनेके बाद वे पूर्व बंगालके गांवोंमें अपनी 'करो या मरो'की प्रतिज्ञा पूरी करनेके लिए नंगे पांवों श्रीरामपुर गये तबसे वे नियमित रूपसे बंगालीका अभ्यास करते रहे हैं। जब मैं विधानके मसविदेको दोहरानेके बाद उनके पास ले गया, तब वे भोजन ही कर रहे थे। उनके भोजनमें ये-ये चीजें शामिल थीं—बकरीका दूध, पकायी हुई और कच्ची भाजियां, सतरे और अदरखका काढ़ा, खट्टे नींबू और 'घृत कुमारी'। उन्होंने अपनी विशेष सतर्कतासे मसविदेमें बढ़ायी हुई और बदली हुई बातोंको एक-

एक करके देखा और पंचायती नेताओंकी संख्याके बारेमें जो गलती रह गयी थी, उसे सुधारा।

इसके बाद मैंने गांधीजीको डाक्टर राजेन्द्र प्रसादसे हुई अपनी मुलाकातकी विस्तृत रिपोर्ट दी। डाक्टर राजेन्द्र प्रसादकी तबीयत अच्छी न थी। इसलिए गांधीजीने कल उनके स्वास्थ्यके बारे में पूछने के लिए उनके पास भेजा था। मैंने गांधीजीको पूर्व बंगालके बारेमें ताजीसे ताजी खबर भी सुनायी, जो मुझे डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जीने कल शामको बतायी थी। इसपरसे नोआखालीके बारेमे चर्चा चली; मैंने उनके सामने व्यवस्थित रीतिसे नोआखाली छोड़ने की बात रखी। लेकिन गांधीजीका दृष्टिकोण साफ और मजबूत था। उन्होंने कहा जैसे हम कार्यकर्ताओंको 'करना या मरना' है, उसी तरह हमें अपने लोगोंको भी आत्मसम्मान, इज्जत और मजहबी हकको बचानेके लिए 'करने या मरने' को तयार करना है। हो सकता है कि आखिरके थोड़े ही लोग बचे। लेकिन कमजोरीसे ताकत पैदा करनेका इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। क्या हथियारोंकी लड़ाईमे भी बलवा करनेवाले या कमजोर सिपाहियोंकी कतारें मार नहीं दी जातीं? तब अहिंसक लड़ाईमे इससे दूसरा कैसे हो सकता है?' उन्होंने आगे कहा—'तुम नोआखालीमें जो कुछ कर रहे हो, वही सही रास्ता है। तुमने मौतका डर भगा दिया है और लोगोंके दिलोंमे अपना स्थान बनाकर उनका प्यार पा लिया है। प्यार और परिश्रमके साथ ज्ञान जोड़ना जरूरी है। तुमने यही किया है। अगर तुम अकेले भी अपना काम पूरी तरह और अच्छी तरह करो, तो तुम्हीं सबके लिए काफी हो। तुम जानते हो कि यहाँ मुझे तुम्हारी बड़ी जरूरत है। मुझपर कामका इतना बोझ है और मै बहुत कुछ दुनियाको भी देना चाहता हूँ। लेकिन तुम्हारे बाहर रहनेसे मैं ऐसा नहीं कर सकता। लेकिन मैंने अपने आपको इसके लिए कड़ा बना लिया है। नोआखालीका तुम्हारा काम इससे ज्यादा महत्वका है।' इसके बाद उन्होंने मुझे बताया कि अगर सरकार अपना फर्ज पूरा करनेमे चूके, तो गुण्डोंके साथ कैसे निपटना चाहिये।

अन्तिम चिन्ता

दोपहरको थोड़ी झपकी लेनेके बाद गांधीजी श्री सुधीर घोषसे मिले। श्री

घोपने और वातोंके अलावा लन्दन 'टाइम्स' की कतरन और एक अंग्रेज दोस्तके खतके कुछ हिस्से पढकर उन्हें सुनाये। इनमे लिखा था कि किस तरह कुछ लोग बडी तत्परताके साथ पण्डित नेहरू और सरदार पटेलके बीच फूट डालनेकी कोशिश कर रहे हैं। वे सरदार पटेलपर फिरकापरस्त होनेका दोप लगाते है और पण्डित नेहरूकी तारीफ करनेका ढोंग रचते है। गांधीजीने कहा कि वे इस तरहकी हलचलसे वाकिफ है और उसपर गहराईसे विचार कर रहे है। वे वोले कि अपने एक प्रार्थना-सभाके भाषणमे मै पहले ही इसके वारेमे कह चुका हूँ, जो 'हरिजन' मे छप गया है। मगर मुझे लगता है कि इसके लिए कुछ और ज्यादा करनेकी जरूरत है। मैं सोच रहा हूँ कि मुझे क्या करना चाहिये।

सारे दिन लोग लगातार मुलाकात करनेके लिए आते रहे। उनमे दिल्लीके मौलाना लोग भी थे। उन्होंने गांधीजीके वर्धा जानेके वारेमे अपनी सम्मति दे दी। गांधीजीने उनसे कहा कि मैं सिर्फ थोड़े दिनोंके लिए ही यहासे गैरहाजिर रहूँगा और अगर भगवान्‌की कुछ और ही मर्जी न हुई और कोई आकस्मिक घटना न घटी तो ११ तारीखको वर्धामे स्वर्गीय सेठ जमनालालजीकी पुण्यतिथि मनानेके वाद १४ वीं तारीखको मैं लौट जाऊँगा।

एक वात और थी, जिसके वारेमे मुझे गांधीजीसे सलाह लेनी थी? मैने उनसे पूछा—'वापू' मुसलमान औरतोंमे अपने कामको आसानीसे चलानेके लिए अगर ज्यादा नहीं तो थोडे ही वक्तके लिए मैं. को नोआखाली ले जाऊँ? जरूरी छुट्टीके लिए मैं. से प्रार्थना करूगा।' 'खुशीसे'—उन्होंने जवाव दिया। आखिरी शब्द थे जो मुझे सुनने थे।

साढ़े चार वजे आभा उनका शामका खाना लायी। इस धरतीपर उनका यह आखिरी भोजन था, जिसमे करीब करीब सवेरेकी ही सव चीजें शामिल थीं। उनकी आखिरी वैठक सरदार पटेलके साथ हुई। जिस विषयपर चर्चा हुई, उनमेसे एक कैविनेटकी एकताको तोडनेके लिए सरदारके खिलाफ किया जानेवाला गन्दा प्रचार था। गांधीजीकी यह साफ राय थी कि हिंदुस्तानके इतिहासमें ऐसे नाजुक मौकेपर कैविनेटमे किसी तरहकी फूट पैदा होना वडी दुःखपूर्ण वात होगी। सरदारसे उन्होंने कहा कि आज मैं इसीको अपनी प्रार्थना सभाके भाषणका विषय

बनाऊँगा। प्रार्थनाके बाद पण्डितजी मुझसे मिलेंगे, मैं उनसे भी इसके बारेमें चर्चा करूँगा। आगे चलकर उन्होंने कहा कि 'अगर जरूरी हुआ, तो मैं २ तारीखको अपना वर्धा जाना मुल्तवी कर दूँगा और तबतक दिल्ली नहीं छोड़ूँगा जबतक दोनोंके बीच फूट डालनेकी कोशिशके इस भूतका पूरी तरह खात्मा न कर दूँ।'

अन्तिम मजाक

इस तरह चर्चा चलती रही। बेचारी आभा भी बाधा देनेका साहस नहीं कर रही थी। इस बातको जानते हुऐ कि बापू वक्तकी पाबन्दीको, और खासकर प्रार्थनाके बारेमें उसकी पाबन्दी को, कितना महत्व देते हैं, उसने आखिरमें निराश होकर उनकी घड़ी उठायी और जैसे इस बातका इशारा करते हुए उनके सामने रख दी कि प्रार्थनामें देर हो रही है।

प्रार्थना मैदानमें जानेके पहले ज्योंही गांधीजी गुसलखानेमें जानेके लिए उठे, वे बोले—'अब मुझे आपसे अलग होना पड़ेगा।' रास्तेमें वे उस शामको अपनी 'चलती लकड़ियों' आभा और मनुके साथ तबतक हंसते और मजाक करते रहे, जबतक वे प्रार्थना मैदानकी सीढ़ियोंपर नहीं पहुँच गये।

दिनमें जब दोपहरके पहले आभा गान्धीजीके लिए कच्ची गाजरोंका रस लायी, तब उन्होंने उलाहना देते हुए कहा 'तो तुम मुझे ढोरोंका खाना खिलाती हो।' आभाने जवाब दिया 'बा' तो इसे घोड़ेकी खुराक कहती थीं। उन्होंने पूछा 'जिस चीजको दूसरा पूछेगाभी नहीं, उसे स्वादसे खाना क्या कम है?' और हँसने लगे।

आभाने कहा—'बापू, आपकी घड़ीको जरूर यह लगता होगा कि आप उसकी परवाह नहीं करते। आप उसकी तरफ देखते नहीं।' गान्धीजीने तुरन्त जवाब दिया—मैं क्यों देखूं, जब तुम दोनों मुझे ठीक समय बता देती हो?' लड़कियोंमें से एकने पूछा—' लेकिन आपतो टाइम बतानेवाली लड़कियोंकी तरफ नहीं देखते।' बापू फिर हँसने लगे। पाँव साफ करते हुए उन्होंने आखिरी बात कही—'मैं आज १० मिनट देरसे पहुँचा हूँ। देरसे आनेमें मुझे नफरत होती है। मैं प्रार्थनाकी जगहपर ठीक पांच बजे पहुचना पसंद करता हूँ।' यहाँ बातचीत खतम हो गयी। क्योंकि—'चलती लकड़ियों' के साथ गांधीजीकी यह शर्त थी कि प्रार्थनामैदानके अहातेमें पहुँचतेही सारा मजाक और बातचीत बन्दहो जानी चाहिये—मनमें प्रार्थनाके

विचारोंके सिवा दूसरी कोई चीज नहीं होनी चाहिये । मन प्रार्थनामय हो जाना चाहिये ।

अन्तिम शब्द

जब गान्धीजी प्रार्थना सभाके बीच रस्सियोंसे घिरे रास्तेमें चलने लगे उन्होंने प्रार्थनामें शामिल होनेवाले लोगोंके नमस्कारों का जवाब देनेके लिए लड़कियोंके कन्धोंसे अपने हाथ उठा लिए । एकाएक भीड़मेंसे कोई दाहिनी ओरसे भीड़को चीरता हुआ उस रास्तेपर आया । छोटी मनुने यह सोचा कि वह आदमी बापूके पाँव छूनेको आगे बढ़ रहा है । इसलिए उसने उसको ऐसा करनेके लिए झिड़का, क्योंकि प्रार्थनामें पहलेही देरहो चुकी थी । उसने रास्तेमें आनेवाले आदमीका हाथ पकड़कर उसे रोकनेकी कोशिश की । लेकिन उसने जोरसे मनुको धक्का दिया, जिससे उसके हाथ की आश्रमभजनावली, माला और बापूका पीकदान नीचे गिर गये । ज्योंही वह बिखरी हुई चीजोंको उठानेके लिए झुकी, वह आदमी बापूके सामने खड़ा हो गया—इतना नजदीक खडा था कि पिस्तोल से निकली हुई गोलीका खोल बादमें बापूके कपड़ेकी पर्तमें उलझा हुआ मिला । सात कारतूसोंवाली आटोमेटिक पिस्तोलसे जल्दी जल्दी तीन गोलियाँ छूटीं । पहली गोली, नाभीसे ढाई इंच ऊपर और मध्य-रेखासे साढ़े तीन इंच दाहिनी तरफ पेटकी बाजूमें लगी । दूसरी गोली, मध्यरेखासे एक इंचकी दूरीपर दाहिनी तरफ घुसी और तीसरी गोली छातीकी दाहिनी तरफ लगी । पहली और दूसरी गोली शरीरको पारकर पीठसे बाहर निकल आयी । तीसरी गोली उनके फेफड़ेमें ही रुकी रही । पहले वारमें उनका पाँव, जो गोली लगनेके वक्त आगे बढ़ रहा था, नीचे आ गया । दूसरी गोली छोड़ी गयी तबतक वे अपने पाँवोंपर ही खडे थे और उसके बाद वे गिर गये । उनके मुँहसे आखिरी शब्द 'राम-राम' निकले । उनका चेहरा राखकी तरह सफेद पड़ गया । उनके सफेद कपड़ोंपर गहरा सुर्ख धब्बा फैलता हुआ दिखाई पड़ा । उनके हाथ, जो सभाको नमस्कार करनेके लिए उठे थे, धीरे-धीरे नीचे आ गये, एक हाथ आभाके गलेमें अपनी स्वाभाविक जगहपर गिरा । उनका लड़खड़ाता हुआ शरीर धीरेसे ढुलक गया । सिर्फ तभी घबरायी हुई मनु और आभाने महसूस किया कि क्या हो गया है ।

मैं दूसरे दिन नोआखाली जानेकी अपनी तैयारी पूरी करनेके लिए शहर गया था और वहांसे हालमें ही लौटा था । प्रार्थना-सभाके मैदान तक बनी हुई

पत्थरकी कमानीके नीचे भी मै नहीं पहुँच पाया था कि श्री चन्द्रावत सामनेसे दौड़ते हुए आये। उन्होंने चिल्लाकर कहा—'डाक्टरको फोन करो। बापूको गोली मार दी गयी है।' मै पत्थरकी तरह जहांका तहां खड़ा रह गया, जैसे कोई बुरा सपना देखा हो। मशीनकी तरह मैने किसीके द्वारा डाक्टरको फोन करवाया।

अन्तिम श्वॉस

हर एकको इस घटनासे धक्का लगा। डा०राज सभरवालने, जो उनके पीछे आयीं, गांधीजीके सिरको धीरेसे अपनी गोदमें रख लिया। उनका कॉपता हुआ शरीर डाक्टरके सामने आधा लेटा हुआ था और ऑखे अधमुँदी थीं। हत्यारेको बिड़ला-भवनके मालीने मजबूतीसे पकड़ लिया था। दूसरोंने भी उसका साथ दिया और थोड़ी खींचतानके बाद उसे काबूमे कर लिया। बापूका शांत और ढीला पड़ा हुआ शरीर दोस्तोंके द्वारा अन्दर ले जाया गया और उस चटाईपर उसे रखा गया, जिसपर बैठ वे काम किया करते थे। मगर कुछ इलाज करनेसे पहले ही घड़ीकी आवाज बन्द हो चुकी थी। उन्हे भीतर लानेके बाद उनको जो छोटा चम्मचभर शहद और गरम पानी पिलाया गया उसे भी वे पूरी तरह निगल न सके। करीब-करीब, फौरन ही उनका अवसान हो गया।

डा० सुशीला बहावलपुर गयी थीं, जहॉ बापूने उसे दयाके मिशनपर भेजा था। डा० भार्गव, जिन्हें बुलावा भेजा था, आये और 'एड्रेनलिन' के लिए डा० सुशीलाकी सकटके समय काममे आनेवाली दवाइयोंकी संदूक पागलकी तरह तलाश करने लगे। मैने उनसे दलीलकी कि वे उस दवाईको ढूँढनेकी मेहनत न उठाये, क्योकि गाधीजीने कई बार हमसे कहा है कि उनकी जान बचानेके लिए भी कोई निषिद्ध दवाई उनको न दी जाय। जैसे-जैसे बरस बीतते गये, उन्हे ज्यादा-ज्यादा विश्वास होता गया कि सिर्फ रामनाम ही उनकी और दूसरोंकी सारी बीमारियोंको दूर कर सकता है। थोड़े ही दिनों पहले अपने उपवासके दरमियान उन्होंने यह सवाल पूछकर साइसकी कमियोंके बारेमे अपने मतको पक्का कर दिया था कि गीतामे जो यह कहा गया है 'एकांशेन स्थितो जगत्'—उसके एक अशसे सारा ससार टिका हुआ है—उसका क्या मतलब है? रामनामकी सब बिमारियोंको दूर करनेकी शक्तिपर अपने विश्वासके बारेमे बोलते हुए एक आहके साथ गांधीजीने घनश्याम-

दासजीसे कहा था—'अगर मैं इसे अपने जीते जी साबित नहीं कर सकता, तो वह मौतके साथ ही खत्म हो जायगा।' जैसा कि आखिरमें हुआ, डा० सुशीलाकी संकटकालीन दवाइयोंमें एड्रेनलिन नहीं मिला, संयोगसे एड्रेनलिनकी जो एकमात्र शीशी सुशीलाने कभी ली थी वह नोआखालीके काजिरखिल कैम्पमें छूट गयी थी, गांधीजी उसकी इतनी कम परवाह करते थे।

उनके साथियोंमें सबसे पहले सरदार वल्लभभाई पटेल आये। वे गांधीजीके पास बैठे और नाड़ी देखकर उन्होंने खयाल कर लिया कि वह अब भी धीरे-धीरे चल रही है। डा० जीवराज मेहता कुछ मिनट बाद पहुँचे। उन्होंने नाड़ी और आँखोंकी परीक्षाकी और उदास और दुखी होकर सिर हिलाया। लड़कियाँ सिसक उठीं। लेकिन उन्होंने तुरन्त दिलको कड़ा किया और रामनाम बोलने लगीं। मृत शरीरके पास सरदार चट्टानकी तरह अचल बैठे थे उनका चेहरा उदास और पीला पड़ गया था। इसके बाद पंडित नेहरू आये और बापूके कपड़ोंमें अपना मुँह छिपाकर बच्चेकी तरह सिसकने लगे। इसके बाद देवदास और डा० राजेन्द्र प्रसाद आये। तब बापूके पुराने रक्षकोंमेंसे बचे हुए श्री जयरामदास, राजकुमारी अमृत कौर और आचार्य कृपलानी आये। जब कुछ देर बाद लार्ड माउण्ट बेटन आये, उस समय बाहर लोगोंकी भीड़ इतनी बढ गयी थी कि वे बड़ी मुश्किलसे अन्दर आ सके। कड़े दिलके योद्धा होनेके कारण उन्होंने एक पल भी नहीं गँवाया और वे पण्डित नेहरू और मौलाना आजाद साहबको दूसरे कमरेमें ले गये और महान् दुर्घटनासे पैदा होनेवाली समस्याओंपर अपने राजनीतिक दिमागसे विचार करने लगे। एक सुझाव यह रखा गया कि मृत शरीरको मसाला देकर कुछ समयके लिए सुरक्षित रखा जाय। लेकिन इस बारेमें गांधीजीके विचार इतने साफ और मजबूत थे कि बीचमें पड़ना मेरे लिए जरूरी और पवित्र फर्ज हो गया। मैंने उनसे कहा कि बापू मरनेके बाद पार्थिव शरीरको पूजनेका कड़ा विरोध करते थे। उन्होंने मुझे कई बार कहा था। 'अगर तुम मेरे बारेमें ऐसा होने दोगे, तो मैं मौतमें भी कोसूंगा। मैं जहां कहीं मरूं, मेरी यह इच्छा है कि बिना किसी दिखावे या झमेलेके मेरा दाह-संस्कार किया जाय।' डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री जयरामदास और डा० जीवराज मेहताने मेरी बातका समर्थन किया। इसलिए मृत शरीरको मसाला देकर रखनेका विचार छोड़ दिया गया। सारी रातमें गीताके श्लोक और सुखमणि साहबके भजन मीठी रागमें गाये जाते रहे, और बाहर

दुःखसे पागल बने लोगोंकी भीड़ दर्शनके लिए कमरेके चारों तरफ इकट्ठी होती रही। आखिरकार मृत शरीरको ऊपर ले जाकर बिड़ला-भवनके छज्जेपर रखना पड़ा, ताकि सब लोग दर्शन कर सके।

हमारा अन्तिम प्रणाम

सुबह जल्दी ही शरीरको हिन्दू-विधिके अनुसार नहलाया गया और कमरेके बीचमे फूलोंसे ढककर रख दिया गया। विदेशी राजदूत, सुबह थोड़ी देर बाद आये और उन्होंने बापूके चरणों पर फूलोंकी मालाएं रखकर अपनी मौन श्रद्धांजलि अर्पित की।

अवसानके दो दिन पहले ही गांधीजीने कहा था—'मेरे लिए इससे प्यारी चीज क्या हो सकती है कि मै हॅसते हॅसते गोलियोंकी बौछारका सामना कर सकूं ?' और मालूम होता है, भगवान्‌ने उन्हें यह वरदान दे दिया।

११ बजे दिनको हमारे सबके अन्तिम प्रणाम करनेके बाद मृत शरीर अर्थीपर रखा गया। उस समय तक रामदास गांधी हवाई जहाजमे नागपुरसे आ पहुचे थे। डा० सुशीला नायर सबसे आखिरमे पहुची, जब अर्थी रवाना ही होनेवाली थी। उसे इस बातका बड़ा दुःख था कि बापूके आखिरी समयमें वह उनके पास नहीं रह सकीं। लेकिन इस बातके लिए उसने ईश्वरको धन्यवाद दिया कि वह अन्तिम दर्शनके समय पहुँच गयी।

उस रात डा० सुशीला बार-बार बहुत दुःखी होकर चिल्लाती रही 'आखिर मुझे यह सजा क्यों ?' देवदासने उसे आश्वासन देनेकी कोशिश की, 'यह सजा नहीं है। बापूके आखिरी मिशनको पूरा करनेमे जुटे रहना बड़े गौरवकी बात है—यह बापूका उसीको सौंपा हुआ आखिरी काम था।' यह बापूकी एक विशेषता थी कि जिन्हे उन्होंने बहुत दिया था, उनसे वे और ज्यादाकी आशा रखते थे।

जब मैं बापूका अपार शांति, क्षमा और सहिष्णुता दयासे भरा अव्वल और उदास चेहरा ध्यानसे देखने लगा, तो मेरे दिमागमे उस समयसे लेकर—जब मैं कालेजके विद्यार्थीके रूपमे चौंधियानेवाले सपनों और उज्ज्वल आशाओंसे भरा बापूके पास आकर उनके चरणोंमे बैठा था—आज तकके २८ लम्बे बरसोंके

निकटतम और अटूट सम्बन्धका पूरा दृश्य बिजलीकी गतिसे घूम गया और वे वर्ष कौमके बोझसे कितने लदे हुए थे।

जो कुछ हुआ था, उसके अर्थपर मैं विचार करने लगा। पहले मैं घबराहट महसूस करने लगा, लेकिन बादमें धीरे-धीरे यह पहेली अपने आप सुलझने लगी। उस दिन जब बापूने एक आदमीके भी अपना फर्ज पूरी और अच्छी तरह अदा करनेके बारेमें कहा था, मुझे ताज्जुब हुआ था कि आखिर उनके कहनेका ठीक-ठीक मतलब क्या है ? उनकी मृत्युने उसका जवाब दे दिया। पहले जब गांधीजी उपवास करते, तो वे दूसरोंसे प्रार्थना करनेके लिए कहते थे। वे कहा करते थे—'जब तक पिता बच्चोंके बीच है, तब तक उन्हें खेलना और खुशीसे उछलना कूदना चाहिये। जब मैं चला जाऊँगा, तब आज मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह सब वे करेंगे।' मगर आज जो आगकी लपटें देशको निगल जानेकी धमकी दे रही हैं उन्हें शान्त करना है, और बापूने जो आजादी हमारे लिए जीती है यदि उसका फल हमें भोगना है, तो उनकी मौतने हमें वह रास्ता दिखा दिया है, जिस पर हमें चलना है।

क्या बापू को अपने अवसान का ज्ञान पहले से था ?

श्री कुमारी मीरा बहन

मेरे सिर्फ दो ही संगी थे—ईश्वर और बापू। और अब दोनों एक हो गये हैं।

जब मैंने बापू की मृत्यु की खबर सुनी, तो मेरी आत्मा को बन्दी बनाने वाले दरवाजे खुले और बापू की आत्मा ने उसमें प्रवेश किया। उस पल से शाश्वतता की नयी भावना मुझमें आ गई है।

यह सच है, कि प्रिय बापू जीते जागते रूप में हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन उनकी पवित्र आत्मा तो आज हमारे ज्यादा नजदीक है। एक समय बापू ने मुझ से कहा था—"जब मेरा यह शरीर नहीं रहेगा, तब भी हम एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे। तब मैं तुम्हारे ज्यादा नजदीक आ जाऊंगा। यह शरीर तो बाधा रूप है।" ये शब्द मैंने श्रद्धा से सुने थे। अब मै अपने अनुभव से बापू के उन शब्दों का दिव्य सत्य जान पायी हूँ।

क्या बापू को आज होने वाली घटना का ज्ञान था? मेरे दिल्ली से ऋषीकेश जाने से पहले, दिसम्बर महीने की एक शाम को बापू से मैंने कहा था: "बापू जब मार्च मे गोशाला तैयार हो जायगी और सारा काम व्यवस्थित हो जायगा, तब क्या गोशाला का उद्‌घाटन करने और हिन्दुस्तान की गरीब दुःखी गाय को आशीर्वाद देने का समय निकाल सकेंगे?" बापू ने जवाब दिया "मेरे आने का ख्याल मत रखो"—और फिर मानों अपने आप से कुछ कह रहे हों, इस तरह उन्होंने आगे कहा—"मुर्दे से किसी तरह की मदद की आशा रखने से क्या फायदा?" ये शब्द इतने भयानक थे कि मैंने किसी के सामने उन्हे नहीं दोहराया, और ईश्वर की प्रार्थना के साथ उन्हे अपने दिल मे रख लिया। उनका अनशन आरम्भ हुआ और समाप्त हुआ। मुझे आशा हो गयी कि बापू के इन शब्दों का मतलब अनशन

के साथ खतम हो गया। लेकिन ये शब्द तो भविष्यवाणी के समान थे और वह भविष्यवाणी पूरी हुई।

उस विधिनिर्मित शाम को जब मैं ध्यान मे अचल बन कर बैठी थी, मैंने सारी दुनिया से गुजरनेवाली संताप की कंपकंपी का अनुभव किया। मनुष्य जाति की मुक्ति के लिए एक बार फिर अवतार का खून बहा, और धरती इस भयानक पाप के डर और बोझ से कराह उठी।

वह पाप एक आदमी का नहीं है। वह युग-युग मे सारी दुनिया को ढंक लेने वाला पाप है। उसे एकमात्र ईश्वर के भक्तों का बलिदान ही रोक सकता है।

अब बापू हमारे लिए जो काम छोड़ गये है, उसे पूरा करने मे हमे जमीन-आसमान एक कर देना चाहिए। बापू हम सब के लिए—हर मर्द, औरत और बच्चे के लिए—जिये और मरे। वे लगातार काम करते करते जिये और इसीलिए शहीद की मौत मरे कि हम नफरत, लालच, हिंसा और झूठ के बुरे रास्ते से पीछे लौटे है। अगर हमे अपने पापों का प्रायश्चित करना है और बापू के पवित्र उद्देश्य को आगे बढ़ाने मे हिस्सा लेना है, तो हर तरह की साम्प्रदायिकता, और दूसरी बहुत—सी बातें खतम होनी चाहिये। चोरबाजारी, रिश्वतखोरी, तरफदारी, आपसी द्वेष और उसी तरह हिंसा और असत्य के दूसरे काले रूपों को जड़ मूल से मिट जाना चाहिए। इनके विरुद्ध हमे मजबूती से और बिना हिचकिचाहट के जेहाद बोलना होगा। बापू प्रेम और दया के सागर थे, लेकिन बुराई के विरुद्ध लड़ने मे वे बड़े कठोर थे।

बापू ने भीतरी बुराई पर विजय पा ली थी, इसीलिए बाहर की बुराई के सामने वे लड़ सके थे। भगवान हमे उस तरह पवित्र बनाए कि हम अपने सामने पड़े हुए इस भारी काम के लायक बन सके।

बापू क्षमा करना

श्री सुशीलानायर

कहते हैं समुद्र मन्थन से अमृत निकला, हीरे जवाहरात निकले और हलाहल जहर निकला। जहर इतना घातक था कि सारे जगत का नाश कर सकता था। उसे क्या किया जाय? सब इस बारे मे चिन्तित थे। शिवजी आगे बढ़े और उन्होंने वह जहर पी लिया। हिन्दुस्तान के समुद्र- मन्थन में से आजादीका अमृत निकला। साथ ही आपसकी मारकाटका, दुश्मनीका, बैरका, हिंसाका, जहर भी निकला। गांधीजीने इसके सामने अपनी आवाज बुलन्द की। लोग अपनी मूर्छामे चौंके, लेकिन जागे नहीं। पाकिस्तानके लोगोंके कानोंमे भी आवाज पहुंची। बापूकी आवाज अकेले गगनमें गूंज रही थीं—'इस आगको बुझाओ, नहीं तो दोनों इस आगमें भस्म हो जाओगे।' उनका हृदय दिन-रात पुकारता था 'हे ईश्वर, इस ज्वालाको शांत कर, नहीं तो मुझे इसमे भस्म होने दे। मै इसका साक्षी नहीं बनना चाहता।'

जो बापू अनेक उपवासोंसे, अनेक हमलोंसे बच निकले थे, वे अपने ही एक गुमराह पुत्रकी गोलीसे न बच सके। पुत्रके हाथसे हलाहलका प्याला लेकर वे पी गये, ताकि हिन्दुस्तान जीवित रह सके। किसीने कहा, जगतने दूसरी वार ईसा का सूली पर चढ़ना देखा है।

मुझे जब यह खवर मिली तव मै मुलतानमें थी। बहावलपुरियोंको वापू की इतनी चिन्ता थी कि उन्होंने मुझे लेसली क्रास साहबके साथ बहावलपुर भेजा था। वहां डिप्टी कमिश्नरकी पत्नीने बहुत प्यारसे पूछा—'गाधीजी अव कंसे हैं? हमारे पास कव आयेंगे? मैंने कहा—'जब आपकी हुकूमत चाहेगी।'

शामको ६ बजेके करीब डिप्टी कमिश्नर साहबकी पत्नी हांफती हांफती आयीं 'और बोली दुनिया किधर जा रही हैं? गांधीजीको गोलीसे मार दिया।' सुनते ही मेरे हाथ-पांव ठंढे पड़ गये। मैं सुन्न बैठ गयी। किसी दूसरेने कहा—'नही, नहीं, यह तो अफवाह है। हम दिल्लीको फोन करके पक्की खबर निकालेंगे। घबराइये नहीं।'

मैंने कहा—'नहीं, मुझे अभी लाहौर जाना है। कोई गाडी दिलाइये। सच्ची खबर हो या झूठी, मै जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहती हूँ।'

गाडी विड़लाभवनके पिछले दरवाजे दाखिल हुई। उधर भी बहुत भीड़ थी। दूसरे एक ऊँचा फूलोंका ढेर दिखाई पड़ा। मै भीड़को पूरे जोरसे चीरती हुई हाँफती हाँफती वहाँ पहुंची, जहां पालकी रवाना होनेके लिए तैयार थी। वहां सरदार अपने दिवगत स्वामीके कार्योंके पास गम्भीर वैठे थे। उन्होंने मुझे ऊपर चढ़ाया। फूलोंमे से वापू का चेहराही दिखता था। हमेशाकी तरह मैंने अपना सिर उनकी छातीपर रख दिया। विना सोचे अन्दरसे भावना उठी, अभी वापू एक प्यार की चपत लगा देगे, पीठपर एक जोरकी थपकी लगा देंगे। मगर मैंने तो उनकी आखिरी थपकी वहावलपुर जाते समय ही ले ली थी।

सिरके पास मनु और आभा खडी थी। 'सुशीला वहन! सुशीला वहन! पुकार कर वे फूट-फूटकर रोने लगीं। आँसुओंमें से मैंने देखा वापूका चेहरा पीला था, पर हमेशाकी तरह शात था। वे गहरी नींदमे सोये दिखते थे। अपने आप मेरा हाथ उनके माथेपर चला गया। उनके चेहरेको छुआ। वह अभी भी मुझे गरम लगा, जीवित लगा। मेरा सिर फिरसे उनके चेहरे पर झुक गया। माथा उनके गालको जा लगा। किसीने पुकारा—अब सव नीचे उतरो।

नीचे सिरकी तरफ पण्डितजी खड़े थे। दुःख और गमकी रेखाएं उनके चेहरेपर थीं। मुँह सूखा हुआ था। उन्होंने प्यारसे हम तीनोंको नीचे उतारा। पुराने जमानेमे महादेव भाई, देवदास भाई और प्यारेलालजी तीनों वापूके साथ हुआ करते थे—त्रिमूर्ति कहलाते थे। उसी तरह कुछ महीनोंसे आभा, मनु और मैं वापूके साथ त्रिमूर्ति-सी वन गयी थीं। उन तीनोंमे महादेव भाई वड़े थे, इन तीनोंमे मैं। दोनों लड़कियां दोनों तरफसे मुझे लिपट गयीं। एक दूसरीको सहारा देते हुए हम आगे वढ़ीं। वापू चाहेंगे रामधुन चले, सो रामधुन शुरू की लेकिन वहुत चल न सकी। मणि वहन वार-वार ध्यान खींचती थी, रोना नहीं चाहिये। सिख भाइयोंने गुरु ग्रन्थ साहेव के शब्द वोलने शुरू किये। हम सव उनके पीछे राम नाम वोलने लगे।

कुछ देर वाद हम लोग पीछे वापूकी गाड़ीके पास आ गये। उस गाडी

के स्पर्शमें बापूका स्पर्श था। दोनों तरफ लाखों जनता खड़ी थी। हर दरख्तकी हर टहनी पर लोग बैठे थे। 'महात्मा गांधीकी जय' के नादसे गगन गूँज रहा था।

जैसे जीवनमें, वैसे मृत्युमें निन्दा और स्तुतिसे अलिप्त बापू सो रहे थे। जीवनमें हम लोगोंको चुप कराते थे। जयनादसे भी उनके कानोंको तकलीफ पहुंचती थी। वे कानोंको ऊंगलियोंसे बन्द कर लिया करते थे। कान बन्द करनेको हमे साथ रूई रखनी होती थी। मगर आज उसकी जरूरत न थी। मनमें आया, क्या अपनी भावनाएँ हम आँसू बहाकर धो डालेंगे ? क्या जयघोष करके ही बैठ जायंगे ? या क्या ये भावनाएँ कार्य रूपमें भी परिणत होंगी ?

शामको जुलूस यमुनाजीके किनारे पहुँचा। ईटोंके एक छोटेसे चबूतरेपर लकड़ियां रखी थीं। जिस तख्तपर बापू बैठा करते थे, उसीपर उनका शव था। उसे लाकर लकड़ियोंपर रखा गया। ब्राह्मणोंने कुछ मन्त्र पढ़े। हम लोगोंने छोटी-सी प्रार्थना की। देवदास भाईने बापूके पांवपर सिर रखकर प्रणाम किया। हृदयसे एक ही पुकार निकल रही थी, बापू मेरे अपराध क्षमा करना। मेरी भूल चूक त्रुटियाँ क्षमा करना। जीवनमें कितनी बार आपको सताया, आपको मानवी पिता मानकर आपसे झगड़ा किया। आपके साथ दलीलें की। बापू, क्षमा करना ! क्षमा करना ! ! क्षमा ! ! ! मैं चितासे दूर हटकर बैठ गयी। मैं ज्यादा देख न सकी। मनमें मैं गीताका यह श्लोक दोहराती रही।

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं, मया प्रमादात् प्रणयेन वापि ॥

बापू आपने जो अगाध प्रेम मुझपर बरसाया, जो अगाध विश्वास बताया, भूलपर भूल क्षमा की; तुच्छ, अज्ञान, मतिहीनको अपनाया, सिखाया, अपनी बेटी बनाया, उसको लायक बनाया। एकबार बापूने महादेव भाईसे बातें करते हुए कहा था—"सुशीलाने सबसे आखिर मेरे जीवनमे प्रवेश किया, मगर वह सबसे निकट आयी। मुझमे समा गयी है।" हे प्रभु उसी समय तूने मुझे क्यों न उठा लिया। उसके बाद सुशीला उनसे दूर चली गयी।

बापूकी बातपर उसके मनमे शंका आने लगी, मगर बापूने धीरजसे उसकी शंकाओंका निवारण करनेका प्रयत्न किया। उसे अपनेसे दूर न जाने दिया। एकबार

कहने लगे—"तूने 'हाउण्ड आफ हेविन' की कविता पढ़ी है। तू मुझसे भाग कैसे सकती है? मैं भागने दूँ तब न?" इस नालायक बेटीके प्रति इतना प्रेम! हे प्रभो जो योग्यता उनके जीवनकालमें न थी, वह उनके जानेके बाद दोगे?

शवपर चन्दनकी लकड़ियाँ रखने लगे। सुगन्धित सामग्री डालने लगे। मैं जाकर सरदार काकाके पास बैठ गयी। घुटनोंमें सिर रख लिया और देख न सकी। सारा जगत् चक्कर खा रहा था। भीड़का जोरसे धक्का आया। मनु, आभा, मैं और मणि बहन पास बैठी थीं। सरदारने हमें साथ लेकर उस भीड़मेंसे निकलनेकी कोशिश की। धक्केपर धक्का आता था हम गिरते-पड़ते बाहर निकले। एक मिलिटरी ट्रकमें बैठे। सरदार काका और सरदार बलदेव सिंहजी साथ थे। ट्रक चली। आभाने मेरा हाथ खींचा। दूसरे चिताकी ज्वालाकी लपटें आकाशको जा रही थीं। हृदय पुकार उठा, हे प्रभो इस अग्निमें हमारे दोष, हमारी कमजोरियाँ भस्म हो जायें ताकि हम बापूके बताये मार्गपर दृढतासे आगे बढ़ सकें। जिस अग्निको शांत करनेमें उनके प्राण गये, वह इस अग्निके साथ शान्त हो। रातको बिड़ला-भवनमें जिस गद्दीपर बैठकर बापू काम किया करते थे, उसपर रखी बापूकी फोटोके सामने बैठे मनमें विचार आने लगा—कल सारी रात मोटरमें बैठे हृदयसे जो ध्वनी निकल रही थी, 'बापू जीवित हैं। बापू जीवित हैं।' वह क्या गलत थी? वह ध्वनि इतनी स्पष्ट थी, मगर क्या सब कल्पनाका ही खेल था? उत्तर मिला—नहीं, बापू जीवित हैं। सचमुच जीवित हैं। तुम्हारे एक-एक विचारको, एक एक आचारको देख रहे हैं। दूसरे दिन कास साहब अंग्रेजी कविताकी कुछ लाइनें लिखकर दे गये। उनमें आखिरी लाइनों का भाव कुछ ऐसा था।

'याद रखो, अब उनके हथियार सिर्फ तुम्हारे हाथ और पाँव हैं। वे देखते हैं। सभालना कि किस चीजको तुम छूते हो, कहाँ पर कदम रखते हो।'

एक दफा बापूसे किसीने कहा था—'आपके अनुयायियों' रचनात्मक कार्य करने वालोंमें कुछ बेजनी पायी जाती है। उनमें वह तेजी नहीं जिससे वे आपका सन्देश घर-घर, गाँव-गाँव, देश भरमें पहुँचायें। बापू गम्भीर हो गये। कहने लगे—"हाँ आज वे बेबससे लगते हैं। मेरे जीवनमें दूसरा हो नहीं सकता। उन सबका व्यक्तित्व मेरे व्यक्तित्वके नीचे दबा पड़ा हुआ है। वे बात बातमें मुझसे पूछते हैं।

मगर मेरे बाद, मैं आशा रखता हूं, उनमें वह तेज और शक्ति अपने आप आ जायेगी। अगर मेरे सन्देशमें कुछ है, तो वह मेरे जानेके बाद मर नहीं जायगा।"

हम लोगोंसे एक बार कहने लगे कि हमसे क्या क्या आशाएँ रखते है। आगाखां महलमें उपवासकी बातें चल रही थीं। वे न रहें, तो हमारा क्या धर्म होगा, हमें क्या करना होगा, वे हमें समझा रहे थे। हमसे वह चर्चा सहन नहीं हुई। मैं बोल उठी—"नहीं बापू, यह सब न सुनाइये। हमारी तो यही प्रार्थना है कि आपके देखते-देखते महादेव भाईकी तरह हमें भी ईश्वर उठा ले। आपके बाद कुछ भी करने की हमारी शक्ति नहीं!" बापू और ज्यादा गम्भीर हो बोले—"महादेवकी तरह तुम सब मुझे छोड़ते जाओगे, तो मैं कहाँ जाऊँगा? ऐसा विचार करना तुम्हें शोभा नहीं देता। और तुम लोगोंकी आज शक्ति नहीं, मगर ईसाके मृत्युकी समय उनके शिष्योंमें शक्ति थी क्या, दृढ़ विश्वाससे सच्चे हृदयसे, जो ईश्वर परायण होकर कार्य करता है, शक्ति उसे ईश्वर अपने आप दे देता है। जो अपने आपको शून्यवत् करके सत्यकी आराधना करता है, उसका मार्ग प्रदर्शन प्रभु अपने आप करता है।" क्या हम अपने आपको शून्यवत् कर सकेंगे?
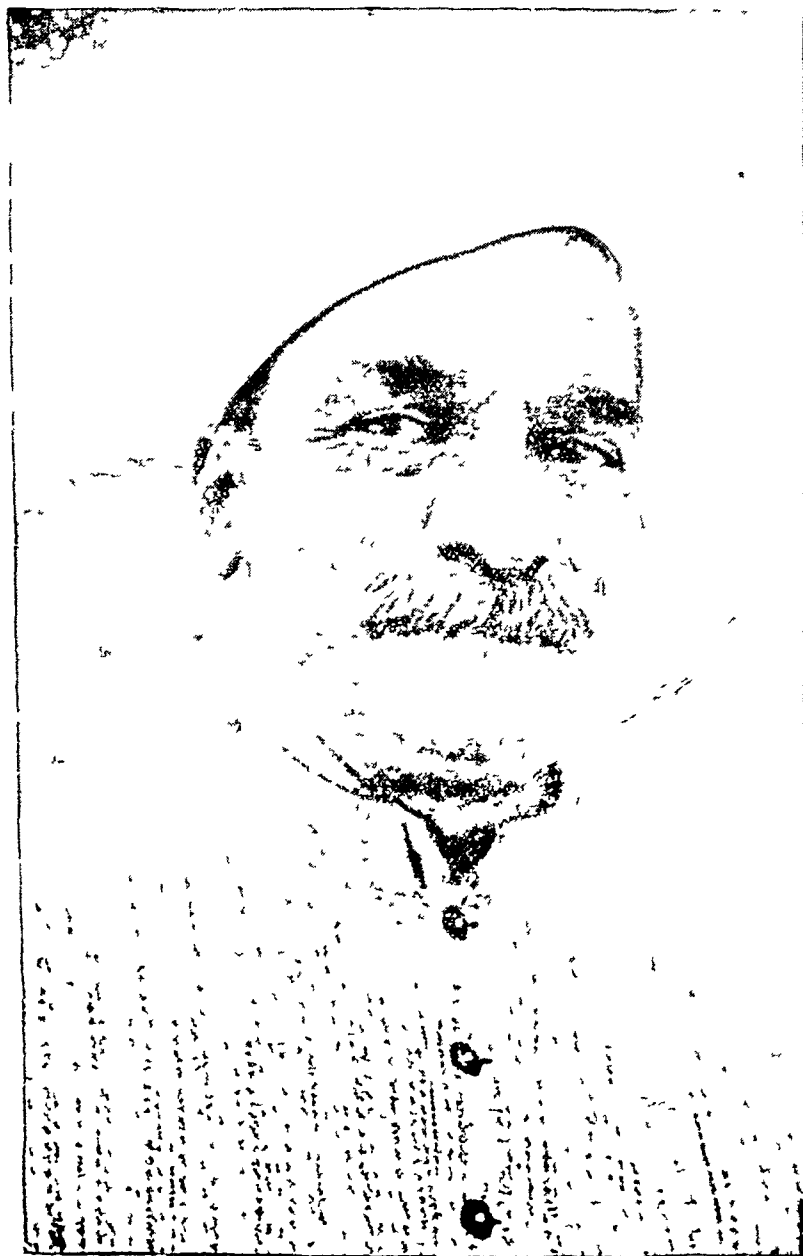
राष्ट्रपति—डा० राजेन्द्र प्रसाद ।

बापूका बलिदान

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद

(६ ता० को दिल्ली रेडियो से दिया भाषण)

आज बापूका भौतिक शरीर हमारे बीच नहीं है। उनके वे कोमल चरण नहीं जिनको हम स्पर्श करते रहे। उनके वरदहस्त नहीं जिन्हें हमारे कन्धोंपर रख बेहद शुभाशीर्वाद देते थे। सत्यके पथ्यका अनुसरण करनेके लिए प्रेरित करने वाले उनके मधुर शब्द भी अब हमे नहीं सुनाई देंगे। दयासे परिपूर्ण उनके नेत्र अब हमपर प्यारकी वर्षा बरसानेके लिए नहीं रहे।

पर बापूने ही तो हमे सदा यह बताया है कि यह देह अनित्य है, आत्मा ही अमर है। यद्यपि बापूकी आत्माने नाशवान शरीरको छोड़ दिया है, पर वे हमारे भले और बुरे कर्मोंको अबभी देख रहे हैं। आज हमे उस कार्यको सम्पन्न करना है जिसे बापूने अधूराही छोड़ दिया। यही उस पवित्र आत्माके लिए हमारा सबसे बड़ा सम्मान होगा।

गाधीजी के महान् व्यक्तित्व और उनके कार्योंने उन्हें सदाके लिए अमर बना दिया है। अब उनके स्मारककी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। पर मनुष्य तो अपनी आत्माको सान्त्वना प्रदान करनेके लिए कुछ करताही है। इसीलिए कहा गया है कि गांधीजीके विधायक कार्यक्रमोंको, जिन्हें पूरा करनेके लिए उन्होंने आजीवन प्रयत्न किया, पूरी शक्ति और श्रद्धासे सम्पन्न करना होगा। इन्ही विधायक कार्यक्रमके द्वाराही गांधीजी का प्रेम और अहिंसाका सिद्धान्त फूला और फला। इन्हीं कार्यक्रमोंको सम्पन्न कर हम बापूके महान् आदर्शों और उनकी शिक्षाओंको जीवित रख सकते हैं।

कांग्रेस कार्यसमितिकी बैठक हालही मे हुई थी। उसने गांधीजीके स्मारक कोषके लिए देशवासियोंसे अपील की है। उसने अपीलकी है कि गाधीजीके विधायक कार्यक्रमोंको पूरा करनेके लिए स्थापित किये जानेवाले कोषमें अपनी आयका

दसवां भाग दान करे। इसी कोषमें गांधीजीकी लिखित शिक्षाएं तथा उनकी रचनाएं प्रकाशित की जायंगी। चन्दा एकत्रित करने वालोंके नाम बादमें घोषित किये जायंगे। इस कोषमें चन्दादेनेके लिये विशेष तौरपर अपील निकालनेकी आवश्यकता नहीं क्योंकि स्वयं लोग चन्दा देनेके लिये लालायित हैं।

पारस्परिक घृणाका दुष्परिणाम

आज तो मै आपके सामने इस हृदय विदारक दुर्घटनाके संम्बन्धमे अपने हृदयके भावोंको व्यक्त करनेके लिए उपस्थित हुआ हूँ। प्रश्न उठता है कि ऐसा नीच कर्म क्यों किया गया। मानव इतिहासमे सत्य और अहिसाके सबसे बड़े पुजारीकी निकृष्टतम रूपमे ऐसी हत्या क्यों की गयी? भारतमें सांप्रदायिकता तथा साम्प्रदायिक विद्वेष और घृणाका जो विषाक्त वातावरण तैयार किया गया उसीका यह दुष्परिणाम है। महात्माजीने अपने महान् व्यक्तित्व और पूरी शक्तिसे घृणा, विद्वेष और साम्प्रदायिकताका आजीवन विरोध किया। अब हमारा कर्तव्य है कि महात्माजीने अपने जीवनमे जिसे नहीं पूरा किया, उनके शहीद होजाने के बाद हम उसे पूरा करें।

गांधीजी और हिन्दू धर्म

क्या हम कभी स्वप्न मे भी अनुभव कर सकते हैं कि गांधीजीने हिन्दू जाति और हिन्दू समाजको हानि पहुँचायी है? क्या यह कभी सम्भव है कि हिन्दू समाजके मुक्तिदाता निर्दलित, उत्पीड़ित तथा नग्न समाजके त्राता गांधी हिन्दुओं का अहित कभी सोच सकता? पर अदूरदर्शी तथा संकुचित मस्तिष्कके वे हिन्दू ही, जो हिन्दू धर्मके वास्तविक तथ्योंको नहीं समझते, ऐसा सोच सकते हैं। ऐसाही संकुचित अदूरदर्शिताके दुष्परिणाम स्वरूप यह दुर्घटना घटित हुई है। क्या मै पूछ सकता हूं कि किस तरह गांधीजीकी हत्यासे हिन्दू धर्म और समाजकी रक्षा हुई है? मैं स्पष्ट रूपसे यह कह सकता हूँ कि हिन्दू इतिहासमें इतनी बड़ी दुर्घटना कभी घटित नहीं हुई थी। हिंदू इतिहासमे बहुत-सी लड़ाइयां लड़ी गयी है पर ये न्याय-युद्ध रहे हैं। हिंदू धर्म किसी वीरको आदेश नहीं देता कि वह धोखे और धूर्ततासे दूसरेकी हत्या करे।

हिंन्दुओंपर सदाके लिए कालिख

हिंदू इतिहासमे एक भी उदाहरण नहीं मिलेगा जब महात्माजी जैसा अथवा

उनसे छोटा भी व्यक्ति इस तरह छलसे मारा गया हो। हिंदू इतिहासमें यही एक ऐसी दुर्घटना है जब एक कायर हिंदूने उस महात्माके खूनसे अपने हाथोंको रंगा है। उसने सदाके लिए हिंदुओं पर कालिख पोत दी। सोचिये! कौन मारा गया है। गांधीजीका शरीर या उनकी आत्मा। गांधीजी तो स्वयं ही अपने शरीरको कम महत्व देते थे। जिन गोलियोंसे गांधीजीका हृदय छेदा गया वास्तवमें उनसे हिंदू धर्मकी ही आत्मा छिद गयी है। आज प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है कि वह जागृत हो अपने हृदयको ईमानदारीसे टटोले कि सांप्रदायिकता या अलगावके पापोंका भागी वह है या नहीं। आज यही अवसर है जब हम इस विषसे विपाक्त अपने हृदयको साफकर सकते हैं। अपनी गलतियों और भूलोंको छिपाना तथा दूसरेके पापोंको निकालना सबसे बड़ा पाप है।

देशके नामको उज्ज्वल रखें

आपमें भला बुरा करनेकी शक्ति भी है। आज हमें वह सुअवसर प्राप्त है जब हम भारतीयता और भारतीय परंपराके अनुरूप कार्य कर सकें। आज विश्वकी दृष्टिमें हिंदकी प्रतिष्ठा क्या है इसे हमें महसूस करना है। हमें अपनेको योग्य शासक और जनसेवक सिद्ध करना है। ईश्वर करे गांधीजीके बलिदानसे हममें वह भावना जागृत हो जिससे बापूके आदर्शोंपर चल सकें। इसीमें देशका उद्धार है।

बापू

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

१९१६ का साल था। कोई ३२ सालसे ऊपरकी बात है। तब मैंने बापूको पहले पहल देखा था और तबसे तो एक पूरा युग बीत गया है। लाजिमी तौरपर हम बीते हुए जमानेकी तरफ देखते हैं और बेशुमार यादे ताजा हो जाती हैं। हिन्दुस्तानके इतिहासमें यह कितना अनोखा जमाना रहा है। सारे उतार चढ़ाव और हार जीतवाली इस सच्ची कहानीने वीररसके काव्यका अनोखा रूप ले लिया है। हमारी मामूली जिंदगियोंको भी रोमांचक कल्पनाके प्रकाशने छुआ, क्योंकि हम इस जमानेमें जिये और हिंदुस्तानके महान् नाटकमे कम या ज्यादा हमने अपना पार्ट अदा किया।

यह जमाना सारी दुनियांमें लड़ाइयों, क्रांतियों और हिलानेवाली घटनाओंका जमाना रहा है। फिर भी हिंदुस्तानकी घटनाएँ उनसे बिलकुल अलग और साफ दिखाई देती हैं, क्योंकि वे बिलकुल दूसरी ही सतहपर हुई थीं। अगर कोई बापूके बारेमे काफी जाने बिना इस जमानेका अध्ययन करे, तो उसे ताज्जुब होगा कि हिन्दुस्तानमे यह सब कैसे और क्यों हुआ! इसे समझना कठिन है। बुद्धिके ठंढे प्रकाशकी मददसे यह समझना भी कठिन है कि हममेंसे हरएक पुरुष या स्त्रीने जो कुछ किया वह क्यों किया। कभी कभी यह होता है कि एक व्यक्ति या एक राष्ट्र भी किसी भावना या जोशमें बहकर एक खास ढगका काम करता है—कभी कभी ऊँचा और तारीफके लायक काम करता है, अक्सर नीचा और बुरा काम करता है। लेकिन वह जोस और वह भावना थोड़े समय बाद खतम हो जाती है और व्यक्ति जल्दी ही कर्म और अकर्मकी अपनी मामूली सतहपर लौट आता है।

इस जमानेमें हिन्दुस्तानके बारेमें सिर्फ यही ताज्जुबकी बात नहीं कि सारे देशने एक ऊँची सतहपर काम किया, बल्कि यह भी थी कि उसने इतने लम्बे अरसेमे लगातार कम या ज्यादा उसी सतहपर काम किया। वह सचमुच तारीफके लायक काम था। इसे तबतक आसानीसे समझाया या समझा नहीं जा सकता जबतक हम उस अचरजमे डालनेवाले व्यक्तिकी तरफ नहीं देखते, जिसने इस जमानेको बनाया है। एक बड़ी भारी मूर्तिकी तरह बापू हिन्दुस्तानके इतिहासकी आधी सदीमे पांव फैलाकर खड़े हैं। वह बड़ी भारी मूर्ति शरीरकी नहीं, बल्कि मन और आत्माकी है।

हम बापूके लिये शोक करते हैं और अपनेको अनाथ महसूस करते हैं! लेकिन उनके तेजस्वी जीवनको देखते हुए शोक मनानेको है ही क्या? सचमुच दुनियाके इतिहासमें विरले ही मनुष्योंके भागमें यह बदा होगा कि वे अपने ही जीवनमें इतनी बड़ी कामयाबी देख सकें। बापू हमारी कमजोरियों और त्रुटियोंके लिए दुःखी थे और हिन्दुस्तानको और ज्यादा ऊँचाईपर न ले जानेका उन्हें अफसोस था। उस दुःख और अफसोसको हम आसानीसे समझ सकते हैं। फिर भी, कौन कह सकता है कि उनका जीवन असफल रहा? जिस चीजको उन्होंने छुआ- उसे कीमती और गुणवाली बना दिया। जो काम उन्होंने किया, उसका काफी अच्छा नतीजा निकला—हालां कि शायद उतना बड़ा नहीं जितनेकी वे आशा करते थे। हमपर यही छाप पड़ती थी कि वे जो कोई काम हाथमें लेंगे, उसमें सचमुच असफल हो ही नहीं सकते। गीताके उपदेशके मुताबिक वे फलकी इच्छा न रखते हुए स्थितप्रज्ञकी तरह उदासीन रहकर काम करते थे। इसीलिए कामका फल उन्हें मिलता ही था।

कठिन कामों, हलचलों और एक-सी प्रवृत्तिवाले सामान्य जीवनसे भिन्न अनेक साहसोंसे भरी हुई उनकी लम्बी जिंदगीमें बेसुरा राग शायद ही कभी सुनाई पड़ता था। उनकी सारी विविध प्रवृत्तियोंमें ज्यादा ज्यादा मात्राओंमें एकरसता आती गयी और उनके मुंहसे निकलनेवाला हर एक शब्द और हर एक चेष्टा इसमें ठीक तरहसे जम गयी थी, और इस तरह बेजाने ही वे पूरे कलाकार बन गये, क्योंकि उन्होंने जीनेकी कला सीखी थी, अगरचे जीवनका जो ढंग उन्होंने अख्तियार किया था, वह दुनियाके ढंगोंसे बहुत भिन्न था। इससे यह बात साफ हो गयी कि सत्य और अच्छाईकी लगन, दूसरी चीजोंके अलावा, जीवनमें ऐसी कलात्मकता प्रदान करती है।

जैसे जैसे वे बूढ़े होते गये उनका शरीर उनके भीतरकी शक्तिशाली आत्मा का सिर्फ एक वाहन जैसा दिखाई पड़ने लगा। उनकी बात सुनते हुए या उनको देखते हुए लोग उनके शरीरको भूल जाते थे और इसलिए जहां वे बैठते थे, वह जगह मन्दिर बन जाती थी और जहां वे चलते थे वह स्थान पूजाका स्थान बन जाता था।

उनके अवसानमें भी एक अनोखी भव्यता और कलापूर्णता थी। उन जैसे व्यक्तिके लिये और उनके जैसी जिन्दगीके लिये हर दृष्टिकोणसे एक योग्य अन्त था

सचमुच, उस मृत्युसे उनके जीवनका सबक ऊँचा उठ गया। मौतके समय वे अपनी शक्तियोंसे भरपूर थे और प्रार्थनाके वक्त उनकी मृत्यु हुई, जब कि बेशक वे मरना पसन्द करते। दो फिरकोंके बीच एकता कायम करनेके लिए वे शहीद हुए इसके लिए उन्होंने हमेशा काम किया था, और खास करके पिछले एक या ज्यादा बरसोंसे तो उन्होंने इसके लिए लगातार मेहनत की थी।

वे अचानक मर गये, जिस तरह कि सभी लोग मरना चाहेंगे। उनके बारेमे शरीरके घुलते जाने या लम्बे अरसे तक बीमार रहनेकी कोई बात ही पैदा नहीं हुई। ज्यादा उम्रमें इन्सानकी याददाश्तमें जो कमी आ जाती है, वह भी उनमे नही आयी। तब हम क्यों उनके लिए शोक करे? हमारी यादमें वे उस 'गुरु' की तरह हमेशा रहेंगे, जिनके डग अन्त तक फुर्तीले रहे, जिनकी मुस्कान दूसरोंके ओठों पर भी मुस्कान ला देती थी और मानसिक शक्तियां अचूक थीं। अपने जीवन और मृत्यु दोनोंमे उनकी शक्तियां अपनी चरम सीमापर पहुंची हुई थीं। हमारे मनमें और जिस युगमें हम रहते हैं उसके मनमें वे अपनी ऐसी तस्वीर छोड़ गये है जो कभी मिट नहीं सकती।

वह तस्वीर कभी धुंधली नहीं होगी मगर उनकी सिद्धि इससे बहुत ज्यादा है। उन्होंने हमारे मन और आत्मके तत्वमे प्रवेश करके उन्हें वदला है और उनको नये ढगमें तैयार किया है। गांधी युगकी पीढ़ीका तो अन्त हो जायगा, मगर गांधीका वह असर वना रहेगा, और हर आनेवाली पीढीको प्रभावित करता रहेगा क्योंकि वह हिन्दुस्तानकी आत्माका एक अग वन गया है। जव इस देशमे हम आत्मिक रूपसे कंगाल होते जा रहे थे, वापू हमे समृद्ध और बलवान् बनानेके लिये हमारे वीचमे आये और जो ताकत उन्होंने हमे दी, वह एक दिन या एक वरसकी नहीं है, वल्कि उससे हमारी राष्ट्रीय विरासतमे हमेशाके लिए भारी वृद्धि हो गयी है।

वापूने हिंदुस्तानके लिए, दुनियांके लिए और हम गरीबोंके लिए भी वहुत वड़ा काम किया है और उन्होंने उसे आश्चर्यजनक रीतिसे अच्छा किया है। अव हमारी वारी है कि हम उन्हे या उनकी यादको धोखा न दें, वल्कि अपनी पूरी योग्यताके साथ उनके कामको आगे वढ़ाते रहे और जो प्रतिज्ञाएँ हमने इतनी वार ली है, उन्हे पूरा करें।

खड़े

आशा किरण प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू

बापू के प्रति

आचार्य-नरेन्द्र देव

(युक्त प्रान्त की असेम्बली- में दिया भाषण)

माननीय स्पीकर महोदय,

संसारके सर्वश्रेष्ठ मानव तथा भारतके राष्ट्रपिता महात्मा गांधीके प्रति उनके निधन पर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने का अवसर इस व्यवस्थापिका सभा को आज ही प्राप्त हुआ है। अपने देशकी प्रथाके अनुसार तथा लोकाचारके अनुसार हमने १३ दिन तक शोक मनाया। यह शोक महात्माजीके लिए नहीं था, क्योंकि जो सर्वभूतहितमें रत है और जो मानव जातिकी एकता का अनुभव अपने जीवनमें करता रहा हो उसको शोक कहाँ, मोह कहाँ? यदि हम रोते हैं, बिलखते हैं तो अपने स्वार्थके लिये बिलखते हैं, क्योंकि आज हम इस बात का अनुभव कर रहे हैं कि हमने अपनी अक्षय निधि खोदी है, अपनी चल सम्पत्ति को गवा दिया है।

महात्माजी इस देशके सर्वश्रेष्ठ मानव थे इसीलिए हम उनको राष्ट्रपिता कहते हैं। हमारे देशमें समय समय पर महापुरुषोंने जन्म लिया है और इस जाति को पुनरुज्जीवित करने के लिए नूतन संदेश का सचार किया है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि अन्य देशोंमें महापुरुष उत्पन्न हुए हैं, लेकिन मेरी अल्प बुद्धिमें महात्मा गांधी ऐसा अद्वितीय बेजोड़ महापुरुष केवल भारतवर्षमें ही जन्म ले सकता था और वह भी बीसवीं शताब्दीमें, अन्यत्र कहीं नहीं। क्योंकि महात्मा गाधीने भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति को, उसकी पुरातन शिक्षा को परिष्कृत कर युग धर्मके अनुरूप उसको नवीन रूप प्रदान कर, उसमें वर्तमान युगके नवीन सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्य-का पुट देकर एक अद्भुत एवं अनन्यतम सामञ्जस्य स्थापित किया। उन्होंने इस नवयुगकी जो अभिलाषाएं हैं, जो आकाक्षाएँ हैं, जो उसके महान उद्देश्य हैं उनका सच्चा प्रतिनिधित्व किया है। इसलिए वे भारतवर्षके ही महापुरुष नहीं थे अपितु समस्त संसारके महापुरुष थे। यदि कोई यह कहे कि उनकी राष्ट्रीयता संकुचित थी, तो वह

गलत कहेगा। यद्यपि महात्मागांधी स्वदेशीके व्रती थे, भारतीय संस्कृतिके पुजारी थे तथा भारतीय राष्ट्रीयताके प्रबल समर्थक थे, किन्तु उनकी राष्ट्रीयता उदारतासे पूर्ण थी, ओतप्रोत थी। वह संकुचित नहीं थी। संकुचित राष्ट्रीयता वर्तमान समाज का एक बड़ा अभिशाप है किन्तु महात्माजी का हृदय विशाल था। जिस प्रकार भूकम्प-मापक यंत्र पृथ्वीके मृदुसे मृदु कंप को भी अपने में अंकित कर लेता है उसी प्रकार मानव जाति की पीड़ा की क्षीणसे क्षीण रेखा भी उनके हृदय-पटल पर अंकित हो जाती थी। हमारा देश समय समय पर महापुरुषों को जन्म देता रहा है और मैं समझता हूँ कि इस व्यवसायमें भारत सदासे कुशल रहा है, अग्रणी रहा है। पतित अवस्थामें भी, गुलामी की हालतमें भी भारतवर्ष ही अकेला ऐसा देश रहा है, जो जगद्वन्द्य महापुरुषोंको जन्म दे सका है। मैं समझता हूं कि इस व्यवसायमें भारत सदासे कुशल रहा है। हमारे देशमें भगवान बुद्ध हुए तथा अन्य धर्मोंके प्रवर्तक हुए, किन्तु सामान्य जनताके जीवनके स्तरको ऊंचा करनेमें कोई भी समर्थ नहीं हो सका। यह यथार्थ है कि पीड़ित मानवताके उद्धारके लिए नूतन धार्मिक संदेश उन्होंने दिये थे, समाजके कठोर भार को वहन करनेकी समर्थता प्रदान करनेके लिए उन्होंने नए नए आश्वासन दिये थे, उनके विक्षुब्ध हृदयोंको शान्त करनेके लिए पारलौकिक सुखोंकी आशाएँ दिलायी थीं, लेकिन सामान्य जीवनके जो कठोर सामाजिक बंधन है, जो जनताके ऊपर कठोर शासन चल रहा है, जो सामाजिक और आर्थिक विषमताएँ हैं, जो दीनों और अकिंचन जनों को भांति-भांतिके तिरस्कार और अवहेलनाएँ सहनी पड़ती हैं, इन सब समस्याओंको हल करनेवाला यदि कोई व्यक्ति हुआ तो वह महात्मा गाधी हैं। उन्होंने ही सामान्य जीवनमें जनोंके जीवनके स्तर को ऊंचा किया। उन्होंने जनतामे मानवोचित स्वाभिमान उत्पन्न किया। उन्होंने ही भारतीय जनताको इस बातके लिए सन्मति प्रदान की कि वह साम्राज्यशाहीके भी विरुद्ध विद्रोह करे और यह भी पाशविक शक्तियोंका प्रयोग करके नहीं, किन्तु आध्यात्मिक बलका प्रयोग करके हुआ। उनकी अहिंसा बेजोड़ थी। भगवान् बुद्धने कहा था 'अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्' अर्थात् अक्रोधसे क्रोध को जीतना चाहिए। उनकी अहिंसाका सिद्धान्त भी केवल व्यक्तिगत आचरणका उपदेश मात्र न था, किन्तु सामाजिक समस्याओंको हल करनेके लिए अहिंसाको एक उपकरण बनाया और

राजनीतिक क्षेत्रमे अपने महान ध्येयकी प्राप्तिके लिए उसका सफल प्रयोग करना महात्मा गाधीका ही काम था और चूॅकि वह ससारमे अहिंसाको प्रतिष्ठित करना चाहते थे, इसलिए उनकी अहिंसाकी व्याख्या भी अद्भुत, बेजोड़ और निराली थी। उनकी अहिंसाकी शिक्षा केवल व्यक्तिगत आचरणकी शिक्षा नहीं है। उनकी अहिंसाकी व्याख्या वह महान अस्त्र है जो समाजकी आजकी विषमताओंका, जो वैमनस्य और विद्वेषके कारण हैं उन्मूलन करना चाहती है। अहिंसाके ऐसे व्यापक प्रयोगसे ही अहिंसा प्रतिष्ठित हो सकती है।

सामाजिक और आर्थिक विषमताको दूर कर, मनुष्यको मानवतासे विभूषित कर, आत्मोन्नतिके लिए सबको ऊँचा उठाकर जाति-पांति और सम्प्रदायों को तोड़कर ही हम अहिंसाकी सच्चे अर्थोंमे प्रतिष्ठा कर सकते हैं। यदि किसी ने यह शिक्षा दी तो गाधीजीने शिक्षा दी। इसलिए यदि हम उनके सच्चे अनुयायी होना चाहते हैं तो समाजसे इस विषमताको, इस ऊँच-नीचके भेदभावको, इस अस्पृश्यताको, समाजके नीचे से नीचे स्तरके लोगों की दरिद्रता को और आर्थिक विषमता को समाजसे सदाके लिए उन्मूलित करके ही हम सच्चे अहिंसक कहला सकते हैं। यह महात्मागांधीजी की विशेषता ही थी।

हमारे देशकी यह प्रथा रही है कि महापुरुषके निधनके बाद हमने उसको देवताकी पदवीसे विभूषित किया। समाधि और मन्दिर बनाए। उसकी मूर्ति को मन्दिरोंमे प्रतिष्ठित किया या मजार बनाकर उनकी समाधि या मजार पर प्रेम और श्रद्धाके फूल चढ़ाकर हम सन्तुष्ट हो गए। उसी प्रकारसे भारतवासियोंने अनेक महापुरुषों की केवल उपासना और आराधना करके उनके मूल उपदेशोंको भुला दिया। मैं चाहता हूँ कि हम आज महात्मा गांधी को देवत्वकी उपाधि न दें, क्योंकि देवत्वसे भी ऊँचा स्थान मानवता का है। मानवकी आराधना और उपासना समाधिगृह और मजार बनाकर, उनपर फूल चढाकर नहीं होती। दीपक, नैवेद्यसे उसकी पूजा नहीं होती। मानव की आराधना और उपासना का प्रकार भिन्न है, अपने हृदयों को निर्मल और उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर ही उनकी सच्ची उपासना होती है। यदि हम चाहते हैं कि हम महात्मा गांधीके अनुयायी कहलाएँ तो हमारा यह पुनीत कर्तव्य है कि जनतामे अपने प्रेम और श्रद्धाके भावों का प्रदर्शन करनेके साथ साथ हम उनका जो अमर सन्देश है, उस पर अमल करें। उनका सन्देश भारतवर्षके लिए

ही नहीं वरन्, वर्तमान संसारके लिए है, क्योंकि आज संसार का हृदय व्यथित है, दुखी है। एक नए महायुद्धकी रचना होने जा रही है। उसकी पूर्व सूचनाएं मिल चुकी हैं। ऐसे अवसर पर संसार को एक आदेश और उपदेशकी आवश्यकता है। महात्माजी का बताया हुआ उपदेश जीवन का उपदेश है, मृत्यु का सन्देश नहीं है। और जो पश्चिमके राष्ट्र आज संकुचित राष्ट्रीयताके नाम पर मानव जातिका बलिदान करना चाहते हैं, जो सभ्यता ओर स्वाधीनता का विनाश करना चाहते हैं, वे मृत्युके पथ पर अग्रसर हो रहे हैं, वे मृत्युके अग्रदूत हैं। यदि वास्तवमें हम समझते हैं कि हम महात्माजी के अनुयायी है तो हमारी सबकी सच्ची श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि हम इस अवसर पर शपथ लें, प्रतिज्ञा करें कि हम आजीवन उनके बातए हुए मार्ग पर चलेगे, जो जनतन्त्र का मार्ग, समाजमें समता लाने का मार्ग, विविध धर्मो और सम्प्रदायोंमें सामञ्जस्य स्थापित करने का मार्ग है, जो छोटे से छोटे मानव को भी समान अधिकार देता है, जो किसी मानव का पक्ष नहीं करता, जो सबको समान रूपसे उठाना चाहता है। यदि महात्माजी के बताए हुए मार्गका हम अनुसरण करते तो एशिया का नेतृत्व हमारे हाथोंमें होता और हमारा देश भी दो भूखडोंमे विभाजित नहीं हुआ होता। हम एशियाका नेतृत्व करेंगे, किन्तु इस गृह-कलहके कारण हमारा आदर विदेशोंमे बहुत घट गया है। इसलिए यदि हम उस नेतृत्व को ग्रहण करना चाहते हैं तो हमको अपने देशमे उस सन्देश को कार्योन्वित करना होगा। भारतवर्षमे बसने वाली विविध जातियोंमे एकता की स्थापना करके हम को संसार को दिखा देना चाहिए कि हम सच्चे मार्ग पर चल रहे हैं। तभी सारा संसार हमारा अनुसरण करेगा।

महात्माजी के लिए जो सोचते हैं कि वह अन्तराष्ट्रीय व्यक्ति नहीं थे, उनका काम भारतवर्ष तक ही सीमित था, यह उनकी भूल है। भारतवर्ष तो उनकी प्रोयोगशाला मात्र था। वह समझते थे कि यदि सत्य, अहिंसासे वह देशमे सफलता प्राप्त कर सकेंगे, तो उनका सदेश सारे संसारमें फलेगा।

मै अपनी श्रद्धांजलि महात्मा जी को अर्पित करता हूँ। और प्रार्थना करता कि मुझमे शक्ति पैदा हो कि मै उनके बताए हुए मार्ग का अनुसरण किसी न किसी अंशमे कर सकू।

संसारको महात्मा गांधीकी देन

पंडित श्री कृष्णदत्त पालीवाल

(सूचना व राजस्व मन्त्री युक्त प्रातीय सरकार)

हिन्दुस्तानके बापू और दुनियाके मसीहा महात्मा गांधीने बीसवीं सदी और दुनियाको सत्य और अहिंसाके जो दो संजीवन मंत्र दिये थे उनमेसे सार्वजनिक जनादोलनोंमे अहिंसाकी गतिशीलता, और उसकी अमोघशक्ति को देखकर सारा संसार चकित रह गया है।

जब महात्माजीने राजनीतिमें अहिंसाका प्रवेश किया तब तो देशमे लग-भग सभी राजनैतिक नेता और विचारक उसमे अविश्वास रखते थे तथा उसकी आलोचना करते थे। और लोग उस समय तक अहिंसामे अविश्वास करते रहे जब तक कि १९३१ मे गाधी इरविन समझौतेके रूपमे उसके चमत्कारोंको नहीं देख लिया। कुछ लोग तो अब भी अहिंसाके तीव्र और कटु आलोचक है।

यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है क्योंकि हिंसा इंसानकी प्राकृतिक और परपरागत प्रवृत्ति है। वह तो इसानोको हैवानोंसे विरासतमे मिली है। लेकिन अहिंसा एक तो वैसे ही दैवी सपत्ति है दूसरे कृष्ण और बुद्ध व ईसाके अहिंसा संबधी उपदेशोंके होते हुए भी सार्वजनिक तथा राजनैतिक और सामाजिक जीवन मे उसका प्रयोग एक मात्र महात्मा गाधीका अपना आविष्कार था। और नई बात तथा आवि-ष्कारोंकी प्रारभिक अवस्थामे उनका विरोध तथा उनकी आलोचनाका होना स्पष्टतः स्वाभाविक है।

इन सब बातोंके होते हुए भी अहिंसाके चमत्कार १९२०-२१ में ही दिखाई देने लगे। महात्मा गाधीने कहा था कि लोकमान्य तिलककी चिताकी राखसे अहिंसा का जन्म हुआ। वह पजाब हत्याकाड, खिलाफत तथा स्वराज्यके लिए शुरू किया गया था। पजाब हत्याकाडने तमाम हिंदुस्तान गुस्सेसे भरा हुआ था लेकिन किसीको कोई

रास्ता नहीं दिखाई देता था कि क्या किया जाय। उसी अंधेरे और सियासी बेबसीकी हालतमें महात्माजीने अहिंसाके प्रकाशपुंज और असहयोगके आत्मावलंबनसे देशभरको जग-मगा दिया। सालभरमें कांग्रेसके करोड़ों मेम्बर बन गये। तिलक स्मारक फंडके लिए एक करोड़ रुपया इकट्ठा हो गया। जनतामें आशा, साहस और आत्म-विश्वास तथा अपरिमित बल आया।

उसी समय दुनियाके दूसरे देशोंका ध्यान भी महात्मा गांधीके बताये हुए नये रास्तेकी तरफ गया। मिश्र, सीरिया, जर्मनी इत्यादिमें वहांकी पीड़ित जनताने उसका सहारा लिया।

हिंदुस्तानमें तो यह हालत हुई कि अहिंसाकी नुकताचीनी करनेवाले तथा लड़ाकू कौमों तकको बरबस अहिंसात्मक सत्याग्रहसे अपने मकसद पूरे करने पड़े। मराठोंने अहिंसात्मक सत्याग्रह किया, सिखोंने गुरुद्वारेके सुधारमें अहिंसात्मक सत्याग्रहसे ही सफलता पाई। सरहदके पठानोंने भी बादशाह खां, सरहदी गांधीकी रहनुमाईमे अहिंसात्मक सत्याग्रहसे ही सरहदी सूबामें शासन सुधार प्राप्त किये। हिंदू सभाई और आर्यसमाजियोंको भी हैदराबादमें अहिंसात्मक सत्याग्रहकी शरण लेनी पड़ी। अहिंसाको शराफतके खिलाफ बतलानेवाले मुसलिम लीडरोंको भी लखनऊमें तबर और मदहे साहबाका निबटारा करनेके लिए अहिंसात्मक सत्याग्रहके सिवा दूसरा रास्ता नहीं सूझा, न शियाओंको न सुन्नियोंको।

१९४२ की सफल जनक्रांति अहिंसाकी जीती जागती यादगार बन गई। लार्ड माउण्टबेटेनकी १४ अगस्तको यह कहना पड़ा कि दुनियाकी तवारीखमें अहिंसा द्वारा स्वाधीनता प्राप्त करनेका यह पहला उदाहरण है।

सच बात यह है कि बीसवीं सदीमे दुनियां भरकी पीड़ित जनताके पास अहिंसाके अमोघ अस्त्रके अलावा शासक और शोषकवर्ग तथा सत्ताधारियोंका सामना करके अपने अधिकार प्राप्त करनेके लिये और कोई रास्ता नहीं रह गया था। क्योंकि वैज्ञानिक आविष्कारोंसे सरकारोंकी, शासकवर्गोंकी, सभी जगह संघारण शक्ति जनताके मुकाबले मे बेतहाशा बढ़ गई थी।

शासकवर्ग, शोपकदल, तथा सत्ताधारियों को इस ताकतकी वजहसे दुनिया भरमे हर मुल्कमे जनताके लिए सरकारोंका मुकाबला करना गैर मुमकिन हो गया है।

जे० एन० जोड नामके एक पाश्चात्य लेखकने अपनी एक किताबमें लिखा है कि अब हिंसा द्वारा ताकत हथियानेका सिद्धात बिलकुल बेकार है। कम्युनिस्टोंकी उम्मीद भी बेकारही गयी है कि फौजें जनतामे मिल जायगी। चूंकि लड़ाईका आखिरी फैसला अब जहाजोंके हाथ है और हवाई जहाजोंमें सरकारे बीचके दरजेके फिरकेके लोगोंको भरती करती है और ये लोग मार्क्सवादके खिलाफ हैं।

अणुबमकी वजहसे तो पब्लिकके लिए हिसाके जरिए सरकारका मुकाबला करना और भी गैर मुमकिन हो गया है। अणुबमका मुकाबला पब्लिककी कोई भी पार्टी हिसाके जरिए कैसे कर सकती है ? विज्ञानकी वजहसे जो यह ताकतका हेरफेर हो गया है उससे सरकारोंकी संहारक शक्ति इतनी ज्यादा बढ गयी है कि पब्लिकके लिए लोकतंत्रकी जनताके राजकी रक्षा करना बिलकुल गैर मुमकिन हो गया है।

आजकी दुनियामे पब्लिककी इस बेबसीकी वजहसे उसके पास शासकों शोषकों और सत्ताधारियोंका मुकाबला करनेके लिए महात्माजीके बताये हुए अहिसाके रास्तेके अलावा दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है। इसीलिये महात्मा गाधीही आज सारे संसारके त्राता हैं। दुनियाभरके जनसंग्रामोंके वे एकमात्र सेना नायक ही नहीं, दुनियाभरके लिए बीसवीं सदीके युग निर्माता थे। जिस तरहसे मार्क्सवाद १९ वीं सदीकी युगधारा थी उसी तरह गांधीवाद २० वीं सदीकी युगधारा है।

इसके अलावा हिसासे कभी कोई समस्या हल नहीं होती। हिंसासे पायी हुई कामयाबी चन्दरोजा और धोखेकी टट्टी साबित होती। आल्डस हक्स्ले नामके नामी विद्वानने अपनी साध्य साधन नामक पुस्तकमे लिखा है कि फ्रांसके लुई राजवंशकी हिंसामे फ्रांसीसी राज्यक्रांतिकी हिसा पैदा हुई। रूसके जारकी हिसामे बोल्शेविकोंकी हिसा पैदा हुई। कम्युनिस्टों की हिंसासे फासिस्टों और नात्सियों की हिसा पैदा हुई। १९१४-१८ वाली दुनियाकी पहली लड़ाईमें हारा हुआ जर्मनी १९२९ मे फिर १९३९ में लड़नेको उठ खड़ा हुआ। और कौन कह सकता है कि आगे क्या होगा ? दूसरा संसारव्यापी युद्ध पूरी तरह खत्म भी नहीं होने पाया था कि तीसरे युद्धकी चर्चा होने लगी और दिनपर दिन बढ़ती जाती है। यानी हिंसासे सिवा सबको तबाही और बरबादीके किसीको कुछ फायदा नहीं होता है।

अंग्रेजीमे एक कहावत है कि पब्लिककी याददाश्त बहुत थोड़े वक्तकी होती

है। वह पिछले नुकसानको बहुत जल्दी भूल जाती है। अगर कहीं याद रहे तो वह कभी भूलकर भी हिंसा और लड़ाईका नाम न ले।

महात्मा गांधीने हमें यह भी बताया है कि अहिसा कमजोरोंका नहीं बहादुरोंका हथियार है। जाहिरभी है कि हथियार लेकर किसीको मारनेमें ऐसी क्या बहादुरी है? बहादुरी तो जानबूझकर बिना डरे मौतका मुकाबला करनेमें है। जब तक हमारे देशमें महात्माजीने अहिसाका प्रचार नहीं किया था, उससे पहले बहादुर पंजाबमें गलियोंमें पेटके बल रेंगकर चलनेके हुकमकी मुखालफत एक भी बहादुर सिपाहीने नहीं की थी, जब कि महात्माजीकी अहिसाकी नसीहतके बाद मुल्कमे ऐसे हजारों निकलेंगे जो इस तरहके हुकम माननेके पहले गोली या फांसीका शिकार होना खुशीसे पसन्द करेंगे।

आत्मबल अणुबमसे अधिक

पिछली लड़ाईमें यह भी देखा गया कि ज्यादा हिसासे मुकाबला होनेपर सभी हथियार डाल देते थे। चाहे वह अमरिकन हो, या अंग्रेज, फ्रांसीसी हो या रूसी, अथवा जर्मन हो या जापानी। लाखोंकी तादादमें सबके सब हथियार डालते देखे गये हैं। जब कि महात्मा गांधीके शब्दोंमें सच्चा सत्याग्रही कभी हथियार नहीं डालता है। वह हमेशा प्रेमिका, माशूका की तरह मौतका स्वागत और आलिंगन करनेको तैयार रहता है। अकेला एक सत्याग्रही सारे संसारका सामना करनेको तैयार रहता है। उसका आत्मबल अणुबमसे भी अधिक होता है।

हिसासे होनेवाली बुराइयोंको देखनेके लिए हमें लड़ाइयों और इतिहासकी तरफ जानेकी भी कोई जरूरत नहीं। पिछले दिनोंमें हमारे ही मुल्कके भाईके खूनसे भाईके हाथ रंगेजाने का जो शर्मनाक और दर्दनाक काण्ड हुआ है वही क्या कम है? उससे किसीका क्या फायदा हुआ! क्या हिंदू दब गये या सिख या मुसलमान? क्या हिंदू मर गये या सिख या मुसलमान? नयोंको मारनेसे जो पहले मर गये थे वे तो जिंदा नहीं हुए नये जरूर और मारे गये। आज भी हिंदू सिख व मुसलमान सबकी बहिन व बेटियोंको जो पिशाच भगा ले गये हैं उनके साथ क्या बीतती होगी। इसका ख्याल करते ही रोम रोम क्रोध, शोक और शर्मसे कांपने लगता है। कभी कभी अख-

वारोंमें जो बीभत्स तथा लोमहर्षक तथा रोमांचकारी समाचार निकल जाते हैं उन्हे पढ़कर तो आंखोंमे खून आ जाता है। ये नरपिशाच यह भी नहीं सोचते कि इसी तरह इनकी वहन वेटियोंपर भी बीत रही होगी।

संक्षेपमें आजके अंताराष्ट्रीय संसारमे स्थायी शान्ति, वास्तविक लोकतंत्र और सच्ची स्वाधीनताकी स्थापनाके लिए सिवा अहिंसाके और कोई उपाय नहीं है। अहिसा ही उनका एकमात्र तथा सर्वोत्तम उपाय है। इसीलिए महात्मा गांधी वीसवीं सदीके मसीहा हैं। दुनिया भरके मसीहा सव देशों और सव युगोंके मसीहा हैं। लोकतंत्र और जनतंत्र तो अहिंसाके विना जिंदा ही नहीं रह सकता। हिंसाकी आवोहवासे तो उसका दम घुट जाता है।

महात्माजीकी अहिंसा केवल हिंसाका भाव किसीको न मारना ही नहीं है। वह सिर्फ किसीकी आत्माको दुख न पहुँचाने तक ही महदूद नहीं है। वह तो प्रेमका दूसरा नाम है। हर इन्सान दूसरे इन्सानसे, हर धर्म दूसरे धर्मोंसे, हर कौम दूसरे कौमोंसे नफरत करना छोड़कर मुहव्वत करे, यह अहिसा है। इसी अहिंसासे आजके इन्सान उसके समाज और उसकी दुनियामे उसकी एक दुनिया और भाईचारेके सपने पूरे होंगे। ठीक उसी तरह जिस तरह हिदूस्तानमे उसकी आजादीका सपना पूरा हुआ।

आजाद हिदुस्थानमे हम अपनी जवानीमे गाये हुए गीतोंमे

हिदू मुसल्मि सिख ईसाई।
बौद्ध पारसी जैनी भाई॥

इस गीतको खास तौरपर पूरा कर दिखावें और इस तरह दुनियाभरके लिये हिदुस्तानको नमूना वनाकर उस पाक कामको पूरा करे जिसके लिये महात्मा गाधी कुरवान हुए। हिंदू सिख और मुसलमान एक दूसरेको इज्जत करते हुए एक दूसरेसे मुहव्वत करते हुए सगे भाइयोंकी तरह रहें। इसीसे महात्माजी के जिंदगीका काम पूरा होगा। यही उनकी सच्ची यादगार होगी। हमे उनके वताये हुए अहिंसा मन्त्रकी सिद्धि होगी। इसीसे श्रेणी हीन शोपण रहित नवीन सुन्दर संसार और मानव समाजका नव निर्माण होगा। सत्य और अहिंसासे ही वर्तमान अताराष्ट्रीय संसारकी समस्त जटिल समस्याएँ सुलझ जायेगी। अहिंसामे ही इतनी गतिशीलता, इतना विद्युत

भंडार है कि वह समस्त संसारको एक और प्रकाशमान तथा मानवमात्रको शक्तिशाली कर सके।

संसारभरके समस्त प्रगतिशील और विवेकशील कर्मठ क्रांतिकारी कार्य-कर्ताओंका परम पावन कर्तव्य है कि वे महात्मा गांधीकी जय, गांधीवाद जिंदाबादके नारे लगाते हुए रण हुंकारोंसे पृथ्वी और आकाशको गुंजा दें तथा संकीर्ण सांप्रदायिकता और जड़ता तथा पशुताके खिलाफ जिहाद बोल दें, धर्म युद्ध छेड़ दें।

यह याद रखें कि जिस तरह ईसामसीहके बलिदान के बाद, संसारने उनके मतको ग्रहण किया उसी तरह महात्मा गांधीकी कुरबानीके बाद संसार उनके मार्गको, गांधीवादको, सत्य और अहिंसाकी सच्चाई और मुहब्बतके उनके पैगामको और उनके संदेशको अपनायेगा।

हिन्दुत्वको बापूकी महती देन

कमलापति त्रिपाठी एम० एल० ए०

जब कोई जाति अपने स्वरूपको भूलती है तब उसका अधःपतन हो जाता है। युग आया, जब हिन्दू-जाति भी विस्मृति हो चली और बड़े वेगसे पतनकी ओर अभिमुख हुई। सहस्रों वर्षों तक विश्वके सांस्कृतिक और सामाजिक रंगमंचपर गौरवपूर्ण अभिनय करनेके बाद हिन्दू-जाति श्रान्त होकर पड़ रही और अपनी मूर्छामे अपनेकी भूल गयी। भारतके गौरवपूर्ण इतिहासका अन्त ईसाकी सातवीं शताब्दिमे हर्षवर्द्धनके बाद ही आरम्भ हो गया। जब जातियाँ अपने स्वरूपको भूलती हैं तो वे अपनी संस्कृतिकी आत्माकी उपेक्षा करने लगती है, और पूजा करने लगती हैं बाह्याडम्बरोंका, जो धीरे-धीरे रूढ़ियोंका स्वरूप ग्रहण करके हमारा कण्ठावरोध करने लगती हैं। भारतीय इतिहास पर यदि आप दृष्टिपात करें तो आपको ज्ञात हो जायगा कि हर्षवर्द्धनके बाद इस देशमे उपर्युक्त प्रकारके युगका सूत्रपात हुआ था। तबसे प्रायः तेरह सौ वर्ष बीत गये, हम बराबर गिरते गये। हमने अपनी सस्कृतिके मौलिक रूपको भुला दिया, उसकी आन्तरिक प्रेरणाको विस्मृत कर दिया और उसके सच्चे स्वरूपके प्रति आंखे बन्द कर लीं। हमारी स्वतन्त्र चेतना क्रमशः ह्रासको प्राप्त होने लगी, हमारी स्फूर्ति नष्ट होने लगी और हमने ऊपरी बातोंको ही प्रमुखता प्रदान करना आरम्भ कर दिया। रूढ़ियोंकी पूजा निर्जीवताकी ओर ले बढ़ी और अन्धानुगमन, परिस्थितियोंके प्रति उदासीनता, कालप्रवाहकी उपेक्षा तथा प्रतिक्षण परिवर्तित होनेवाले ससारके साथ अपनी गति बनाये रखनेमे हमारी असमर्थता हमे जड़ताकी ओर ले चली। धीरे-धीरे भारतीय जीवन जड़ हो गया और उसकी वह स्फूर्ति, वह स्पन्दन तथा वह तेजस्विता नष्ट हो गयी जो सजीव, सक्रिय तथा महान बनाये हुए थी। उसमे जब यह शक्ति न रही कि वह विश्वके सास्कृतिक सघर्षमे टिक सके और जब यह शक्ति न रही कि गतिशील जगतमे उत्पन्न होनेवाले प्रवाहोंसे टक्कर ले सके, तब उसने भयभीत होकर अपनेको सकुचित तथा अनुदार बनाना आरंभ कर दिया। जिस प्रकार भयसे

ग्रस्त प्राणी अपनेको कठिन प्रकोष्ठमें आबद्ध करके अपनी रक्षाकी चेष्टा करता है उसी प्रकार हिन्दू जातिने अपने को रूढ़ियोंके कठोर बंधनसे आबद्ध करके अपनी रक्षाकी चेष्टा की। ये प्रबल बंधन समय पाकर उसे और भी गतिहीन तथा निश्चेष्ट बनानेके कारण हुए।

गत बारह सौ वर्षोंका हिन्दू जातिका इतिहास इसी दुश्चक्रका इतिहास है। हिन्दुत्वकी आत्माको भूलकर उसकी जड़ कायाकी पूजा आरंभ की गयी और सारी अंतःप्रेरणा भूलकर उस कायाकी रक्षाके लिए उसे जगतसे अलग करके अंधेरे कमरेमे बन्द कर देना उचित समझा गया। फलतः मुक्त वायुमंडल तथा जीवनप्रद प्राकृतिक उपादानोंसे अलग रखा गया प्राणी जिस प्रकार बलहीन और निरुपाय हो जाता है उसी प्रकार हिन्दू जाति दुर्बल तथा निष्क्रिय हो गयी। इस दुश्चक्रसे उसे निकालनेके लिए समय समयपर महापुरुषोंने अनेक यत्न किये, पर हमारे दुर्भाग्यसे उन्हें भी अधिक सफलता न मिली। हम सांस्कृतिक दृष्टिसे जब गिरे तो राजनीतिक तथा आर्थिक पराभवको भी प्राप्त हुए। जिस पतनका सूत्रपात हर्षवर्द्धनके बाद ही हो गया था वह हिन्दू जातिको इतना निर्जीव बना चुका था कि एक शताब्दिके बाद ही भारतके निकट पश्चिमसे उठी हुई इसलामकी महती हिलोरका सामना करनेमे समर्थ न हुई। भारत एक ओर इस्लामकी सांस्कृतिक टक्करसे विताड़ित हुआ और दूसरी ओर उसे मुसलमानोंकी राजनीतिक पराधीनता प्राप्त हुई। प्रायः सहस्र वर्षोंतक यह देश उस चक्कीमें पिसता रहा। यह हमारे पूर्वजोंकी महती तपस्याका फल था जो समय समयपर भगवानकी कृपासे उत्पन्न हुए। महापुरुषोंकी देन थी कि उस घोर पतनके युगमें मूर्छित और विस्मृत होते हुए भी हिन्दू जाति मरी नहीं और अपने जीवनकी रक्षामे समर्थ रही। यह युग समाप्त भी नहीं हो सका था कि सुदूर पश्चिमसे एक महती, अतिबलवती और नवशक्ति तथा नवप्रेरणासे अभिभूत सांस्कृतिक लहर उठी, जो बड़े वेगसे भारत भूमिको आप्लावित करनेमें समर्थ हुई। अंग्रेजोंका आगमन उसीका परिणाम था जिसके फलस्वरूप हिन्दू यदि मुसलमानोंकी पराधीनता से मुक्त हुए तो अंग्रेजोंकी परतन्त्रताकी शृंखलासे आबद्ध हो गये। अंग्रेज नवोत्पन्न वैज्ञानिक संस्कृतिकी शक्तिसे सम्पन्न होकर आये थे। उन्होंने इस देशको न केवल राजनीतिक दृष्टिसे प्रताड़ित किया प्रत्युत हमारी संस्कृतिपर भी गहरा प्रहार किया। विस्मरण और मोहमे पड़ी हुई हिन्दू जाति इस प्रकारको भला सहन ही

कैसे कर सकती थी ? वह सांस्कृतिक दृष्टिसे पराभूत हुई और एक युग ऐसा आया जब यह ज्ञात होने लगा कि कदाचित् हिन्दुत्वका वह सिसकता हुआ जीवन भी न रह जायगा जो मृत तुल्य होते हुए भी तनिक-तनिक सांस ले रहा था। वह थी हमारी अवस्था, जब इस देशमे हिन्दुत्वको सहसा पुनःजागृत करनेवाले महापुरुषोंका प्रादुर्भाव शुरू हुआ। परमहंसदेव रामकृष्ण और विवेकानन्द, रामतीर्थ और दयानन्द उसी शक्तिऔर प्रवृत्ति के प्रतीक थे जो हिन्दुत्वको पुनः विकसित, जागृत, मुखरित और गतिशील बनानेके लिए उत्पन्न हुई थी। इन महापुरुषोंके कठोर तप आर परिश्रमसे हिन्दू जातिमे क्रमशः नया स्पन्दन प्रादुर्भूत हुआ। हमारे इतिहासके इन उज्वल रत्नोंने उन बन्धनोंको खोलनेकी सतत चेष्टाकी जिन्हें रूढ़ियोंका रूप देकर स्वयम् हिन्दू जातिने अपने हाथ और पैरमे कसकर बाँध रखा था। इन्होंने हिन्दूकी मूर्छा भङ्ग करने और उस विस्मृतिका निराकरण करनेका प्रयत्न किया। इन्होंने हिन्दू जातिका ध्यान बलपूर्वक हिन्दुत्वकी उस अमर आत्माकी ओर आकृष्ट करनेकी चेष्टा की जिसे भूलकर हम धराशायी हुए थे।

इन विभूतियोंके तपका यह परिणाम था कि हिन्दू समाज आँखे खोलनेके लिए बाध्य हुआ और अपनी पतितावस्था, अपने बन्धन तथा अपने चतुर्दिकके अन्धकारपूरित वातावरणकी अनुभूति की। पर हिन्दू जाति यद्यपि चैतन्य हुई थी पर उससे उसकी समस्या हल नहीं हो सकती थी। आवश्यकता थी, उसे ऐसी प्रेरणाकी जो उसे धरतीसे उठाकर पैरोंपर खड़ा कर देती, अपने बन्धनोंको क्षणमात्रमे विच्छिन्न कर देनेकी शक्ति देती और बल देती कि वह पग बढ़ाये तथा तीव्र वेगसे सांस्कृतिक पथपर अग्रसर हो जाय। उसे आवश्यकता थी ऐसी स्फूर्तिकी जो उसे आशा तथा अपने प्रति आस्था और विश्वास प्रदान करती। उसे आवश्यकता थी एक प्रकाश की, जो उसके अन्तर और बाह्यको आलोकित कर देता और उसकी स्मृतिभ्रशताको दूर करके उसे अपनेपनका ज्ञान करा देता। जो जाति अपने अतीत को भूल चुकी थी, वर्त्तमानके प्रति उदासीन थी और भविष्यके प्रति आशा तथा आस्था खो चुकी थी, उसे पुनः आन्तरिक ज्योतिसे उद्दीप्त करनेकी आवश्यकता थी इसलिए कि उसका स्वाभिमान जागे, उसके हृदयमे अतीतकी गौरवानुभूति या उसका अन्तर वर्तमानके प्रति घृणासे भर उठे और उसका हृदय उसके वर्तमानके विरुद्ध विप्लवकी आग लिये हुए ऐसे भविष्यकी रचनाकी ओर उन्मुख हो जो,

उसकी अतीतकी परम्पराके तथा उसके गौरवके अनुकूल हो। हिन्दू, हिन्दुत्वकी अमर आत्माका साक्षात्कार करे और उसके उज्ज्वल स्वरूपकी पूजासे वह बल पावे जो उसके रूढ़िमूलक जीवनको मुक्त करके उसमे गति भर दे। आवश्यकता थी इस बातकी कि हिन्दू अतीतकी पूजामें रत हो, पर इस प्रकार न रत हो कि वह पूजा शवकी पूजा हो जाय। शवसे चिपकना मृत्युका आवाहन करना है। पर जो गया है उसे प्रेरणा ग्रहण करके भविष्यकी चिन्ता करना जीवनका आवाहन करना है। फलतः आवश्यकता थी अतीतकी ऐसी पूजाकी, जिससे उज्ज्वल प्रेरणा तो प्राप्त हो, पर शवसे चिपटनेकी प्रवृत्तिका विलोप हो। बिना इन आवश्यकताओंकी पूर्तिके हिन्दू जातिका, हिन्दू संस्कृतिका पुनरुद्धार सम्भव नहीं था। आवश्यकता थी ऐसे युगपुरुषकी, जो हिन्दुत्वकी आत्माको उज्जीवित करके हिन्दूको जीवन प्रदान कर देता। विचार कीजिये कि इस आवश्यकताकी पूर्ति कैसे हुई? निसर्गकी महती कृपाके फलस्वरूप विश्वात्माकी अनुकम्पाके परिणामस्वरूप, हिन्दुत्वके सौभाग्यस्वरूप, हमारे पूर्वजोंके सुकृतके फलस्वरूप बापू अवतरित हुए जिन्होंने जीवन और मृत्युके धागेमें लटकती हुई हिदू जातिको वह सब प्रदान किया जिसके अभावमें उसकी मृत्यु ही ध्रुव थी। जिस कार्यको संतोंका युग अधूरा छोड़ गया था और जिस कार्यको रामकृष्ण और विवेकानन्द, रामतीर्थ और दयानन्द केवल स्पन्दित करके चले गये, उसे इस महाप्राण व्यक्तिने पूरा किया। बापूने हमारी शताब्दियोंकी अन्धरूढ़ियोंका उन्मूलन किया, हमारी सांस्कृतिक निश्चेष्टताका उच्छेदन किया, चतुर्दिक व्याप्त अन्धकारका उत्पाटन किया और उस जड़ताका विनाश किया जो हमे दबोचे हुए थी। हमारी आत्माका स्पर्श किया, हमे उज्जीवित किया, अतीतकी स्मृति कराई, उसपर गर्व करनेकी शक्ति प्रदान की, वर्त्तमानके प्रति विप्लवी बनाया और भविष्यकी सुन्दरतामे आस्था और विश्वास प्रदान किया। हिंदू संस्कृतिकी मौलिक ज्योतिको पुनः जगाया और इस प्रकार जगाया कि उसके आलोकसे न केवल भारत, किन्तु वसुधा एक बार चौंधिया उठेगी। जगतने देखा कि प्राचीनसे उज्वल सास्कृतिक प्रकाश विश्वके अन्तरिक्षपर उदित हुआ है और क्रमशः अधिकाधिक प्रकाशित होता हुआ नभ-मण्डलको उद्दीप्त करता हुआ आगे बढ़ा चला आ रहा है। बापूके तपसे हिन्दू समाजकी वे कुरीतियां और रस्मरिवाज जो इसकी

देहमें यक्ष्माके कीटाणुओंकी भांति पड़े हुए—उसे खाये जा रहे थे, वेगसे मरने लगे। अस्पृश्यताका वह विष जो हमारा सर्वनाश कर रहा था मिटने लागा। अशास्त्रीय जातिपांतिके बन्धनोंकी जड़ कटने लगी। हिन्दूमें आयी हुयी वह संकीर्णता और अनुदारता जो उसे जड़ बनाये हुए थी मिटने लगी। सर्वत्र रामका नाम गूंज उठा, गीताकी अमृतमय वाणी व्यामोहको नष्ट करने लगी और उपनिषदोंसे प्रवाहित धारा पवित्रता और सजीवता प्रदान करने लगी। हिन्दको अनुभूति हुईकि वह हेय, लघु और तुच्छ नहीं महान है और उसके पास ऐसी विभूति है जिसपर उचित अभिमान करनेका उसे अधिकार है। पुनरुत्थित, विकसित और स्वाभिमानी हिन्दुत्व जब आगे बढा तब नये इतिहासकी रचना हो गयी। बारह सौ वर्षोंके उसके पतनके युगका अन्त अभी उस रोज ही तो हुआ है। एक बार हिंदूने भारत भूमिमें पुनः हिन्दुत्वके सम्मानकी अनुभूति की। हिन्दुत्वको बापूकी यह महती देन थी। हिन्दू जाति और हिंदुत्वका ऐसा उद्धारक, ऐसा उन्नायक और ऐसा जीवनदाता हिन्दुत्वके नामपर ही लुप्त कर दिया गया। हिन्दूकी यह अकृतज्ञता उसके भावी विनाशकी सूचिका है ? आज स्वयम् हिन्दू विचार करे और उक्त प्रश्नका उत्तर दे।

सर्वश्रेष्ठ मानव !

श्री रेजिनाल्ड सोरेन्सन

लेनिन और महात्मा गांधीको मै विश्वमें बीसवीं शताब्दिका सबसे महान् व्यक्तित्व मानता हूँ, यद्यपि दोनों एक दूसरेके एकदम विपरीत हैं। इन दोनोंमें श्री मोहनदास करमचन्द गांधी वास्तवमें अत्यधिक प्रभावान्वित करनेवाले महापुरुष हैं। मैं गांधीजीसे प्रतिनिधिमण्डलके साथ दो अवसरपर मिला हूं। उस समय वे मद्रासकी उस इमारतमें निवास कर रहे थे जो वहांकी एक विशाल संस्थामें ही थी। उनके द्वार-पर सदा ही भीड़ लगी रहती थी, सवेरे नित्य ही गांधीजी प्रार्थना करते थे जिसमें सहस्रोंकी संख्यामें लोग एकत्र होते थे।

हमलोग अर्धवृताकारमें बैठे थे। गांधीजी भूमिपर मध्यमें शुभ्र गद्देपर बैठे थे। बिजली जल रही थी। प्रथम दिन संध्याके अनन्तर दो घण्टेतक हमलोग पारस्परिक विचार-विनिमय तथा प्रश्नादि करते रहे। उस समय हमलोग तथा महात्माजीके अति-रिक्त और कोई न था। वह अत्यन्त कुशल और विनोदी थे किन्तु कभी-कभी गम्भीर रूपसे अपने पक्षके लिए दृढ़ हो जाते थे। विचार-विनियमके अवसरपर प्रश्नपर उनका मस्तिष्क सदा कार्य करता रहता था किन्तु उनके अपने विशेष ढंगसे। किन्तु उनकी उदारताकी पृष्ठभूमिमें अभेद्य दृढ़ताकी भावना विद्यमान रहती थी। कभी-कभी उनके तर्कमें अप्रासंगिकता एवं परस्पर विरोधी वार्ते सी मालूम पड़ती हैं, किन्तु वह अपने आलोचकोंके सुधारका सदा स्वागत करते थे। व्यक्तिगत रूपसे अप्रासंगिकताके होते हुए भी महात्माजीको अपनी आत्मामें इस वातका विश्वास रहता था कि विपयके आग्रह एव हितकी दृष्टिसे उनमे साम्यमूलक सम्बन्ध रहता है। धार्मिक एवं कर्त्तव्य-शास्त्रकी दृष्टिसे महात्माजीकी पहुंच अत्यन्त गहराई तक थी लेकिन साधारण राजनीति-ज्ञको संकटमे डाल देती थी। वादविवादमे जो लोग प्रतिशोध एवं शत्रुताकी भावना पैदा कर लेते है उन्हे यह वात अत्यन्त विचित्र प्रतीत होगी कि गांधीजीने 'भारत-छोड़ो' प्रश्नसे सम्बद्ध जब समस्त तर्क उपस्थित किया तो वह पूर्णतः न्याययुक्त

प्रतीत होता था। महात्माजीने स्पष्ट शब्दोंमे कहा—'भारत-छोड़ो' योजनामे अंगरेजोंके प्रति तनिक भी घृणाका भाव नहीं। यदि हम उनसे डरते हैं तो घृणाकी भावना उत्पन्न होती है, यदि भयके भावका लोप हो जाता है तो घृणाका कहीं अस्तित्व ही नहीं रहता।'

महात्माजी जो कुछ कहते थे वह शुद्ध और सच्चे अर्थमे। वह अपने देशवासियों को सत्य और स्वातन्त्र्यके लिए विना किसी विरोधी भावनासे युक्त हुए आगे कदम बढानेके लिए कहते थे। विरोधियोंके लिये हृदयमे भ्रातृभावनासे युक्त होनेका सदा उनका आदेश रहता था। यह एक ऐसी असाधारण वस्तु है जो विरले राजनीतिक नेतामे पायी जाती है।

महात्मा गाँधीजीका 'व्यक्तित्व हम ब्रिटेनवासियोंको कुछ विचित्र और चुनौती देनेवाला भले ही प्रतीत हो, किन्तु इस वातमे तनिक सन्देह नहीं किया जा सकता कि करोड़ों भारतीयोंकी आश्यकताओं एवं आशाओंके वे मूर्ति रूप थे। भारतीय जनताके लिए वह राजनीतिक नेता मात्र नहीं अपितु आराध्यदेव 'महात्मा' थे। प्रायः सभी प्रमुख ब्रिटिश नेताओंने इस वातको स्वीकार किया है कि महात्माजी सा प्रभावशाली अन्य कोई नहीं। विरोधी आलोचना तथा विपरीत विकासके लक्ष-णोंके वावजूद वह पूर्ववत् शान्ति एव साम्यकी स्थितिमे रहते थे।

मानवताके प्राण गांधी

- श्रीमती पर्लबक

अमेरिकामें पेन्सिलवेनियाके निकट देहाती क्षेत्रमें एक गॉव है पेरेक्सीर। वहीं हमारी शान्तिमयो झोंपड़ी है। ३१ जनवरीको वह दिन पिछले दिनोंकी तरह ही आरम्भ हुआ। हम सवेरे ही उठनेके अभ्यासी हैं क्योंकि बच्चोंको कुछ दूर स्कूल जाना पड़ता है। नित्यकी तरह ही आज हम जलपानके लिए मेजके चारों ओर इकट्ठे हुए और साधारण बात-चीत करने लगे। खिड़कियोंसे बाहर घने हिम-पातका दृश्य दिखलायी दे रहा था और आकाशकी आभा भूरे रगकी हो रही थी। हमारे बच्चोंको शंका हो रही थो कि कहीं और अधिक हिम-पात न हो। एकाएक गृहपति कमरेमें आये। उनकी मुखमुद्रा गम्भीर थी। उन्होने कहा—'रेडियोपर अभी एक अत्यन्त भयानक समाचार आया है।'

यह सुनकर हम सब उनकी ओर देखने लगे और तुरंत ये हृदय-विदारक शब्द सुनाई पड़े–'गांधोजीका देहावसान हो गया।'

मेरी इच्छा है कि भारतसे हजारों मील दूर स्थित अमेरिका निवासियोंपर गांधीजीकी मृत्युसे जो प्रतिक्रिया हुई उसे भारतवासी जानें। हम लोगोंने हृदयको दहला देनेवाला यह संवाद सुना। यह साधारण मृत्यु नहीं है। गांधीजी शान्ति की प्रतिमूर्ति थे और उन्होंने अपना सारा जीवन अपने देशकी जनताकी सेवाके लिए लगा दिया था। ऐसे शान्तिप्रिय व्यक्तिकी हत्या कर दी गयी। मेरे दस वर्षके छोटे वच्चेकी ऑखोंमे ऑसू छलकने लगे और उसने कहा—'मैं चाहता हूँ कि यदि वन्दूक बनानेका आविष्कार ही न हुआ होता तो वड़ा ही अच्छा था।'

हम लोगोंमेसे किसीने भी कभी गांधीजीको नहीं देखा था, क्योंकि जब हम लोग भारतवर्षमे थे तब गांधीजी सदा जेलमें ही थे। फिर भी हम सभी उन्हें जानते थे। हमारे वच्चे गांधीजीकी आकृतिसे इतने परिचित थे मानो गांधी जी स्वयं हमारे

साथ घरमें ही रहते थे। हमारे लिए गांधीजी संसारके इनेगिने महात्माओंमेसे एक महात्मा थे। पृथ्वीके उन गिने-चुने पीरोंमेसे वे एक थे जो अपने विश्वासपर हिमालयकी तरह अटल और दृढ़ रहते थे। उनके सम्बन्धमें हमारी धारणा भी वैसी ही अटल है।

उनकी मृत्युका समाचार सुननेके वाद हम परस्पर गांधीजीके जीवन और उनकी मृत्युसे होनेवाले सम्भावित परिणामोंके सम्वन्धमे वात-चीत करने लगे।

हमे भारतवर्षपर गर्व है कि महात्मा गांधी जैसे महान् व्यक्ति भारत अधिवासी थे। पर साथ ही हमे खेद भी है कि भारतके ही एक अधिवासीने उनकी हत्या की। इस प्रकार दुखी और सन्तप्त हम लोग चुपचाप अपने दैनिक कार्योंमे लग गये।

भारतवासी सम्भवतः यह जानकर आश्चर्य करेंगे कि हमारे देशमें गांधीजीकी यश कितने व्यापक रूपमे फैला। वे यह जानकर आश्चर्यान्वित होंगे। मैं उनकी मृत्युके एक घण्टे वाद सड़कसे होकर कहीं जा रही थी कि एकाएक एक किसानने मुझे रोका और पूछा—'संसारका प्रत्येक व्यक्ति सोचता था कि गाधीजी एक उत्तम व्यक्ति थे तो फिर लोगोंने उन्हें मार क्यों डाला?'

मैंने अपना सिर धुना और कुछ बोल न सकी। उसने संकेतसे कहा कि 'जिस तरह लोगोंने महात्मा ईसाको मारा था उसी तरह लोगोंने महात्मा गांधीको मार डाला।'

उस किसानने ठीक ही कहा था कि महात्मा ईसाकी सूलीके अतिरिक्त संसारकी किसीभी घटनाकी महात्मा गाधीकी गौरवपूर्ण मृत्युसे तुलना नहीं हो सकती। गांधीजीकी मृत्यु उन्हींके देशवासी द्वारा हुई। यह ईसाके सूलीपर चढ़ाये जानेके वाद दूसरी ही वैसी घटना है। ससारके वे लोग जिन्होंने गाधीजी को कभी नहीं देखा था आज उनकी मृत्युसे शोक सतप्त हो रहे हैं। वे ऐसे समयमे मरे जव उनका प्रभाव दुनियाके कोने-कोनेमे व्याप्त हो चुका था।

कुछ दिनोंसे अमेरिका-निवासियोंमे महात्मा गांधीके प्रति वढ़ती हुई श्रद्ध अनुभव हम कर रहे थे। महात्मा गांधीके प्रति लोगों मे अगाध श्रद्धा थी।

महात्मा गांधीके प्रति जनतामें वास्तविक आदर था और हम लोगोंको यह प्रतीत होने लगा था कि वे जो कुछ कह रहे थे वही ठीक था।

आज अपने देशके अति उन्नत सैनीकीकरणके मध्य हमारी दृष्टि गांधीकी ओर जाती थी और यह प्रतीत होता था कि (युद्धका नहीं बल्कि शांतिका) गांधीका मार्ग ही ठीक है। हमारे समाचारपत्रोंने गांधीकी इस नयी शक्तिको पहचाना। भारत की इस महान् व्यक्तिके कारण अन्य देशोंमे प्रतिष्ठा बढ़ी। महात्मा गांधीजीके नेतृत्वमें होनेवाले भारतीय स्वातन्त्र्य युद्धकी ओर हमारी दृष्टि गयी क्योंकि उनका ढंग राष्ट्रोंके बीचके मतभेदोंको शांतिपूर्ण ढंगसे तय करनेका था।

मैं चाहती हूँ कि भारतके प्रत्येक नर-नारीके हृदयमें विश्वास करा दूँ कि उनके देशको अब अन्य देशवासी क्या समझते है। आज भारत केवल भारत हो नहीं है। वरन् वह संसारकी मानव-जातिका प्रतीक है। चर्चिल और उनके समान अन्य व्यक्ति हमे बताते रहे कि यह आवश्यक नहीं है कि दुनियाके सभी लोग स्वतन्त्र हों। इन लोगोंका कहना है कि जगतको यह जान लेना चाहिये कि कुछ थोड़े बलवान और शक्तिशाली व्यक्ति ही विश्वपर शासन कर सकते है।

कुछ लोग कहते है कि कोई न कोई शासक तो अवश्य ही होगा और यदि हम स्वयं शासित होना नहीं चाहते हैं तो हमें शासक होना चाहिये। लेकिन हम इस बातपर विश्वास नहीं करते। हम तो ऐसे संसारकी कल्पना कर रहे हैं जिसमे जनता स्वय अपना शासन चलाने के लिये स्वतन्त्र रहे। हमारे लिए उस काल्पनिक संसारका प्रतीक भारतवर्ष है। हम प्रतिदिन भारतीय समाचारोंके लिए समाचारपत्रोंको बड़ी उत्कण्ठासे आँखे फाड़-फाड़कर देखते हैं। श्री चर्चिलने जिस 'रक्त-स्नान' की धमकी दी थी, वस्तुतः क्या वह घटना सत्य होगी? क्या यह सत्य है कि लोग अपने मत-भेदोंको शान्तिसे न मिटा सकेंगे? क्या युद्ध सदा होते रहेंगे?

हम सभी लोगोंके लिए—जिनकी धारणा थी कि जनतापर विश्वास करना चाहिये—गांधीजी आशाके केन्द्र थे। यह बात नहीं है कि हम उस क्षीणकाय चश्मे-वाले गांधीको भावुकतामे आकर कोई देवता समझ बैठे थे, बल्कि हमारा यह विश्वास था और हम आशा करते थे कि गांधीजीने मानव-जीवनके मौलिक सत्यको प्राप्त कर

लिया था। उनकी मृत्यु पराजय है या विजय ? इसका उत्तर भविष्यमें भारतवासी विश्वको अपनी भावी गतिविधिसे देंगे।

उन लोगोंमे जो समझते थे कि गांधीजी सत्य पथपर थे, यदि उनकी मृत्युसे नयी जाग्रति, नयी चेतना और नया संकल्प उत्पन्न हो सके तो यह हमारे और भारतके लिए समान रूपसे लाभदायक सिद्ध होगा, क्योंकि हम मानवतामें विश्वास करते हैं। यदि उनकी मृत्युसे हम निराश और पराजित हो जायें तो निश्चय ही संसारकी मानवता पराजित हो जायगी।

अमेरिकामे गाधीजीकी मृत्युका समाचार धक्केकी तरह लगा और कुछ क्षणोंके लिए लोग स्तब्ध रह गये। लोग एक दूसरेकी ओर आश्चर्यसे देखने लगे। नेहरूजी अभी जीवित हैं। अब ऐसी दुर्घटना न घटेगी। केवल यही नहीं कि पश्चिमी जगत् भारतके किसी और व्यक्तिकी अपेक्षा नेहरूको अधिक जानता है बल्कि वह नेहरूकी बुद्धिमत्ता, योग्यता और धैर्यपर विश्वास भी करता है। भारतमें इतना वर्गभेद नहीं हो जायगा जिससे निराशा और पराजयके कारण लोग नेहरूको पदच्युत कर दे। यदि ऐसा हुआ तो भारतकी बड़ी हानि होगी और वह पश्चिम जगत्की दृष्टिमे नितान्त गिर जायगा।

बुद्धिमान भारतीय ऐसी गलती करनेके पूर्व अच्छी तरह सोचेंगे। मैं न केवल एक साधारण अमेरिकनकी दृष्टिसे यह कह रही हूँ बल्कि भारतके सम्बन्धमे जो कुछ भी जानती हूँ कि भारत अपने लिए क्या करना चाहता है तथा नेताके रूपमे संसारके लिए क्या कर सकता है। इस दृष्टिसे मेरे उक्त विचार हैं।

भारतका भाग्य अधरमें दोलायमान हो रहा है। भारतीय अपने वर्गभेदकी भावनाको मिटाकर अपने विशाल हृदय, सत्यनिष्ठ नेताओंके आदेशपर चलें और सकुचित विचारवाले उन्नतिमे बाधक नेताओंसे बचे, तभी उनका कल्याण होगा।

बुद्ध और गांधीके अंतिम संस्कार

भदन्त आनन्द कौसलायन

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित शब्दसागर ही शायद हिन्दीका सबसे बड़ा कोष है। उसमें ९३११५ शब्द होंगे। किन्तु इतने हजार शब्दोंमे क्या एक भी शब्द ऐसा है जो इस देशकी वेदनाको उस तीव्रताको व्यक्त कर सके जो इसे अपने राष्ट्र-पिता महात्मा गांधीको गवाकर हुई।

कहा जाता है कि नाथूराम गोडसे एक पत्रकार रहा। इससे हर पत्रकार लज्जित है। सुनते हैं वह ब्राह्मण भी है, जिससे हर ब्राह्मण जमीनमें गड़ा जा रहा है। वह हिन्दू है, यह हर हिन्दूके लिए डूब मरनेकी बात है। वह भारतीय है, भारतमाता उस कुलकलंकीको जन्म देनेके कारण अनुतप्त है। भारतीयता ही नहीं सारी मानवतापर लगे अभिशापका दूसरा नाम है नाथूराम गोडसे।

हमें लगता है जिस प्रकार इस देशमे कोई भी रावण कहलाना पसन्द नहीं करता, विभीषण कहलाना पसन्द नही करता, उसी प्रकार भविष्यमें कोई अपना नाम नाथूराम भी रखना पसन्द न करेगा।

किन्तु इस महान पातकका दूसरा पहलू भी है। इस पातकने महान बापूको और भी महान सिद्ध कर दिया। देशमे भभकती हुई साम्प्रदायिकताकी आगकी शांतिके लिये कदाचित् स्वयं राष्ट्रपिताकी बलि अपेक्षित थी। अब तो यह द्वेषाग्नि शांत हो।

बापूके बलिदानके बाद देशमे जो कुछ हुआ है वह सभी कुछ अभूतपूर्व है। बलिदान—दिवससे आजतक इस महान राष्ट्रने ही नहीं अन्य राष्ट्रोंने भी 'हाय बापू' कहकर जितने ठडे सास लिए उतने इससे पहले काहेको कभी किसी बड़ीसे बड़ी विभूतिकी यादमे भी लिए गये होंगे। यमुना तटपरका दाह-करण-संस्कार, गंगा, यमुना तथा सरस्वतीके संगममे बापूकी अस्थियोंका प्रवाह और देश भरकी सभी पवित्र नदि-

योंका बापूके भस्मका अधिकारी होना हमे भगवान बुद्धके अतिम संस्कारकी याद दिलाता है। पाली वाङ्मयमे वह इस प्रकार दर्ज है:—

१ अन्तिम वचन

'तब भगवानने आयुष्मान आनन्दसे कहा—'आनन्द! शायद तुमको ऐसा हो—(१) अतीत-शास्ता (=चले गये गुरु) का यह उपदेश है, अब हमारा शास्ता नहीं है। आनन्द इसे ऐसा मत समझना, मैंने जो धर्म और विनय विहित किये हैं मेरे बाद वही तुम्हारे शास्ता (=गुरु) हैं। (२) इच्छा होनेपर सब मेरे बाद छोटे मोटे भिक्षु नियमोंको छोड़ दे सकता है।'

तब भगवानने भिक्षुओंको आमंत्रित किया—'भिक्षुओ! यदि बुद्ध, धर्म, सघमे एक भिक्षुको भी कुछ शंका हो, तो पूछ लो। भिक्षुओ! पीछे अफसोस मत करना—'शास्ता हमारे सम्मुख थे किन्तु हम भगवानके सामने कुछ पूछ न सके।'

किसी एक भी भिक्षुको कोई शका न थी। तब भगवानने भिक्षुओंको आमंत्रित किया—हन्त! भिक्षुओ अब तुम्हें कहता हूँ। सभी संस्कार नाशवान है। अप्रमादके साथ (=आलस्यरहित होकर) जीवनके लक्ष्यको प्राप्त करो—यही तथागतके अंतिम वचन हैं।

२ निर्वाण

तब भगवान प्रथम ध्यानको प्राप्त हुए। प्रथम ध्यानसे उठकर द्वितीय ध्यानको प्राप्त हुए। चतुर्थ ध्यानसे उठनेके अनंतर भगवान परिनिर्वाणको प्राप्त हुए। भगवानके परिनिर्वाण होनेपर निर्वाण होनेके साथ भीषण, लोम-हर्षण भूचाल हुआ। देव दुदुभिया बजीं, उस समय ब्रह्माने कहा—

'ससारके सभी प्राणी जीवनसे गिरेंगे। जब कि लोकमे ऐसे बल प्राप्त अद्वितीय पुरुष, तथागत शास्ता, बुद्ध परिनिर्वाणको प्राप्त हुए।'

उस समय देवेन्द्र शकरने कहा—'अरे, संस्कार उत्पन्न और नष्ट होनेवाले है। भगवानके परिनिर्वाण हो जानेपर जो अवीतराग भिक्षु थे, उनमे कोई बाह पकडकर क्रन्दन करते थे, कटे वृक्ष के सदृश गिरते थे, धरतीपर लोटते थे—भगवान बहुत

जल्दी परिनिर्वृत्त हो गये। किन्तु जो वीतराग भिक्षु थे वह स्मृतसम्प्रजन्यके साथ स्वीकार करते थे—'संस्कार अनित्य हैं, (-वियोग न हो) यह कहां मिलेगा ?'

तब आयुष्मान अनुरुद्धने भिक्षुओसे कहा—

'नहीं आवुसो ! शोक मत करो, रोदन मत करो।

भगवानने तो आवुसो ! यह पहिले ही कह दिया है—

'सभी प्रियोंसे जुदाई होनी है।'

आयुष्मान अनुरुद्ध और आयुष्मान आनन्दने वह बाकी रात धर्म कथामें बिताई। तब आयुष्मान अनुरुद्धने आयुष्मान आनन्दसे कहा—

'जाओ, आयुस आनन्द ! कुसीनारामे जाकर, कुसीनाराके मल्लोंसे कहो—'वाशिष्टो ! भगवान परिनिवृत्त हो गये अब जो तुम्हें करना उचित लगे वह करो।'

'अच्छा भन्ते !' कह आयुष्मान आनन्द कुसीनारामें प्रविष्ट हुए। उस समय किसी कामसे कुसीनाराके मल्ल, सस्थागार (=प्रजातन्त्र सभाभवन) में जमा थे। आयुष्मान आनन्द वहीं जाकर बोले—

'वाशिष्टो ! भगवान परिनिवृत्त हो गये अब जो तुम्हें करना उचित लगे वह करो।'

आयुष्मान आनन्दसे यह सुना तो मल्ल, मल्ल पुत्र, बधुएं, मल्ल-भार्याएं दुखित हो क्रन्दन करने लगीं। कोई केशोंको बिखेरकर रोती थीं, बांह पकड़कर रोती थीं, कटे वृक्षकी भांति गिरती थीं, धरतीपर लुण्ठित होती थीं—बड़ी जल्दी भगवानका निर्वाण हुआ, बड़ी जल्दी सुगतका निर्वाण हुआ, बड़ी जल्दी लोक नेत्र अन्तर्धान हो गये।

तब कुसीनाराके मल्लोंने पुरुषोंको आज्ञा दी-'तो भणे ! कुसीनाराकी सभी प्रकारकी गन्ध मालाएं आर सभी वाद्योंको जमा करो।'

तब कुसीनाराके मल्ल गन्धमाला, सभी वाद्यों और पांच हजार थान-जोड़ोंको लेकर जहां उप-वत्तन था, जहां भगवानका शरीर था, वहां गये। जाकर उन्होंने भगवानके शरीरको नृत, गीत, वाद्य, माला गन्धसे सत्कार करते पूजते कपड़ेका मण्डप बनाते दिन बिता दिया। तब कुसीनाराके मल्लोंके मनमें आया—भगवानके शरीरके

दाह करनेको आज बहुत विकाल हो गया। अब कल भगवानके शरीरका दाह करेगे। इस प्रकार कुसीनाराके मल्ल सात दिनतक भगवानके शरीरकी सत्कार पूजा ही करते रहे। सात दिनके बाद कुसीनाराके मल्लोंने नगरसे उत्तर-उत्तरमे ले जाकर जहा मुकुट-बन्धन नामक मल्लोंका चैत्य था, वहां भगवानका शरीर रखा। तब कुसीनाराके मल्लोंने आयुष्मान आनन्दसे पूछा—

'भन्ते आनन्द! हम तथागतके शरीरको कैसे करे?'

'वाशिष्टो! जैसे चक्रवर्ती राजाके शरीरको करते हैं वैसे ही उनके शरीरको करना चाहिये।'

'कैसे भन्ते! चक्रवर्ती राजाके शरीरको करते हैं।'

'वाशिष्टो! चक्रवर्ती राजाके शरीरको नये वस्त्रसे लपेटते हैं, नये वस्त्रसे लपेटकर धुनी रुईसे लपेटकर नये वस्त्रसे लपेटते हैं। इस प्रकार लपेटकर तेलकी लोह द्रोणी (=दोन) मे रखकर दूसरी लोह द्रोणीसे ढांककर, सभी सुगन्धित लकड़ियोंकी चिता बनाकर राजा चक्रवर्तीके शरीर को जलाते हैं, जलाकर वडे चौरस्तेपर राजा चक्रवर्तीका स्तूप बनाते हैं। हमें भी तथागतका स्तूप बनवाना चाहिये। वहां जो माला, गन्ध या चूर्ण चढ़ायेंगे, या अभिनन्द करेंगे, या चित्तको प्रसन्न करेंगे, उनके लिए वह चिरकाल हित सुखके लिए होगा।'

तब कुसीनाराके मल्लोंने भगवानके शरीरको कोरे वस्त्रसे लपेटा। कोरे वस्त्रसे लपेटकर धुनी रुईसे लपेटा, धुनी रुईसे लपेटकर कोरे वस्त्रसे लपेटा फिर तावे (=लोहे) की तेलवाली कढ़ाईमे रख (=चन्दन आदि) सुगन्धित काष्ठोंकी चिता बना-कर भगवानके शरीरको चितापर रक्खा।

× × ×

तब आयुष्मान महाकाश्यपने जहा मल्लोंका मुकुटबन्धन नामक चैत्य था, जहां भगवनाकी चिता थी, वहां पहुंचकर चीवरको एक कन्धेपर कर अजलि जोड़ तीन वार चिताकी परिक्रमा कर सिरसे वन्दना की। पाच सौ भिक्षुओंने भी एक कन्धेपर चीवर कर हाथ जोड़ तीन वार चिताकी प्रदक्षिणा कर भगवानके चरणोंमे सिरसे वन्दना की।

३. दाहक्रिया

आयुष्मान महाकाश्यप और उन पांच सौ भिक्षुओंके वन्दना कर लेते ही भगवानकी चित्ता स्वयं जल उठी। भगवानके शरीरकी जो झिल्ली या चर्म मांस, नस या चर्बी थी, उनकी न राख जान पड़ी, न कोयला, सिर्फ अस्थियां ही बाकी रह गयीं, जैसे कि जलते हुए घी या तेलकी न राख (=छरिका जान पड़ती है न कोयला (=मसी)।) भगवानके शरीरके दग्ध हो जानेपर मेघने प्रादुर्भूत हो आकाशसे भगवानकी चिताको ठण्डा किया। कुसीनाराके मल्लोंने भी सर्वगन्धमिश्रित जलसे भगवानकी चिताको ठण्डा किया।

तब कुसीनाराके मल्लोंने भगवान्‌की अस्थियोंको सप्ताह भर संस्थागारमें रख उनकी पूजा की।

४. स्तूपनिर्माण

राजा मागध अजातशत्रु वैदेही पुत्रने सुना 'भगवान कुसीनारामें परिनिर्वाणको प्राप्त हुए।' राजा मागध अजातशत्रु वैदेही पुत्रने कुसीनाराके मल्लोंके पास दूत भेजा—'भगवान भी क्षत्रिय थे, मैं भी क्षत्रिय हूँ, भगवानकी अस्थियोंमें मेरा भी उचित हिस्सा है। मै भी भगवानकी अस्थियोंपर 'स्तूप बनाऊंगा और पूजा करूंगा।'

वैशालीके लिच्छवियोंने सुना०।

कपिलवस्तुके शाक्योंने सुना०।

अल्लकप्पके बुलियोंने सुना०।

रामग्रामके कोलियोंने सुना०।

वेठ दीपके ब्राह्मणोंने सुना०।

पावाके मल्लोंने भी सुना०।

ऐसा कहनेपर कुसीनाराके मल्लोंने उन संघों और गणोंसे कहा—'भगवान हमारे ग्राम क्षेत्रमे परिनिवृत्त हुए, हम भगवानकी अस्थियोंका भाग नहीं देंगे।'

उनके ऐसा कहनेपर द्रोण ब्राह्मणने उन संघों और गणोंसे कहा—

'आप सब मेरी एक बात सुने। हमारे बुद्ध क्षमावादी थे। यह ठीक नहीं

कि उन उत्तम पुरुष की अस्थियां बांटनेमे मारपीट हो, आप सभी एक मत होकर आठ भाग करें, दिशाओंमे स्तूपोंका विस्तार हो। बहुतसे लोग बुद्धमें प्रसन्न हों।'

'तो ब्राह्मण तू ही भगवानकी अस्थियोंको आठ समान भागोंमे सुविभक्त कर।'

'अच्छा भी ?' कह ब्राह्मणने भगवानकी अस्थियोंको आठ भागोंमे बाटकर उन संघोंसे निवेदन किया—'आप सब ये कुंभ (घड़ा) मुझे दे, मैं कुभका स्तूप बनाऊंगा और पूजा करूंगा।'

उन्होंने द्रोण ब्राह्मणको कुंभ दे दिया।

पिप्पलिवनके मौर्योंने सुना।

'भगवानकी अस्थियोंका भाग नहीं है। भगवानकी अस्थियां बॅट चुकीं। यहांसे कोयला ले जाओ।'

वे वहांसे कोयला ले गये।

राजा अजातशत्रुने राजगृहमे भगवानकी अस्थियोंका स्तूप बनाया और पूजा की।

वैशालीके लिच्छवियोंने भी०।

कपिलवस्तुके शाक्योंने भी०।

अल्लकप्पके बुलियोंने भी०।

रामग्रामके कोलियोंने भी०

वेठ दीपके ब्राह्मणोंने भी०।

पावाके मल्लोंने भी०।

कुसीनाराके मल्लोंने भी०।

द्रोण ब्राह्मणने भी कुंभका०।

पिप्पलिवनके मौर्योंने भी कोयलेका०।

इस प्रकार चक्षुष्मान (=बुद्ध) का शरीर सुसत्कृत हुआ। देवेन्द्रों, नगेन्द्रों, नरेन्द्रोंसे पूजित तथा श्रेष्ठ मनुष्योंसे पूजित हुआ, उसे हाथ जोड़कर वन्दना करो, सौ कल्पमें भी बुद्ध होना दुर्लभ है।

काश! बापूकी राखपर भी देशके कोने-कोनेमे स्तूप बनवा दिये जा सकते।

गांधी-वाणी

मेरा जीवन खुली पुस्तक है, उसमें कोई भेद नहीं और मैं रहस्यको प्रोत्साहन भी नही देता।

आत्मानुभूति, आत्म-निरीक्षण और आत्मशुद्धिसे ही हमें प्रतिभा मिलेगी, प्रेरणा मिलेगी, हमारी प्रतिष्ठा भी उसीसे बढ़ेगी और हम प्रगति कर सकेंगे।

प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष हिंसा क्षम्य नहीं।

जो मनुष्य अपने मन के विकारों के अलावा दूसरी आपत्तियों का भय रखता है, वह अहिंसा का पालन नहीं कर सकता। इस कारण अभय दैवी सम्पत्तियों में ऐसा गुण है जिसे पहले प्राप्त करना चाहिये।

सारे संसार को भी प्रसन्न करनेके लिए मै ईश्वरके साथ विश्वासघात न करूँगा। मैं तो काम करना पसन्द करता हूँ और आशावादी हूँ।..मेरी आँखे बन्द हो जाने पर ही मेरे कार्य पर मत-प्रकाशन हो सकेगा। सत्यके अलावा मेरा कोई ईश्वर नहीं है।

सच्ची सुन्दरता तो हृदय की पवित्रतामें है और इसलिए मैं ऐसी कला और ऐसा साहित्य चाहता हूँ जो करोड़ोंसे और करोड़ों की ओरसे बोल सके।

मैं चाहता हूँ कि भारत यह अनुभव करे कि उसकी आत्मा अमर है, शारीरिक कमजोरियोंसे ऊँचे उठकर वह समस्त विश्वको अपनी आत्मिक प्रतिभा और अहिंसासे प्रभावित करदे।

मैं तो आत्माकी अमरता पर विश्वास करता हूँ। जीवनके सागरमें हम सब बिन्दु मात्र है और जीवनकी वास्तविकता ही सत्य है — आत्मा है — परमात्मा है।

अमर आत्मा, विश्व-विभूति और राष्ट्रके पिता की यह सन्त वाणी हमें उनकी आत्मा की अमरता का विश्वास दिलाये, जिनकी नश्वर देह अब तो भस्म होकर भारत माता की धूलि में मिल गयी।

ज्योति-पुञ्ज

अरे राम ! कैसे हम झेलें, अपनी लज्जा, उनका शोक,
गये हमारे ही पापों से अपने राष्ट्र-पिता परलोक ।

—राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

गांधीमय जगत्

जहाँ जहाँ मैं हिंदुस्तानके बाहर गया, चाहे यूरोपका कोई देश हो या चीन या कोई और देश, पहला प्रश्न मुझसे यही हुआ—"गांधी कैसे है ? अब क्या करते हैं ?" हर जगह गांधीजीका नाम पहुँचा था, गांधीजीकी प्रसिद्धि पहुँची थी। दुसरोंके लिए गांधी हिन्दुस्तान था और हिन्दुस्तान गांधी !

—जवाहरलाल नेहरू

मानवता का पुजारी

टाल्सटायके बाद ही इतनी जल्दी जिस जमाने ने एक दूसरा महान् 'मानवता का पुजारी' पैदा किया है उसमें रहना कितना अच्छा है। अहा ! ये साधु-सन्त ये पैगम्बर और भक्तगण किस प्रकार वातावरणको स्वच्छ निर्मल बनाते हैं और आसपास फैले हुए 'सघन तिमिर' में प्रकाश चमकाते हैं।

ओलिव श्रीनरने अपने एक गद्यकाव्यमें 'सत्यरूपी पक्षी' की खोजमे प्रयत्नशील साधकका एक चित्र खींचा है। उसे उस पक्षीकी झलक एक बार दिखाई दी। उसकी तलाशमे वह पर्वत शिखर पहुँचता है, जहाँ जाकर उसका शरीर छूट जाता है। उसके हाथमे उस पक्षीका गिरा हुआ एक पख है, जिसे छातीपर चिपकाए हुए वह साया है। गाँधीजी अपने जीवनकालमे जो संदेश हमारे लिए छोड़ रहे हैं, वह हमारे लिए ऐसा ही एक पखा सिद्ध हो, और हम सचमुच बड़भागी होंगे अगर अपनी मृत्युके समय उसे अपनी छातोसे लगाए और अपनाए रहेगे !

—हेनरी एस० एल० पोलक

हिंद रो उठा

श्री अरविन्द

जो प्रकाश स्वतंत्रता प्राप्तिमें हम लोगोंका नेतृत्व करता रहा वह ऐक्य प्राप्ति नहीं करा सका, परंतु वह प्रकाश बुझा नहीं है। वह अभी प्रज्वलित है और जबतक विजयी न हो जायगा, जलता ही रहेगा। मेरा विश्वास है कि इस देशका भविष्य अत्यन्त महान् है तथा यहाँ ऐक्य अवश्य स्थापित होगा। जिस शक्तिने इस संघर्ष कालमे भी हम लोगोंका नेतृत्व करके लोगोंको स्वतंत्रता प्राप्त करायी, वही शक्ति हमे उस लक्ष्यतक भी ले जायगी जिसके लिए महात्माजी अत तक सचेष्ट रहे और जिसके कारण उन्हें दुर्घटनाका शिकार होना पड़ा। जिस प्रकार हमने स्वतत्रता प्राप्त की, उसी प्रकार हमे ऐक्य प्राप्तिमे भी सफलता मिलेगी। भारत स्वतत्र और संघटित रहेगा। देशमे पूर्ण ऐक्य होगा तथा राष्ट्र अत्यन्त शक्तिशाली होगा।

लार्ड माउण्ट बैटन, गवरनर जनरल

हिंद मे सदियों गाधीजीके समान कोई महापुरुष पुनः जन्म ले नहीं सकता। हमलोगाको केवल एक यही सतोप है कि उनके सत्य, प्रेम और सहिष्णुताका सिद्धात-सकटापन्न विश्वके उद्धार मे सहायक होगा।

पं० जवाहरलाल नेहरू, प्रधान मंत्री

हम तो केवल इतना जानते हैं कि एक विभूति (गाधीजी) थी, जो अब नहीं है। हम यही जानते है कि इस समय चारों ओर अधकार है किंतु यह अधकार पूर्ण घटाटोप नहीं है, क्योंकि जब हम अपने दिलोंको टटोलते है तो उनमे हमे एक ज्योति दिखाई देती है, जिसे उन्होंने जगाया था। यदि यह ज्योति जलती रही तो हमारे देशमे अंधकार नहीं होगा और हम सयत्न उनके मार्गका अनुसरण करते हुए तथा उन्हे स्मरण करते हुए इस देशको फिरसे देदीप्यमान कर देंगे। यद्यपि हम साधारण मनुष्य है किन्तु फिर भी हममे वह अनुरक्ति है जो उन्होंने हममे भरी थी।

अतीत भारतके वे सबसे बड़े प्रतीक थे—मैं कहना चाहूँगा कि भावी-भारतके भी वे उतने ही बड़े प्रतीक रहेंगे !

गोविन्दवल्लभ पन्त (युक्तप्रांत मंत्री)

'महात्मा गांधी इस युगके मसीहा थे। गांधीजीने भारतमें नवीन जान डाली और ससारमें पुनः एक बार भारतको सम्भावित स्थान दिलाया। गांधीजीने देश-वासियोंको केवल स्वतन्त्रता ही नहीं दिलायी, बल्कि भारतवासियोंको सभ्यता और संस्कृतिके आधार भूत सिद्धान्तोंकी आर हमारा ध्यान आकर्षित किया। जनताको यह अनुभव करना चाहिये कि साम्प्रदायिकतासे भयकर परिणाम निकलता है। मुझे आशा है कि जनता गाधीजीके सिद्धान्तोंको नहीं भूलेगी।

आचार्य नरेंद्रदेव

जिस समय हमारे चारो ओर गहन अंधकार छाया हुआ था गाधीजीने हमें अमर प्रकाश प्रदान् किया। जब हम अपनी परम्परासे गिरकर अधोगतिको प्राप्त हो चुके थे तो उन्होंने हमें अपनी नवीन आध्यात्मिक और सामाजिक मान्यताओं और आदर्शो से आलोकित किया। गांधीजी आज हमारे बीच नहीं हैं हमारा राष्ट्रीय प्रकाशस्तम्भ बुझ गया है। किन्तु यह समय रोनेका नहीं है। उनके आदर्श सदैव हमारा माग प्रदर्शित करते रहेंगे। जिसके हृदयमे उनके लिए श्रद्धा है उनके लिए आज भी वे जीवित है।

हमारे सामने आज दो रास्ते खुले हैं एक विनाशका तथा दूसरा गांधीजी द्वारा दिखलाया गया कल्याणका प्रशस्त पथ, यदि हम गांधीजीकी हत्याका कलक धोना चाहते है और ससारमे शानके साथ अपना अस्तित्व कायम रखना चाहते हैं तो हमे उन्हींके आदर्शोंपर चलना होगा। आज भले ही क्षणिक शोक हम उनकी मृत्युपर मनालें किन्तु आगे गाधोजीकी मरण तिथि प्रेरणा प्रदान करनेवाला पुनीत पर्व होगा।

श्री पुरुषोतमदास टण्डन

स्वतन्त्र-भारतकी महत्ता और महात्मा गांधीका व्यक्तित्व दोनों अभिन्न है। संसारके किसी कोनेमे जब भारतकी महत्ताका नाम लिया जायगा गांधीजीका नाम

भी साथ रहेगा। जिस हिन्दूने भ्रान्त हिन्दुत्वके पागलपनमें उनकी हत्याकी है उसने सबसे अधिक हानि हिंदुओंको ही पहुँचायी है।

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

उनकी मृत्यु देश पर सबसे भारी आघात है। जिस व्यक्तिने भारतको स्वतन्त्र करके अपने पावों पर खड़ा किया, जो सबका मित्र था और किसीका भी शत्रु नहीं था, जिसे करोड़ों व्यक्ति प्रेम और आदर करते थे, उनका अपनीही जाति और अपने ही धर्मके एक कातिलके हाथों मारा जाना अत्यधिक लज्जा और दुखकी बात है। गांधीजी ऐसे व्यक्ति है जिनका प्रभाव कभी नहीं मिटता बल्कि समय गुजरनेके साथ निरंतर बढ़ता जाता है। हत्यारेकी गोलीने महात्मा गांधीके नश्वर देहको ही नहीं बल्कि हिंदू धर्म और भारतके हृदयोंको भी बींध डाला है जो कि केवल तभी जीवित रह सकते हैं जब कि लोग दृढ़ निश्चयके साथ ऐसे तरीकोंका अपनाया जाना असम्भव बना दे।

सर्वपल्ली राधाकृष्णन

गांधीजीकी हत्याके समाचारसे हम स्तब्ध हो गये हैं। अविश्वसनीय एवं अविचारणीय घटना घटित हो गयी है। हमारे युगके सर्वविशुद्ध, सर्वोन्नतकारी तथा सर्वोत्साहवर्धक रत्नका इस प्रकार एक विक्षिप्त व्यक्तिके क्रोधका शिकार होना भी विधिकी विडम्बना ही है। गांधीजी आज नहीं हैं पर सत्य एवं प्रेमकी दैवी ज्योतिसे निस्सरित होनेवाला उनका प्रकाश कभी भी बुझ नहीं सकता है। हिंसा, क्रूरता तथा अशान्तिके गर्तमें गिरनेसे बचानेका एक ही मार्ग—महात्मा गांधीके सिद्धान्तका अनुसरण करना है।

श्रीमती नायडू (युक्तप्रांत गवरनर)

गांधीजीकी अन्तिम क्रिया दिल्लीमें हुई ठीक ही हुआ। दिल्ली राजाओंका समाधिस्थल है और गांधीजी राजाओंमें भी राजा थे। वह सभी योद्धाओंमें अन्यतम थे। वह बड़े क्रान्तिकारी थे जिसने अपने देशको गुलामीसे मुक्त किया और उसे स्वतन्त्रता प्रदान की।

पाकिस्तान भी कराह उठा

लियाकत अली खाँ

साम्प्रदायिक एकताके लिए गांधीजी ने जो प्रयत्न किये थे उनकी प्रत्येक शान्तिप्रिय सराहना करेगा ।

मियाँ इफ्तखारुद्दीन

महात्माजी को समाप्त करनेवाली पाशविक शक्तिका बोलबाला रहेगा या उनकी आत्मा और जीवोंसे पशुवृत्तिका अन्त करेगी, यह अभी देखना है । यह बात हमारे प्रयत्नोंपर निर्भर करती है ।

सर जफरुल्ला

इस दुखान्त मृत्युसे भारत तथा पाकिस्तान दोनोंकी महान क्षति हुई है— सचमुच सारे ससारकी शान्ति स्थापनाके कार्यमें यह ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती । महात्मा गांधी करोड़ोंके प्रिय पात्र थे । जो उनका नाम सुनते थे उनके श्रद्धालु वन जाते थे । उनको महत्ताओंमेसे एक यह बात थी कि वह दूसरोंके हृदयको जीत लेते थे । यह प्रश्नसे बाहर था कि कोई उन्हें हानि पहुंचा सकता है । दुर्भाग्य तो यह है कि वह एक हत्यारेके हाथों मारे गये हैं । यह कहना तो मुश्किल है कि इस विपत्तिका क्या सकेत है, तथापि यह आशा और प्राथना तो की ही जाय कि इस वलिदान द्वारा महात्मा गांधीके उस कार्यमे प्रगति मिले जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन उत्सर्ग किया ।

श्री एच० एस० सुहरावर्दी

मुझे मालूम पड़ता है कि संसारका आधार ही टूट गया। अब कौन है जो पीड़ितोंकी आहोंको कम करेगा उनके आँसुओंको पोंछेगा? और कठिनाइयोंमे लोग किसकी ओर मार्गप्रदर्शन ओर सलाहके लिए देखेगे? निर्बल भारत रोओ, तबतक रोओ जबतक तुम्हारा हृदय टूक टूक न हो जाय क्योंकि वह प्रकाश बुझ गया जिससे सत्य और न्याय मानवताके प्रति प्रेम और असहायोंके प्रति सच्ची सहानुभूतिकी आशा निकली थी। हम उनकी शिक्षाओंको हृदयङ्गम करे और नैराश्यके बीच होते हुए भी शान्ति और प्रेमके उन उपदेशोंको कार्यान्वित करें जिनके लिए वे मरे। मुझे विश्वास है कि वे हमारे कार्योंको देख रहे हैं। हमे उनके इच्छित स्वप्नको पूर्ण करनेका प्रयत्न करना चाहिये।

सर सुलतान अहमद

गत १८ जनवरीको जब मैं महात्मा गांधीसे मिला तो मैंने उनसे कहा कि कृपया विहारकी ओर ध्यान दीजिये, वह भी आपका अपना ही प्रांत है। इसपर महात्माजीने मुस्कराकर कहा—'अच्छा तो आप मेरे प्रान्तमे जा रहे है, कृपया मेरी अपनी जनताके लिए यह सन्देश ले जाइये। विहारके लोगोंसे कह दीजियेगा कि 'मै उन्हे नहीं भूला हूँ, और वे भी मुझे न भूलें। उन्होंने मुझसे अल्पसख्यक सम्प्रदायोंकी रक्षा करनेके लिए प्रतिज्ञा की है। मै फिर विहार आऊँगा, पर नहीं जानता कि कब आऊँगा' मुझे आश्चर्य मालूम होता है कि क्या महात्माजीने उस समय यह महसूस किया था कि विहारके लिए यही उनका अन्तिम सन्देश है। साम्प्रदायिक प्रेम और सद्भावनाकी जो रोशनी उन्होंने जलाई वह अब हमारे हाथोंमे आयी है, और यदि हम ईमानदारी और दृढताके साथ यह रोशनी नगर-नगर और गॉव-गॉवमे जलाये तो इससे महात्माजीकी आत्माको शांति मिलेगी।'

सर मोहम्मद सादुल्ला

गांधीजीके सत्याग्रहका-सा दृश्य हमे तेरह सौ वर्ष पूर्व जब मुहम्मद पैगम्बरने मक्काको सड़कोंपर नये इस्लाम धर्मका प्रचार किया, मिलता है। पैगम्बर साहबके इतिहासको जाननेवाले लोग इस तथ्यसे परिचित हैं। महात्मा गांधी अपनी

प्रार्थनाओंमें कुरानका भी जो पाठ कराते थे उससे उनका विशाल दृष्टिकोण, भारतके विभिन्न धर्मी लोगोंकी एकताका उनका सच्चा प्रयत्न प्रकट होता है। हमारा कर्तव्य है कि हम उनके बताये रास्तेपर चलें।

बेगम सोघरा जिमॉयू मिर्जा हैदराबाद

गांधीजी आधुनिक युगके भारतके ऋषि थे। उनकी मृत्युकी घटनासे देशके प्रत्येक जातिके व्यक्तिको बहुत दुःख हुआ है। वे शहीदोंकी मोत मरे। उनके प्रेमियों तथा भक्तोंको हिन्दू-मुस्लिम एकताके आदर्शका पालन करना चाहिये जिसके लिए उन्होंने बलिदान किया।

सम्पूर्ण जगत की श्रद्धांजलि

लेक सक्सेस (३१ जनवरी)

यह सबसे पहला मौका था जब राष्ट्र संघ (united Nations) की पताका एक ऐसे व्यक्तिके लिए झुकायी गई जो न किसी राष्ट्रका अधिनायक था और न राष्ट्र सघका ही सदस्य था।

राष्ट्रसंघके निर्णयानुसार लगातार तीन दिनों तक उसकी पताका झुका कर रक्खी गयी।

राष्ट्रसघकी सुरक्षा समितिके अध्यक्ष ने कहा कि "हम जानते है इस दुर्घटना (महात्मा गाधीका निधन) के क्या माने है और विशेष कर भारतकी जनताके लिए सुरक्षा समिति की तरफसे मैं भारतके प्रतिनिधि, उनकी सरकार और उनके पूरे राष्ट्रके प्रति अगाध सहानूभूति और शोक प्रकट करता हू।

गाधीजो ने दुनियाको एक बहुत बडा सबक दिया है।

कम लोग होंगे जिन्होने अपने उच्च विचारोंके प्रति ऐसी निष्ठा रखी हो। इन विचारोंकी जयके हित उन्होंने अनेक बार अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी थी।

जिस अहिंसा सिद्धातसे हमारा सघ प्रेरणा लेता है उसके गाधी प्रतीक थे। वे एकता, सहिष्णुता और बन्धुत्वके भी प्रतीक थे। इन्ही कारणोंसे हमारे वाद-विवाद मे उनका अनेक बार नाम लिया गया। हमारे वे एक महान मित्र थे।

गाधीकी मृत्युसे उनके महान कार्य खतम नही हो सकते ! वे ससारसे चले गये है, तथापि वे उसी प्रकार आदर्शके प्रतीक रहेंगे जैसे अपने जीवन काल मे थे ! उनके मुल्कके लोग तथा विदेशोंके वे सब निवासी जिन्होंने श्रद्धाके साथ उनकी स्मृति मनायो है, उनके अहिंसा और ऐक्यके सिद्धातोंके प्रति, जिनके लिए वे जीये और मरे, सच्चे बने रहेंगे।

अभूतपूर्व नेता

अलबर्ट आन्स्टीन

बुद्धि, विनम्रताका प्रतीक, मानवताका महान रक्षक, अपने देशका अकेला रहनुमा महात्मा गान्धीने अपने कार्योंसे सारे संसारको आश्चर्यमें डाल दिया है। उन्होंने सदैव हिंसाका विरोध किया और अहिंसाके बलपर अपने अभूतपूर्व संघर्षमे सफलता प्राप्त की। गांधीजीने अपने देशवासियोंकी उन्नतिमे सारा जीवन खपा दिया। यूरोपकी पाशविकतासे ऊपर उठकर शानदार विनम्र इन्सानकी भांति कार्य करके गांधीजी यूरोपके सब नेताओंसे आगे बढ़ गये।

प्रधान मन्त्री, एटली (ब्रिटेन)

गांधीजी विश्वकी विभूतियोंमेसे थे। वे युग-पुरुष थे। करोड़ों देशवासी उन्हें देवता मानते थे। हत्यारेके हाथोंने विश्वसे उस वाणीका अन्त कर दिया जो शान्ति तथा भ्रातृत्वको प्रेरणा दिया करती थी। इस अद्वितीय पुरुषके निधन पर भारत ही नहीं समस्त विश्व दुखी होगा। मानवताके महान सेवकके प्रति हम श्रद्धाञ्जलि देते हैं।

आयरके प्रधान मंत्री श्री डिवेलरा

मुझे गांधीजीकी दुखद मृत्युके समाचारसे वडा शोक हुआ। मैं भारत सरकार तथा जनतासे हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूं। यह क्षति केवल भारतकी ही नहीं है, संसारने महान् नेता खो दिया। तथापि इस अपार क्षतिके वावजूद आशा है कि भारत गांधीजीके आदर्शोंपर अग्रसर होनेसे नहीं रुकेगा।

हमारी जनता भारतीयोंके इस दुर्भाग्यमे समवेदना प्रकट करतो है।

आस्ट्रेलियाके प्रधान मन्त्री

गांधीजीके निधनका समाचार सुनकर आस्ट्रेलियाकी सरकार तथा जनताको अत्यन्त दुःख हुआ। आस्ट्रेलिया सदैव उन्हें एक ऐसे पुरुषके रूपमे स्मरण करेगा जिन्होंने शान्ति तथा मानव हितके लिए आजीवन कार्य किया।

दक्षिण अफ्रीकाके मन्त्री मार्शल स्मट्स

मै और गांधीजी ४० वर्षोंतक मित्र रहे हैं। वह सदैव युक्तिसगत और खुले तौरपर बातचीत करनेको तैयार रहते थे तथा शान्तिमय हलके लिए तैयार रहते थे। गाधीजी अपने पीछे अपनी ऐसी प्रतिष्ठा छोड़ गये है जो संसारके इतिहासमे अनुपम है। वे संसारके बेजोड नेता थे।

राष्ट्रपति ट्रूमन (अमेरिका)

महात्माजी अन्तर्राष्ट्रीय नेता थे। उनका जीवन तथा उनकी कृति उनका सबसे महान् स्मारक है। उनके कार्योंकी अमिट छाप करोडोंपर पड़ेगी। मुझे विश्वास है कि मानवताके उद्धारके लिए जो कार्य गाधीजी करते रहे उन्हे भारतीय नेता अब भी अपना आदर्श रखेगे। न केवल भारतीय वरच उन सभीको, जो उनसे प्रभावित हों, चाहिये कि उनका पदानुसरण करें।

आयरके प्रेसीडेंट सीन ओकैली

महात्मा गांधीकी मृत्युसे भारत सरकार और जनतापर जो विपत्ति आयी है, उसमे मेरी हार्दिक समवेदना उनतक पहुचा दीजिये। आयरके लोग सब देशोंके स्वाधीनता-प्रेमियोंके साथ उस महात्माकी क्षतिपर शोक प्रकट करते है। प्रभुसे प्रार्थना है कि वह भारत और ससारको उदारता, भ्रातृत्व और शान्तिकी वह भावना दे जिसके लिए गांधीजीने आजीवन उद्योग किया।

लियो ब्लूम (फ्रांस समाजवादी)

पृथ्वी रो रही है। मैंने गांधीको कभी देखा नहीं। उनकी भाषा भी मैं नहीं जानता। उनके देशमे मैने पाँवतक नहीं रखा है। फिर भी मेरा हृदय दुखित है जैसे कि मेरा कोई अपना सगा सम्बन्धी मर गया हो।

सेनापति जेनरल डगलस मैक आर्थर

आधुनिक संसारके इतिहासमे इस पूजनीय व्यक्तिकी मूर्खतापूर्ण हत्यासे अधिक विद्रोहात्मक कोई घटना नही हुई है। देशकालकी परिस्थितिवश उनका ससारमे आगमन हुआ था। उनके सिद्धान्तोंको, जिन्हे उन्होंने अनेक बार दुहराया है, देव मुखसे ही निकला मानना चाहिये। वे शान्तिके देवदूत थे। हिसात्मक ढगसे उनका मरण होना एक ऐसा विषय है जिसके सामने कोई टिक ही नहीं सकता। सभ्यताके विकासमे, यदि सभ्यताको टिकना है तो सबोंको अन्तमे उनके इस विश्वासको मानना ही होगा कि किसी विवादास्पद विषयको अपने विचारानुकूल प्राप्त करनेके लिए सामूहिक हिसाका प्रयोग करना केवल गलत ही नही है बल्कि उसमे आत्मविनाशका बीज भी निहित है गांधीजी उन पैगम्बरोंमें हैं जो समयसे बहुत ही आगे हैं।
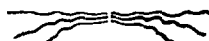
कौन नहीं रोया ?

गाधीजीकी हत्याके दुःखद समाचारसे सारा जगत ही रो उठा था ! निःसन्देह गाधी जगत व्याप्त थे ! वे केवल भारतके नहीं विश्व भरके अपने थे, और विश्व उनके लिए अपना था । यही कारण है कि उनके निधन पर ससारके विभिन्न देशोंसे हिंद सरकार, प्रधान मत्री तथा श्रीदेवदास गाधीके पास श्रद्धाजलियाँ भेजी गयीं ।

इन श्रद्धांजलियोंकी सूची इस प्रकार है:—अबीसोनिया (सम्राट् हेलसिलासी), अफगानिस्तान (प्रधान मन्त्री शाह महमूद), । अर्जेन्टाइना (डा० जोसे आके), आस्ट्रेलिया (प्रधान मन्त्री श्री चीफले, डा० हरबर्ट इवाट), बगदाद (ब्रिटिश राजदूत, परराष्ट्र मन्त्री हामदी पचायी), ब्राजील (परराष्ट्र मत्री और डा० अराहा), बर्मा (प्रधान मत्री थाकिन नू , बर्मी यूनियनके प्रेसीडेंट), काहिरा (नहस के मौस्तफा, वफ्द के अध्यक्ष), कनाडा (प्रधान मंत्री श्री मेकजी किग), लंका (गवर्नर जनरल सर हेनरी मांक मेसनमूर, प्रधान मत्री सेनानायक) चिली, (प्रेसिडेंट काब्रियल); चीन (मार्शल चांग काई शेक और मैडम चाग काई शेक, प्रधान मंत्री चांग चुन) । कोलबिया (प्रेसीडेट मरानोस्पिना बवर), चेकोस्लोवाकिया (स्थानापन्न प्रसीडेट डा० वेनस), क्युबा (प्रेसीडेट), डेन्मार्क (प्रधान मंत्री), मिस्र (शाह फारक, प्रधान मत्री नोक्राशी पाशा, अरब लीगके सेक्रेटी जनरल अज्जाम पाशा), फिनलैंड (प्रधान मत्री), फ्रास (प्रधान मत्री शुमन, परराष्ट्र मत्री विदो, लियोन (ब्लूम), जर्मन (अमरीकी फौजी गवर्नर जनरल क्ले डा० कट्ट शुमर), यूनान (नायब प्रधान मंत्री साल दारिस), हवाई (क्योना और हवाईके राजकुमार), हिंदेशिया प्रसीडेंट डा० सोकार्नो, गवर्नर जनरल वानचुक), ईरान (प्रधान मंत्री श्री हाकिमी), ईराक (राजेट अमीर अब्दुल इल्ला, और परराष्ट्र मत्री), आयरलैंड (प्रेसीडेट और प्रधान मत्री डी वेलरा), इटली (पोप, परराष्ट्र मंत्री काउन्ट स्फोर्जा), जापान (सम्राट हिरो हिता, प्रधान मंत्री और जनरल मैकार्थर), लबना (प्रेसीडेट), लक्जेमबर्ग (परराष्ट्र मंत्री), मोरक्को (सेक्रेटरी जनरल अहमद बलारेज), नेपाल

(नेपाल नरेश) , नेदरलैंडस (प्रधान मंत्री डा० बील) , न्यूजीलैंड (प्रधान मंत्री श्री पीटर फ्रेजर) , नार्वे (प्रेसीडेंट तथा परराष्ट्र मंत्री) , फिलस्तीन (यहूदी जनरल कौंसिलके प्रेसीडेंट) ; फिलिपाइन (प्रेसीडेंट) , पौलैंड (परराष्ट्र मन्त्री) , पुर्तगाल (प्रेसीडेंट और प्रधान मंत्री), सैन मैरिनो (परराष्ट्र मन्त्री) , साइचिलेस (गवर्नर), सोमालीलैंड (ब्रिटिश सुल्तान अचिदल्लाही डेरिन उहर्जेइका) दक्षिण अफरीका (जनरल स्मट्स) , दक्षिणी रोडेशिया (प्रधान मन्त्री) , सूदान (गवर्नर जनरल), स्विटजरलैंड (प्रेसीडेंट और अन्तरराष्ट्रीय मजदूर संघके डाइरेक्टर जनरल), स्वीडन (प्रधान मन्त्री) , शाम (कौंसिके प्रेसीडेंट और परराष्ट्र मन्त्री) , तिब्बत (दलाई लामा और रीजेंट , तुर्की कौंसिल और असेम्बलीके प्रेसीडेंट) , यूगान्डा (गवर्नर) , ब्रिटेन (सम्राट, प्रधान मन्त्री, एटली, नायब प्रधान मंत्री मारिसन श्री बेविन, केन्टरबरीके बिशप, श्री चर्चिल) ; अमरीका (प्रेसीडेंट ट्रूमन, सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस श्री फ्रेलिक्स फ्रैंक फर्टर, सिनेटर वाडेनबर्ग) संयुक्तराष्ट्र (सुरक्षा समितिके अध्यक्ष श्रीलैगन होव, स्थानापन्न सेक्रेटरी जनरल वायन ग्राइसजूलियन हक्सले) , जंजीबार (ब्रिटिश रेजीडेंट) ।

विश्व भरके पत्रोंकी श्रद्धांजलियाँ

नव-जीवन

हे बापू तुम्हें अपने कोटि-कोटि जनोंके प्रेमकी, ममताकी श्रद्धांजलि स्वीकार हो।

हे महात्मा, तुमने अपनी साधना और तपस्याके बलसे जिस गुलाम देशको अनायास ही स्वतंत्र कर दिया, जिस कायर, निर्बल और संत्रस्त राष्ट्रको उन्नत बनाया, जिस छूआछूत और पाशविकताके बंधनोंसे जकड़ी हुई जातिको आदर्शवादकी ओर अग्रसर किया, उस देश, राष्ट्र और जातिका तुम्हें शत-शत बार प्रणाम है !

हे विश्वात्मा जिस हिंसा और दानवतासे पीड़ित एवं संतप्त विश्वको तुमने अहिंसा और मानवताका वरदान दिया, जिस विनाशकी ओर अग्रसर शोषण एवं उत्पीड़नकी संस्कृतिको तुमने कल्याणकारी निर्माणका संदेश दिया, जिस अनीश्वरवाद और भौतिकताकी मृगतृष्णामें संतप्त सभ्यताको तुमने नैतिकता और विश्वासका मार्ग दिखलाया वह विश्व, संस्कृति और सभ्यता आज नतमस्तक तुम्हारा अभिनन्दन कर रहे हैं।

तुम्हारे पुण्य-तेजसे त्रस्त विश्वकी पशुताने तुम्हारे ऊपर प्रहार करके तुम्हारे पार्थिव शरीरको नष्ट कर दिया, लेकिन वह पशुता यह भूल गयी कि तुम अजर हो, तुम अमर हो, तुम असीम हो, तुम अखण्ड हो।

हमें बंधन-मुक्त करनेके लिए ही हे परमपुरुष तुम पार्थिव शरीरके बंधनमें आये थे। तुमने अपना काम कर दिया और तुम बंधन-मुक्त हो गये। लेकिन तुम सदा अपने भक्तोंके पास हो—हे विश्वात्मा हम तुम्हारे भक्त अपनी आत्मामें तुम्हारा आवाहन करते हैं।

सागरकी भांति गम्भीर, हिमालयकी भांति अडिग—तुम इस असत्य और स्वार्थके अंधकारमें डूबे हुए विश्वके लिए सत्य और ममताके उज्ज्वल प्रकाश थे, तुम

निर्बलों, निरीहों और पतितोंके एकमात्र अवलम्ब थे। आज हमारे बीचसे तुम्हारे चले जानेसे हम हत-प्रभ हैं, विक्षुब्ध है, किंकर्तव्य विमूढ हैं। आज जब इस नवजात राष्ट्रको तुम्हारे उपदेशो और निर्देशनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी, हमारे पापोंके कारण हमारे सर परसे तुम्हारा वरद हस्त अनायास ही उठ गया है। तुम दयाके आगार हो, तुम प्रेमकी अखण्ड ज्योति हो—हम रो-रोकर तुमसे प्रार्थना करते हैं कि हमारे पापोंको क्षमा करो, अपनी ही हत्या करने वाले इस राष्ट्रको अपना आशीर्वाद दो कि वह तुम्हारी अहिसा और मानवताको अपनावे।

हे बापू—हे महात्मा—हे विश्वात्मा हमारा कल्याण करो !

न्यूयार्क टाइम्स

आज श्मशानकी राखसे उड़कर एक गंध समस्त भूमण्डलमे व्याप्त हो गयी है। नही कहा जा सकता कि गांधीजीकी शिक्षाओ तथा आदर्शके वीजसे अगले पीढ़ोमें कैसे फूल फूलेंगे। भारत अभी तक प्रकाश तथा अंधकारकी शक्तियोंके मध्य भटक रहा है। आज महात्माजीकी अमर आत्मा समस्त भारत और समस्त संसारसे वोल रही है। गांधीजीका महात्माका स्वरूप भारतके मैदानों और पर्वतोपर ही नहीं समस्त भूमण्डलमें चिरस्मरणीय रहेगा। जिस प्रकार अन्य व्यक्ति दुनियाकी चीजों और शक्तिके लिए जी जानसे प्रयत्न करते है, गाधीजीने पूर्णताके लिये चेष्टा की। जैसे जैसे गांधीजीका राजनीतिक प्रभाव घटता गया वैसे-वैसे उनकी लोक कल्याणकी शक्ति बढ़ती गयी। उन्होंने वाइविलकी भावनामे अपने शत्रुओंसे प्रेम करनेका प्रयत्न किया और उनका भला करनेकी चेष्टा की। अब वे युग पुरुष हैं। अब तो यह जान पड़ता है, जैसा एक बार डा० जानहेन्सने लिखा था, कि गांधीजी मानवीय जीवनके कपड़ेपर सुनहरे तारके टॉकोंकी निरंतर आगे बढ़नेवाले उन सन्तों तथा द्रष्टाओंकी पंक्तिके एक जोड़ थे, जो यह कहते आये हैं कि मनुष्यकी आत्मा परमात्माकी ही तरह अपने लक्ष्यकी प्राप्ति करके जीवनको पूर्ण बना सकती है।

वाशिंगटन पोस्ट

जिस प्रकार एक अन्य महान् अमरीकीके संबंधमे कहा जाता था, जिसने अपने अनुयायियोंके मतभेदोंको मिटानेके लिए महान प्रयत्न किया था, उसी प्रकार गांधीजीके संबन्धमे कहा जा सकता है। अब वे युग पुरुप हैं। हमे आशा करनी

चाहिये कि मोहनदास गांधी भारतीय राष्ट्रके लिए अपनी जो अमर विचारधारा विरासतके रूपमे छोड़ गये है वह उसके उन्मादपर विजय प्राप्त कर सकेगी। अब वह विश्वव्यापी विचारधारा है। यदि इस विश्लेपणको अन्ततक ले जाया जाय तो कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण ससार अपनी मुक्ति और नवजीवनके संचारके लिए इसी विचारधारापर निर्भर रहेगा।

वाल्टीमारसन

भारतने शांति और एकताके लिए अपने बंधनको अपनी आत्माको छिन्न-भिन्न कर दिया। यदि इसे दीर्घकालके लिए सत्य माना जाय तो यही कहा जा सकता है कि भारतमे अभी अधिक हिसा और यातना देखनेमे आयेगी, किंतु गांधीजी और उनके उपदेश अनश्वर रहेंगे। विजयिनि साम्प्रदायिकतासे सन्तो का भी प्राणान्त हुआ है।

कम्युनिस्ट 'डेली' वर्कर

गांधीजीकी मृत्युसे मानवताको धक्का लगा है। यदि आज गांधीजीके शवके ऊपर भी भारतीय एकहो सके तो भारतकी उन्नतिका द्वार खुल जायगा। ब्रिटिश सरकारने भारतमे जो साम्प्रदायिकता उत्पन्न की है वह तो अपने फल लायेगी ही।

वामपत्र फ्रांटेरियट

हमारे युगने यदि एक ओर महा दैत्य हिटलरको देखा है तो दूसरी ओर गांधीके रूपमे वह शाश्वत ज्योति भी देखी है जो हिंसा, घृणा, और नृशंसताके करोड़ों धक्के खाकर आज तक न बुझी और जिसे एक पागल व्यक्तिकी गोलियोंने समाप्त कर दिया। हा हन्त!

वाशिंगटन, 'लाइफ'

भारत महात्माजीकी महानताके संबधमे अंतिम फैसला नहीं दे सकता। सभी कालोंमे, सभी राष्ट्रोंके मनुष्योंको उनसे जो अपार प्रेरणा मिलती रहेगी उसीके आधारपर हम गांधीजी जैसे महान व्यक्तिकी महानताका अदाज लगानेमे सफल हो सकेंगे।

गांधीजी न केवल एक महान व्यक्ति थे बल्कि एक विश्व-साधु थे। एक ऐसे संत थे जो कि युगोंसे पश्चिमी संसारमे पैदा नहीं हुआ।

बोस्टन ग्लोब (बोस्टन)

सुक्रात को जहर, ईसा को सूली और गांधी को गोली का शिकार बनना पड़ा ! अपने जीवन काल में महात्मा गांधी एक संत थे। मरकर वे शहीद हो गये !

उनकी मृत्यु किसी मुसलमानके हाथसे भी नहीं हुई। लेकिन वे अपने ही आदमियोंमें से एक हिन्दू द्वारा, जिन्हें उन्होंने राजनैतिक स्वतन्त्रता दिलाई, मारे गये ! अहिसा का यह एक वैचित्र है कि उसके प्रवर्त्तकों का अन्त हिसासे होता है।

लेकिन गांधीके हिसात्मक अतसे उन्हें ही आश्चर्य होगा जो मानवके कल्याणकर्त्ताओंके इतिहाससे परिचित नहीं हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि इस बीसवीं सदीमे एक ऐसा आदमो भी था। जघन्य हत्या, राजनैतिक स्पर्धा और सैनिकीकरणके इस युगमे गांधीने लोगों को प्रेम, शांति, दया, सारल्य और पारस्परिक सहयोग का पाठ पढ़ाया !

इंगलिश चर्च मैंन (लन्दन)

महात्मा गांधीकी हत्यासे सारे संसार को बहुत धक्का लगा है। निःसन्देह गांधीजी का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था। कई पीढियोंके बाद हिन्दुस्तानमे ऐसे व्यक्तिने जन्म लिया था। मानव समाजके तमाम दुर्गुणों—राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक का हल वे 'अहिंसा' के द्वारा करना चाहते थे। लेकिन आश्चर्य तो यह है कि ऐसे व्यक्ति को स्वयं हिंसा का शिकार होना पड़ा।

आव्जर्वेटोर रोमानो (वैटिकन सिटी)

इस समय जब हमारी सभ्यता खतरेमे पड़ी हुई है गांधीजीके निधनसे चारों ओर अंधेरा छा गया है। ऐसा जान पड़ता है कि इस शान्तिप्रिय व्यक्तिकी हत्या विश्वशान्तिपर ही प्रहार है।

हत्यारे बहुधा यह सोचते हैं कि व्यक्ति विशेषको मार डालनेसे उसके विचारोंका भी अन्त हो जाता है। परन्तु वास्तवमे हत्याके बाद विचार और अधिक चमक उठते हैं। इसकी सत्यता सार संसारमे गाधीजीके निधनपर मनाये गये शोकसे सिद्ध होती है।

अन्तिम लीला

गांधीजीकी जीवन झांकी

२ अक्टूबर, १८६९—पोरबंदर (सुदामापुरी) के एक प्रतिष्ठित वैश्य-कुलमें जन्म

१८८३-१३ वर्षकी अवस्थामें कस्तूर बाईसे विवाह

४ सितम्बर १८८८-बैरिस्टरी पढ़नेके लिये इंगलैंड रवाना।

१० जून १८९१—बैरिस्टर हुए। १२ जूनको स्वदेश रवाना हुए। जुलाईमें वम्बई पहुँचे।

अप्रैल १८९३—पोरबंदरकी एक मुसलिम फर्मकी ओरसे दक्षिण अफ्रीकाको रवाना

११ सितम्बर १९०६—ट्रांसवालमे सत्याग्रहके रूपमे राजनीतिक प्रतिरोधकी एक नयी युद्ध-प्रणालीका जन्म

१९१५—दक्षिण अफ्रीकाका विजयी नेता स्वदेश वापस

अप्रैल १९१९—रौलट बिलके विरूद्ध सत्याग्रह आदोलनका सूत्रपात।

३१ जुलाई १९२०—रौलट बिल, पजाब कांड और खिलाफतके प्रश्नपर असहयोग आंदोलनका सूत्रपात।

१० मार्च, १९२२—गांधीजीकी गिरफ्तारी तथा अहमदाबादमे ऐतिहासिक मुकदमा

१९२४—१२ जनवरीको पेटके फोड़ेका आपरेशन। आपरेशनके समय बिजली बुझ गयी, सार्जनने टार्चकी रोशनीमे आपरेशन किया। १८ फरवरीको बिला शर्त रिहाई।

१८ सितम्बर, १९२४—हिंदू-मुसलिम एकताके लिये दिल्लीमे २१ दिनका उपवास

१२ मार्च १९३०—दांडी-यात्रासे नमक सत्याग्रहका सूत्रपात

५ मार्च १९३१—गाधी अर्विन समझौता अगस्तमे द्वितीय गोलमेज सम्मेलनमे भाग लेनेके लिये लदन रवाना।

३१ दिसम्बर, १९३१—तीसरे सत्याग्रह सग्रामका सूत्रपात

२२ दिसम्बर १९३२—मकडानारल्ड के साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध आमरण अनशन

१९३४—सारा समय हरिजनोद्धारमें लगानेका निश्चय।

३ मार्च १९३९—राजकोटके प्रश्नपर आमरण अनशन। बादमे अपनी हिमालय जैसी भूल स्वीकार की।

अक्टूबर १९४०—युद्धके संबधमे लेखन तथा भाषण स्वतंत्रताके प्रश्नपर व्यक्तिगत सत्याग्रहका अधिनायक बने।

८ अगस्त १९४२—भारत छोड़ोके आदोलनका सूत्रपात।

१० फरवरी १९४३—आगा खा महलमे नजरबदीकी हालतमे ३ सप्ताहका उपवास

२२ फरवरी १९४४—कस्तुरबाका निधन

१९४७—शांतिका संदेश लेकर नोआखालीके गावोंमे पैदल यात्रा

१ सितम्बर १९४७—कलकत्तामे साम्प्रदायिक एकताके लिये अनशन

१३ जनवरी १९४८—दिल्लीमे साम्प्रदायिक एकताके लिये अनिश्चित कालका अनशन

३० जनवरी १९४८—प्रार्थना सभा करते समय एक पागल भाईके हाथ गोली खाकर देहांत।

बापू का अन्तिम उपवास—

क्यों !

हिन्दू मुसलमानों और सिखों मे हार्दिक मैत्री स्थापित करनेके लिए १३ जनवरी १९४८ को बापूने उपवास आरंभ किया था। यह उपवास अनिश्चित काल तकके लिए किया गया था। गांधीजी ने कहा था 'उपवास तभी खतम होगा जबकि मुझे यह निश्चय हो जायगाकि सभी सम्प्रदायोंके हृदय विना किसी बाहरी दबावके स्वतः मिल गये है।' १८ ता० को देशके सम्पूर्ण नेताओंसे मन के मुताबिक आश्वासन मिलने पर यह उपवास तोड़ दिया गया था।

अपने राजनैतिक जीवनमे गाधीजाका यह १५ वां उपवास था। इस उपवासके आरम्भ करनेसे पूर्व १२ ता० को गांधीजीने उसके लक्ष्यके बारेमे उस दिनकी प्रार्थना-सभामे निम्नलिखित वक्तव्य दिया था :—

कुछ लोग स्वास्थ्य लाभकी दृष्टिसे अनशन करते हैं तथा कुछ लोग किन्हीं दुष्कर्मों के प्रायश्चित्तके लिए अनशन करते है। इन लोगोंके लिए अहिंसामे विश्वास करना आवश्यक नहीं है। इसके अतिरिक्तएक और स्थिति है, जब अनशन किया जाता है। वह अनशन अहिंसक समाजके दुष्कमके विरोधमे ऐसी स्थितिमे बाध्य होकर करता है जबकि उसके लिए कोई अन्य चारा नहीं बच रहता है। आज हमारे सम्मुख ऐसी ही स्थिति उपस्थित हो गयी है।

करो या मरो को तैयार

जब मै गत ९ सितम्बरको कलकत्तेसे दिल्ली आया तो मेरी इच्छा पश्चिमी पंजाब जानेकी थी। परन्तु वह सम्भव न हो सका क्योंकि दिल्ली सरीखा सम्पन्न नगर उस समय लाशोंसे भर रहा था। मैं ज्योंही ट्रेनसे उतरा मुझे हर व्यक्तिके चेहरेपर चिन्ता दिखलायी पड़ती थी। सरदार सरीखे आमोदप्रिय व्यक्ति भी चिन्तासे मुक्त न थे। मुझे उसका कारण ज्ञात न था। वे मेरे स्वागतके लिए स्टेशन गये थे।

उन्होंने मुझे तुरंत ही हिन्द यूनियनकी राजधानीके उपद्रवका समाचार सुनाया। तुरंत मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मुझे दिल्लीमें ही रहना होगा और 'करो या मरो' सिद्धान्तको कार्यान्वित करना होगा।

पुलिस तथा सेनाकी सहायतासे नगरमें पूर्ण वाह्य शान्ति तो स्थापित हो गयी है, परन्तु लोगोंका हृदय अब भी उद्वेलित हो रहा है। उनके हृदयमें आज जो तूफान उठ रहा है वह कभी भी बाहर प्रकट हो सकता है। मैं इसे ही अपनी लक्ष्य प्राप्ति नहीं मानता। शान्ति ही मुझे जीवित रख सकती है। मै हिन्दू, मुसलमान, सिख सभीसे पूर्ण मैत्री चाहता हूँ। आज उस मैत्रीका पूर्ण अभाव है। ऐसी स्थिति कोई भो देशभक्त सहन नहीं कर सकता।

अनशन अन्तिम अस्त्र

मेरी अन्तरात्मा कभीसे मुझे पुकार रही थी। परन्तु मैने उधरसे अपना कान बन्द कर रखा था। मै सोचता था कि कहीं शैतान मुझे आदेश न दे रहा हो। उसके आदेशका पालन मेरी दुर्बलता होगी। मै कभी भी निस्सहाय नहीं होना चाहता। किसी सत्याग्रही को तो कभी भी अपनेको निस्सहाय न मानना चाहिये। सत्याग्रहीके लिए अन्तिम अस्त्र तलवार नही है, वरन् अनशन ही है।

अनशन मंलवारसे आरम्भ

आज मेरे पास उन मुसलमानोंके लिए कोई उत्तर नहीं जो प्रतिदिन मेरे पास आते है और मै बताऊँ कि वे क्या करे। मुझमे पहलेसे दुर्बलता आती जा रही थी, पर अनशन आरम्भ होते ही यह समाप्त हो जायगी। मै इस सम्बन्धमे गत कई दिनोंसे सोच रहा था। आज मेरी अन्तरात्माने अन्तिम निर्णय दे दिया। इससे मुझे प्रसन्नता है। किसी भी पवित्र आत्माके लिए ऐसे महान् उद्देयकी पूर्तिमे अपने प्राणों-का बलिदान कर देनेसे मूल्यवान् अन्य कोई चीज नहीं। मैं आशा करता हूँ कि मेरी आत्मा पवित्र है और वह इसका औचित्य सिद्ध कर सकती है। आप सभी मेरी सफलताके लिए मेरे साथ प्रार्थना करे। अनशन कल प्रथम भोजनके पश्चात् आरम्भ होगा। यह अनिश्चित कालतक चलेगा। अनशन कालमे मैं जल और नींबूका रस ले सकता हू। यह तभी समाप्त होगा जब मुझे विश्वास हो जायगा कि विना किसी वाह्य दबावके कर्त्तव्यकी भावनासे जागृत होकर सभी सम्प्रदायोंके हृदय पुनः एकताके

सूत्रमे ग्रथित हो गये हैं। यदि मैं सफल हुआ तो भारतकी प्रतिष्ठा और एशिया तथा विश्वके हृदयपर व्याप्त सार्वभौमत्वको पुनः प्राप्त कर सकूँगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारतीय आत्माके हननसे पीड़ित, बुभिक्षित और उद्वेलित विश्वकी एकमात्र आशा ही समाप्त हो जायगी।

विरोधियोंको उत्तर

मेरे इस निर्णयसे किसीको क्रोधित न होना चाहिये। मेरे अनेक मित्र हैं जिन्हें अनशनपर विश्वास नहीं। उन्हें इसपर विश्वास नहीं कि अनशनसे मानव मस्तिष्कमे परिवर्तन किया जा सकता है। पर जिस तरहसे उन्हें वैसा सोचनेको स्वतन्त्रता है वैसी ही स्वतन्त्रता मुझे भी है। ईश्वर ही मेरा एकमात्र-परामर्शदाता है और उसीकी प्रेरणासे मै अपने निर्णयको कार्यान्वित करने जा रहा हूँ। यदि मैंने अपनी भूलोंका पता लगा लिया है तो उसे प्रकाशमे लानेमे मुझे कोई हिचकिचाहट न होनी चाहिये। अपनी भूलोंको जान लेना इतना सरल नहीं। सम्पूर्ण भारत अथवा केवल दिल्लीपर भी मेरे अनशनका प्रभाव पड़ा तो यह शीघ्र ही समाप्त किया जा सकता है। अनशनकी समाप्ति निकट भविष्यमे हो या विलम्बसे, किन्तु सकटपर विजय पानेके लिए हमे कुछ भी उठा न रखना चाहिये।

कुछ आलोचकोंने हमारे विगत अनशनोंको दवाव देनेवाला वताया है। उनका कथन है कि जिस उद्देश्यसे अनशन आरम्भ किये गये थे उसके फल ठीक उसके विपरीत सिद्ध हुए हैं। मैं कहता हूँ कि विरोधी कथनोंका मूल्य ही क्या जव मेरा उद्देश्य पवित्र है। कर्तव्यके रूपमे किया गया अनशन स्वयमेव पुरस्कार है। अनशन-के प्रतिफलकी मुझे कामना नहीं है। मै अनशन इसलिए करता हू क्योंकि ऐसा करना मै अपना कर्तव्य समझता हूँ। अतः प्रत्येक व्यक्तिसे मेरी प्रार्थना है कि वह शान्तिपूर्वक उद्देश्यकी विवेचनासे अलग मुझे मृत्योन्मुख होने दे। भारत, हिन्दुत्व तथा इसलामका विनाश होते हुए असह्य अवस्थामे देखते रहनेकी अपेक्षा मृत्यु मुझे गौरव-पूर्ण मुक्ति प्रदान करेगी। यदि पाकिस्तानने अपना रवैया न वदला तो विनाश अवश्य-म्भावी है। इसलामकी समाप्ति तो केवल भारतके दो खण्डोंमे ही होगी, विश्वमे इसका अस्तित्व कायम रहेगा. किन्तु हिन्दू और सिख धर्मों के लिए भारतके वाहर कोई स्थान प्राप्त नहीं है।

आप प्रिय भारत देशमें होनेवाले उपद्रवोंका जरा भी ध्यान करेंगे तो उसी समय आपको यह सोचकर प्रसन्नता होगी कि भारतमाताका एक पुत्र इतना पवित्र और इतना शक्तिशाली था कि उसने उनके विरुद्ध कदम उठाया। यदि उसमे इतनी शक्ति और इतनी पवित्रता नहीं है तो वह भूमिके लिए भार-स्वरूप ही है। वह भारस्वरूप व्यक्ति जितना शीघ्र उठ जाय उतना ही अच्छा है।

अनशन आत्मशुद्धिका साधन

मैं अपने मित्रोंसे अनुरोध करूँगा कि वे बिडला भवनकी ओर दौड़ न पड़े। वे न तो मुझे अपने निश्चयसे विचलित करनेकी चेष्टा करे और न मेरे लिए चिन्ता ही प्रकट करें। मै पूर्णतः परमात्माके ही हाथमे हूं। बिड़ला भवन की ओर दौड़नेकी अपेक्षा वे स्वय अपने हृदयमे प्रकाशकी किरण ले जायें, क्योंकि यह हम सभी के लिए परीक्षा-काल है। अपने कर्तव्यका उचित रूपमे तत्परतासे पालन करनेवाला व्यक्ति मुझे अधिक सहायता पहुँचायेगा। अनशन आत्मशुद्धिका साधन है।

कांग्रेसजनोंका नैतिकपतन

देशके सम्मुख राजनीतिक तथा आर्थिक गुत्थियोंमें सभीसे बढ़कर कांग्रेसजनोंका नैतिक पतन है। मैं अन्य प्रान्तोंकी बात नहीं करता, पर मेरे प्रान्तमे स्थिति बड़ी दयनीय हो गयी है। राजनीतिक सत्ताने उन्हें उन्मत्त कर दिया है। असेम्बली तथा कौंसिलके बहुतसे सदस्य समयसे अधिकसे अधिक लाभ उठानेपर ही तुल गये हैं। अदालतोंके अधिकारमें भी हस्तक्षेप करने तथा अपने प्रभावसे पैसा प्राप्त करना मुख्य लक्ष्य हो गया है। जिला मैजिस्ट्रेट तथा अन्य अधिकारी भी असेम्बली तथा कौंसिलके हस्तक्षेपके कारण स्वतन्त्रतापूवक काम नहीं कर पाते। कोई भी आत्मसम्मानवाला अफसर ऐसी स्थिति सहन नहीं कर सकता क्योंकि उसके विरुद्ध मन्त्रियों तक झूठी शिकायत लेकर लोग दौड़ पड़ेगे।

कांग्रेसमें भ्रष्टाचार

स्वराज्य प्राप्तिकी भावनासे प्रभावित होकर देशके नर-नारी कांग्रेसके नेतृत्वके तले आये। पर अब यह ध्येय पूरा हो गया है। स्वतन्त्रताके महान संघर्षमे भाग लेनेवाले सिपाहियोंपर अब सभी नैतिक नियन्त्रण समाप्त हो चुके है। आज कांग्रेसके

कार्यकर्ता अपने व्यक्तिगत हितोंकी पूर्तिके लिए राष्ट्रीय आन्दोलनोंके कट्टर शत्रुओंसे हाथ मिला रहे हैं और कांग्रेसके सदस्य बना रहे हैं। स्थिति ऐसी असह्य हो गयी है कि इसके परिणामस्वरूप कांग्रेस और कांग्रेस सरकार बुरी तरह बदनाम हो रही है। आन्ध्रमें हुए हालके म्युनिसिपल चुनावसे सिद्ध है कि कितनी जल्दी कांग्रेसका प्रभाव आम जनतापरसे समाप्त होता चला जा रहा है।

अत्याचारसे जनतामें विद्रोह

कांग्रेसजनोंके मतभेद तथा असेम्बली कौंसिलके सदस्यों और मन्त्रियोंकी प्रवृत्ति जनतामें विद्रोह उत्पन्न कर रही है। लोग कहने लगे हैं कि ब्रिटिश-सरकार इस कांग्रेस सरकारसे कहीं अच्छी थी।

आन्ध्र तथा अन्य प्रान्तोंके लोग मेरे इन वाक्योंपर ध्यान दें। मैं स्पष्ट रूपसे कहता हूँ कि अनाचार केवल आंध्रमें ही नहीं है। आंध्र तो एक उदाहरणमात्र है। हम सभीको सचेत हो जाना चाहिये।

उपवास या हृदयकी शुद्धि

१७ जनवरीको डाक्टर सुशीला नयरने गांधीजीका एक लिखित संदेश प्रार्थना सभाको सुनाया था जिसमें गाधीजीने कहा था—"मैं नहीं चाहता कि इस समय अनशनके दबावसे कुछ किया जाय वरना अनशनकी समाप्तिके साथ दबावसे किया गया कार्य भी खतम हो जायगा।

मेरे पास नित्य सर्वत्र हिन्दसे और पाकिस्तानसे भी तमाम संदेश आते हैं। वैसे तो वे बिलकुल ठीक हैं। लेकिन जो लोग पाकिस्तानमें रहते हैं और जिनके हाथमें उसका भाग्य-निर्माण करना है, उनसे यह कहे बगैर नहीं रह सकता कि यदि उनकी चेतना जागृत नहीं होती और पाकिस्तानके अपराधोंको वे स्वीकार नहीं करते तो वे पाकिस्तानको कायम नहीं रख सकते।

इसके यह माने नहीं कि दोनों राज्योंका स्वेच्छासे पुनः एक हो जाना मैं नहीं चाहता। लेकिन हथियारोंके बलपर पाकिस्तानको शामिल करनेका विचार मैं बिलकुल नहीं आने देना चाहता।

मृत्युशय्या

मुझे विश्वास है कि आज जब मै सच्चे अर्थमें देखा जाय तो मृत्युशय्या पर ही लेटा हूँ, मेरी बातको भेद अथवा झगड़ेकी बात समझनेकी गफलतहमी न होगी।

पाकिस्तान समझे

मैं आशा करता हूँ, समस्त पाकिस्तानी इस बातको महसूस करेंगे कि यदि अपनी कमजोरीके कारण उनकी भावनाओंको चोट न पहुँचानेके ख्यालसे मै उन बातोंको व्यक्त न करूं जो मै ठीक-ठीक अनुभव कर रहा हूँ तो मै पाकिस्तानियोंके और अपने दोनोंके साथ अन्याय करूँगा।

यदि मैंने कही समझनेमें गलती की है तो मुझे बताया जाय मैं वादा करता हूँ कि ठीक समझ लेनेपर मैं अपनी बात वापस ले लूँगा। वैसे, जहाँतक मै समझता हूँ इस विषयपर दो मत नहीं हैं।

मेरे उपवासको किसी भी अर्थमें राजनीतिक चाल समझना उचित न होगा। यह मेरी आत्मा और कर्त्तव्यकी पुकारपर किया गया है। जिस व्यथाको मैंने महसूस किया है उसीकी पीड़ासे मैंने अनशन शुरू किया है। मेरे गवाहके रूपमे दिल्लीके तमाम मुसलमान मित्र हैं जो दिन भरको घटनाओंको आकर मुझे सुनाते है। न तो राजे महाराज और न हिन्दू सिख और न अन्य लोग अपना या देशका भला करेंगे, यदि उन्होंने मेरे जीवनके इस महोत्सवपर मेरा अनशन खत्म करनेके लिए मुझे बहकानेकी कोशिश की।

यदि अनशनके दबावसे कुछ किया गया तो अत्यन्त भयकर बात होगी। आध्यात्मिक उपवास हृदय शुद्धिकी अपेक्षा करता है। जिस प्रकार दीवालकी सफेदी कर देनेपर कोई आया हुआ व्यक्ति चला जाय तो सफेदी नष्ट नहीं हो जाती उसी प्रकार एक बार आत्मशुद्धि हो जानेके बाद उसका कारण न रहे तो भी आत्मशुद्धि बनी रहनी चाहिये। सांसारिक सफेदी तो फिर कुछ दिनों बाद करानी पड़ती है परन्तु हृदय शुद्धि तो मरते दमतक साथ रहती है।

प्रत्येक व्यक्ति यह जान ले कि जितना आध्यात्मिक उपवासके समय मैं प्रसन्न रहता हूँ उतना और कभी नहीं। इस उपवासने मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता दी है। कोई व्यक्ति इस प्रसन्नावस्थाको छेड़नेका प्रयत्न न करे जबतक वह इस बातका

ईमानदारीसे दावा नहीं कर सकता कि अपनी जीवनयात्रामे वह सचमुच ही शैतानके पथसे मुड़कर ईश्वरके पथका अनुसरण करने लगा।

सफल उपवास

१८ जनवरी १९४८ को अपना अंतिम उपवास समाप्त करने पर गाधीजीने उस दिनकी प्रार्थना सभामे इस प्रकार आशा प्रकटकी थी—"यदि साम्प्रदायिक एकता स्थापित करनेकी प्रतिज्ञा सफल हुई तो मैं दूनी शक्तिसे ईश्वरसे प्रार्थना करूँगा कि वह मनुष्य मात्रकी सेवाके लिए मुझे पूरे जीवनकाल भर जीने दे। ऋषि-मुनियोंकी रायमे मनुष्यकी आयु १२५ वर्षकी होती है, कुछ लोगोंका कहना है कि आयु १३३ वर्षकी होती है।

मैने सत्यके नामपर अनशन शुरू किया था। सत्यका दूसरा नाम ईश्वर है। भगवानके नामपर हम लोगोंने कत्लेआम किये हैं, स्त्रियोंका सतीत्व नष्ट किया है और जबरदस्ती लोगोंका धर्म परिवर्तन किया है। मैं नहीं जानता कि किसीने सत्यके नाम पर भी ऐसा किया है। राम नामके साथ ही मैंने अपना अनशन तोड़ा है

एकता की प्रतिज्ञा

राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद मेरे सामने १०० व्यक्तियोंको लाये जो हिदू, सिख, मुसलमान, हिदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ और पजाब तथा सीमाप्रातके शरणार्थियोंका प्रतिनिधित्व करते थे। इनमे पाकिस्तानके हाई कमिश्नर श्रीजाहिद हुसेन, दिल्लीके चीफ कमिश्नर तथा डिप्टी कमिश्नर, जनरल शाहनवाज, पडित नेहरू मौलाना आजाद और डा० राजेन्द्र प्रसादने एक मसविदा हिंदुस्तानीमे पढ़ा जिसपर इन लोगोंके हस्ताक्षर थे और मुझसे इन लोगोंको और सकटमे न डाल अनशन तोड़नेको कहा। मेरे पास इसीके लिए अनेक तार भी आये हैं। इन लोगोंने प्रतिज्ञा की कि चाहे जो कुछ भी हो यहापर हिदू, मुसलमान, सिख, पारसी यहूदी सभीमे परस्पर प्रेम होगा। मै अपने इन दोस्तोंका अनुरोध टाल न सका।

व्रत सफल हुआ

दिल्लीके नागरिकोंने मेरे व्रतका उद्देश्य मेरी आशासे पहले पूरा कर दिया

इसका फल अच्छा ही होगा। मैं जानता हूँ कि कलसे हजारों शरणार्थी भी मेरे साथ अनशन कर रहे हैं। देश विदेशसे मेरे पास तार और लिखित आश्वासन आ रहे हैं। मेरे काममें ईश्वरका भी हाथ है, यह सब इसीका प्रमाण है।

मेरे व्रतका मुख्य उद्देश्य था पहले हिंदके हिंदू-मुसल्मानोंका परस्पर हार्दिक स्नेह और बाद पाकिस्तानके हिंदू और मुसलमानोंमें प्रेम-भाव। यदि पहला काम हो जाय तो दूसरा भी उसी प्रकार हो जायगा। जिस प्रकार रातके बाद दिन होता है। यदि हिंदमें अंधकार रहेगा तो पाकिस्तानमें प्रकाशकी आशा करना मूर्खता होगी। परंतु यदि हिंदसे अंधकार दूर हो गया तो निश्चय ही पाकिस्तानमें भी अंधकार न रहेगा। पिछले ६ दिनोंसे जैसे ईश्वर हमें रास्ता दिखा रहा था, भविष्यमें भी वैसे ही दिखाये यही मेरी प्रार्थना है।

———

बापू—
होली के अवसर पर ब्राडकास्टिंग हाउस में शरणार्थियों को उपदेश देने गये थे।
यह उनका प्रथम और अन्तिम दर्शन था।

कांग्रेस को अन्तिम संदेश

इण्डियन नेशनल कांग्रेस देशकी सबसे पुरानी राष्ट्रीय राजनीतिक संस्था है। उसने कई अहिंसक लड़ाइयोंके बाद आजादी हासिल की है। उसे मरने नहीं दिया जा सकता। उसका खात्मा सिर्फ तभी हो सकता है, जब राष्ट्रका खात्मा हो। एक जीवित सस्था या तो जीवन्त प्राणीकी तरह लगातार बढ़ती रहती है, या मर जाती है। कांग्रेसने राजनीतिक आजादी तो हासिल कर ली है, मगर उसे अभी माली आजादी, सामाजिक आजादी और नैतिक आजादी हासिल करनी है। ये आजादियाँ चूँकि रचनात्मक हैं, कम उत्तेजक और भड़कीली हैं, इसलिए इन्हें हासिल करना सियासी आजादीसे ज्यादा मुश्किल है। जीवनके सारे पहलुओंको समा लेनेवाला तामीरी काम करोड़ों जनताके सारे अंगोंकी शक्तिको जगाता है।

कांग्रेसको उसकी आजादीका प्रारम्भिक और जरूरी हिस्सा मिल गया है। लेकिन उनकी सबसे कठिन मजिल आना अभी बाकी है। जमहूरी व्यवस्था कायम करनेके अपने मुश्किल मकसदतक पहुंचनेमें उसने अनिवार्य रूपसे दलबन्दी करनेवाले गन्दे पानीके गड़हों जैसे मण्डल खड़े किये हैं, जिनसे घूसखोरी और बेईमानी फैली है और ऐसी संस्थाएँ पैदा हुई हैं, जो नामकी ही लोकप्रिय और प्रजातन्त्री हैं। इन सब बुराइयोंके जगलसे बाहर कैसे निकला जाय?

कांग्रेसको सबसे पहले अपने मेम्बरोंके उस स्पेशल रजिस्टरको अलग हटा देना चाहिये, जिसके मेम्बरोंकी तादाद कभी एक करोड़से आगे नहीं बढ़ी, और तब भी जिन्हें आसानीके शिनाख्त नहीं किया जा सकता। उसके पास ऐसे करोड़ोंका एक अज्ञात रजिस्टर था, जो उसके काममें नहीं आये। अब कांग्रेसका रजिस्टर इतना बड़ा होना चाहिये कि देशके मतदाताओंकी लिस्टमे जितने मर्द और ओरतोंके नाम हैं, वे सब उसमे आ जायँ। कांग्रेसका काम यह देखना होना चाहिये कि कोई बना-

वटी नाम उसमें शामिल न हो जाय और कोई जायज नाम छूट न जाय। उसके अपने रजिस्टरमें उन देश-सेवकोंके नाम रहेंगे, जो समयपर दिया हुआ काम करते रहेंगे।

देशके दुर्भाग्यसे ऐसे कार्यकर्त्ता फिलहाल खास तौरपर शहरवालोंमेंसे ही लिये जावेंगे, जिसमेंसे ज्यादातरको देहातोंके लिए और देहातोंमें काम करनेकी जरूरत होगी। मगर इस श्रेणीमे ज्यादासे ज्यादा तादादमें देहाती लोग ही भर्ती किये जाने चाहिये।

इन सेवकोंसे यह अपेक्षा रखी जायगी कि वे अपने-अपने हलकोंमें कानूनके मुताबिक रजिस्टरमें दर्ज किये गये मतदाताओंके बीच काम करके ऊपर अपना प्रभाव डालेंगे और उनकी सेवा करेंगे। कई व्यक्ति और पार्टियाँ इन मतदाताओंको अपने पक्षमें करना चाहेंगी। जो सबसे अच्छे होंगे उन्हींकी जीत होगी। इसके सिवा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है जिससे कांग्रेस देशमें तेजीसे गिरती हुई अपनी अनुपम स्थितिको फिरसे हासिल कर सके। अभी कलतक कांग्रेस बेजाने देशकी सेविका थी। वह खुदाकी खिदमतगार थी—भगवान्‌की सेविका थी। अब वह अपने आपसे और दुनियासे कहे कि वह सिर्फ भगवान्‌की सेविका है—न इससे ज्यादा है, न कम। अगर वह सत्ता हड़पनेके व्यर्थके झगड़ोंमें पड़ती है, तो एक दिन वह देखेगी कि वह कहीं नहीं है। भगवान्‌को धन्यवाद है कि अब वह जनसेवाके क्षेत्रकी एकमात्र स्वामिनी नहीं रही।

मैंने सिर्फ दूरका दृश्य आपके सामने रखा है। अगर मुझे वक्त मिला और स्वास्थ्य ठीक रहा तो मैं इन कालमोंमें यह चर्चा करनेकी उम्मीद करता हूं कि मालिको—सारे बालिग मर्द और औरतोंकी नजरोंमें अपनेको ऊँचा उठानेके लिए देशसेवक क्या कर सकते हैं (२७-जनवरी-१९४८)!

अन्तिम प्रवचन

भाइयो और बहिनों! मेरे सामने चीज तो काफी पड़ी हैं, उनमेसे जो आजके लिए चुननी चाहिये, वे चुन ली हैं। ६ चीजे हैं। पन्द्रह मिनटमे जितना कह सकूँगा, कहूँगा।

एक बात तो देख रहा हूँ कि थोड़ी देर हो गयी है—ऐसी होनी नहीं चाहिये थी। सुशीला बहन बहावलपुर चली गयी है। बहावलपुर मे दुखी आदमी हैं उनको देखनेके लिए चली गयी हैं—दूसरा अधिकार तो कोई है नहीं और न हो सकता था। फ्रेंडस सर्विसके मित्र लोग हैं उनको भेजनेका मैने इरादा किया था। उनका नाम लेसली क्रास है—वे सज्जन पुरुष हैं। वहाँ लोगोंको देखेंगे, मिलेंगे और मुझको बता देंगे। उस वक्त सुशीला बहिनके जानेकी बात नहीं थी लेकिन जब सुशीला बहिनने सुन ली तो उसने मुझसे कहाकि इजाजत देदो तो मै क्रास साहबके साथ चली जाऊं। वह जब नोआखालीमे काम करती थी तबसे वह उनको जानती थी। आखिर कुशल डाक्टर है और पजाबके गुजरातकी है, उसने भी काफी गँवाया है क्योंकि उसकी तो वहाँ काफी जायदाद है फिर भी दिलमे कोई जहर पैदा नहीं हुआ है। तो उसने बताया कि मैं वहाँ क्यों जाना चाहती हू क्योंकि मै पजाबी बोली जानती हू, उर्दू और अग्रेंजी भी जानती हूँ तो वहा मैं क्रास साहबको मदद दे सकूँगी। तो मै यह सुनकर खुश हो गया। वहाँ खतरा तो है लेकिन उसने कहा कि मुझको क्या खतरा है, ऐसी डरती तो नाआखाली क्यों जाती। पजाबमे बहुत लोग मर गये हैं, बिल्कुल मिटियामेट हो गये हैं लेकिन मेरा तो ऐसा नहीं है, खाना पीना मिल जाता है, ईश्वर सब करता है। अगर आप भेज दे और क्रास साहब मेरेको ले जायँ तो वहाँके लोगोंको देख लूँगी। तो मैंने क्रास साहबसे पूछा कि क्या आपके साथ सुशीला बहिनको भेजूँ। तो वे खुश हो गये और कहा कि यह तो बड़ी अच्छी बात है। मै उनके मारफत दूसरोंसे अच्छी तरह बात चीत कर सकूँगा। मित्र वर्गमे हिन्दुस्तानी जाननेवाला कोई रहे तो वह बड़ी भारी चीज हो जाती है। इससे बेहतर क्या हो सकता है। वे रेड-

क्रासके हैं। रेडक्रासके मायने यह है कि लड़ाईमें जो मरीज हो जाते है उनको दवा देनेका काम करना। अबतो दूसरा तीसरा भी काम करते हैं। तो डाक्टर सुशीला क्रास साहबके साथ गयी हैं या डाक्टर सुशीलाके साथ क्रास साहब गये हैं यह पेचीदा प्रश्न हो जाता है लेकिन कोई पेचीदा है नहीं, क्योंकि एक दूसरेके दोस्त है और दोनों एक दूसरेको चाहते है, मुहब्बत करते हैं। वे सेवाभावसे गये हैं, पैसा कमाना तो है नहीं, वे जो देखेंगे मुझे बतलायेंगे और सुशीला बहिन भी बतायेंगी। मैं नहीं चाहता कि कोई ऐसा गुमान रखे कि वह तो डाक्टर है और क्रास साहब दूसरे हैं। कौन ऊंचा है नीचा है ऐसा कोई भेदभाव न करें लेकिन क्रास साहब तो औरतको आगे कर देते हैं और अपनेको पीछे रहते हैं। आखिर वे उनके दोस्त हैं। मै एक बात और कह देना चाहता हूँ कि नबाब साहबतो मुझको लिखते रहते हैं। मुझको कई लोग झूठ बात भी लिखते हैं तो उसे माननेका मेरा क्या अधिकार है। तो मैने सोचाकि मुझको क्या करना चाहिये। तो बहावलपुरके जो आये हैं उनको बता दूँ कि वे वहांसे आयेंगे तो मुझको सब बात बता देंगे।

अभी बन्नूके भाई लोग मेरे पास आ गये थे—शायद चालीस आदमी थे। वे परेशान तो हैं लेकिन ऐसे नहीं हैं कि चल नहीं सकते थे। हाँ, किसीकी अँगुलीमे घाव लगे थे, कहीं कुछ था कहीं कुछ था ऐसे थे। मैने तो उनका दर्शन ही किया और कहाकि जो कुछ कहना है बृजकिशनजीसे कह दे लेकिन इतना समझ ले कि मै उन्हें भूला नहीं हूँ। वे सब भले आदमी थे गुस्सेसे भरे होना चाहिये था लेकिन फिर भी वे मेरी बात मान गये। एक भाई थे, वे शरणार्थी थे या कौन थे मैने पूछा नहीं। उसने कहा कि तुमने बहुत खराबी तो कर ली है, क्या और करते जाओगे। इससे बेहतर है कि जाओ। बड़े हैं, महात्मा हैं तो क्या, हमारा काम तो बिगाड़ते ही हो। तुम हमको छोड़ दो, भूल जाओ, भागो। कहाँ जाऊँ? पीछे कहा तुम हिमालय जाओ, तो मैने डाटा। वे मेरे जितने बुजुर्ग नहीं है—वैसे बुजुर्ग नहीं हैं, तगड़ा हैं, मेरे जैसे पाँच सात आदमीको चोट कर सकता है। मै तो महात्मा रहा घबराहट में पड़ जाऊँ तो मेरा क्या हाल होगा। तो मैने हँसकर कहा कि क्या मै आपके कहनेसे जाऊँ, किसकी बात सुनूँ, क्योंकि कोई कहता है कि यहीं रहो, कोई तारीफ करता है, कोई डाँटता है, कोई गाली देता है। तो मै क्या करूँ? ईश्वर जो हुक्म करता है वही में करता हूँ। तो कहो कि मै ईश्वरको नहीं मानता हूं तो इतना तो कर कि मुझे अपने

दिलके अनुसार करने दे। तो कहा कि ईश्वर तो हम हैं। मैंने कहा तो परमेश्वर कहाँ जायगा। ईश्वर तो एक है। हाँ, यह ठीक है कि पञ्चपरमेश्वर हैं लेकिन पाँचका सवाल नहीं है। दुखीका बल परमेश्वर है लेकिन दुखी खुद परमात्मा नहीं। जब मैं दावा करता हूं कि जो एक बहिन है, मेरी सगी बहिन है, लड़की है तो मेरी सगी लड़की है इस तरहसे उनका दुःख मेरा दुःख हुआ तो आप ऐसा क्यों मानते हैं कि मैं दुखको नहीं जानता, आपके दुखोंमे मैं हिस्सा नहीं लेता, मैं हिन्दुओं और सिखोंका दुश्मन हूं और मुसलमानोंका दोस्त हूँ। उसने साफ साफ कह दिया। कोई गाली देकर लिखता है। कोई विवेकसे लिखता है कि हमको छोड़ दो, चाहे हम दोजखमे जायँ तो क्या। तुमको क्या पड़ी है, तुम भागो? मैं किसीके कहनेसे कैसे भाग सकता हूं किसीके कहनेसे मैं खिदमतगार नहीं बना हूँ, किसीके कहने से मै मिट नहीं सकता हूं, ईश्वरके चाहनेसे, मैं जो हूँ बना हूँ। ईश्वरको जो करना है सो करेगा। ईश्वर चाहे तो मुझको मार सकता है। मैं समझता हूँ कि मैं ईश्वरकी बात मानता हूँ। एक डाँटता है, दूसरे लोग मेरी तारीफ करते हैं तो मैं क्या करूँ। मैं हिमालय क्यों नहीं जाता। वहाँ रहना तो मुझको पसन्द पड़ेगा। ऐसा नहीं है कि मुझको वहाँ खाना, पीना, ओढनेको नहीं मिलेगा—वहाँ जाकर शांति मिलेगी लेकिन मैं अशान्तिमेसे शान्ति चाहता हूं नहीं तो उस अशान्तिमे मर जाना चाहता हूं। मेरा हिमालय यहाँ है। आप सब हिमालय चले तो मुझको भी आप लेते चलें।

शरणार्थी मेहनत करें

मेरे पास शिकायते आई है—सही शिकायते हैं—कि यहाँ शरणार्थी पड़े हैं, उनको खाना देते हैं, पीना देते हैं, पहननेको देते है, जो हो सकता है, सब करते हैं लेकिन वे मेहनत करना नहीं चाहते, काम नहीं करना चाहते हैं। जो उनकी खिदमत करते है, उन लोगोंने लम्बा-चौड़ा लिखकर दिया है, उससे मैं इतना ही कह देता हूँ। मैंने तो कह दिया है अगर दुख मिटाना चाहते हैं, दुखमेसे सुख निकालना चाहते हैं, दुखमे भी हिन्दुस्तानकी सेवा करना चाहते हैं साथमे अपनी भी सेवा हो जाती है तो दुखियोंको तो काम करना ही चाहिए। दुखीको ऐसा हक नहीं है कि वह काम न करे और मौज एव शौक करे। गीतामे तो कहा है—'यज्ञ करो और खाओ', यज्ञ करो और शेप रह जाता है उसको खाओ। यह मेरे लिए है और आपके लिए नहीं है, ऐसा नहीं है—सबके लिए है। जो दुखी है उनके लिए भी है। एक आदमी कुछ करे नहीं,

बैठा रहे और खाये तो ऐसा नहीं हो सकता। करोड़पति भी काम न करे और खाये तो वह निकम्मा है, पृथ्वीपर भार है। जिस आदमीके घर पैसा भी है, वह भी मेहनत करके खाय तब बनता है। हाँ, यदि कोई लाचारी है—पैर नहीं चलता है या वृद्ध हो गया है तो बात दूसरी है लेकिन जो तगड़ा है, वह क्यों न करे। जो काम कर सकता है वह काम करे। शिविरमे जो तगड़े पड़े हैं उनको पैखाना भी उठाना चाहिये। चर्खा चलाये तो वह भी चलायें। इस तरहसे जो काम बन सकता है, करे। जो काम नही जानते वह काम लड़कोंको सिखायें, इस तरहसे काम ले। लेकिन कोई कहे कि केम्ब्रिजमें सिखाते हैं वैसे सिखाये, मै मेरा बाबा तो केम्ब्रिजमें सीखा था तो लड़कोंको वहाँ भेजो, तो यह कैसे हो सकता है? मैं तो इतना कहूँगा कि जितने शरणार्थी हैं वे काम करके खायें, उन्हें काम करना ही चाहिये।

किसान राज्यकी आवश्यकता

आज एक किसान राजकी बात है। एक सज्जन आये थे, भूल गया उनका नाम। मैंने तो कह दिया था कि मेरी चले तो गवर्नर जनरल किसान होगा, मेरा चले तो हमारा वड़ा वजीर किसान होगा—सब किसान होगा क्योंकि यहाँका राजा किसान है। मुझको वचपनसे सिखाया था—एक कविता है 'हे किसान, तू बादशाह है।' किसान जमीनसे पैदा न करे तो हम क्या खायेंगे। हिन्दुस्तानका सचमुच राजा तो वही है लेकिन आज हम उसको गुलाम बनाकर बैठे हैं। आज किसान क्या करे? एम० ए० बने, बी० ए० बने—ऐसा किया तो मिट गया, पीछे कुदाली नहीं चलायगा। जो किसान अपनी जमीनसे निकाले और उसे खाय, ऐसा आदमी जनरल बने, प्रधान बने तो हिन्दुस्तानकी शक्ल बदल जायगी—आज जो सड़ा पड़ा है वह नहीं रहेगा। [२६ जनवरीकी प्रार्थना सभाका भाषण]

———

सब व्याधियों की औषधि 'राम'

प्रकाशमान पुरुष

हम बड़े भाग्यशाली हैं और हमें कृतज्ञ होना चाहिए कि ईश्वरने हमें ऐसा प्रकाशमान समकालीन पुरुष दिया कि—वह भावी पीढ़ियोंके लिए भी प्रकाश स्तंभका काम देगा।

गांधीजी बिना किसी बाहरी शक्तिकी सहायताके अपने देशकी जनताके नेता है। वे एक ऐसे राजनीतिज्ञ हैं जिसकी सफलता किसी कौशल या शास्त्रीय ज्ञानपर नहीं वरन् विश्वास उत्पन्न करनेवाले उनके व्यक्तित्वपर आधारित है। वे एक ऐसे विजयी योद्धा हैं जिसने बल प्रयोगसे सदा घृणा की है। वे धीमान और विनयशील तथा दृढ़प्रतिज्ञ और अडिग दृढ़तावाले व्यक्ति है, जिसने अपने लोगोंको ऊपर उठाने और सुखी बनानेमें अपनी सारी शक्ति लगा दी है। उन्होंने निश्छल मानवोचित तेजसे यूरोपकी बर्बरताका सामना किया है और इस प्रकार वे सदा ऊँचे उठे।

आनेवाली पीढ़ियाँ, संभव हैं, शायद ही यह विश्वास करे कि इनकी तरहका कोई व्यक्ति इस पृथ्वीपर कभी हुआ था।

अलबर्ट आइन्सटीन

गांधी के नामपर

जो लोग लेनिनके उद्देश्यके लिए मरे, वे वीर मालूम होते हैं, किंतु जो गांधीके नामपर मरेंगे वे बहादुर और शहीद दोनों ही प्रतीत होंगे।

मैं यह बिलकुल सही-सही कह सकती हूँ कि गाँधीजीसे परिचय होनेके कारण मुझमे कुछ परिवर्तन हो गया है। जीवनमे किसी कदर रस आ गया है, कुछ वह वस्तु उसकी आभा मिली है, जिसे दूसरे अधिक उपयुक्त शब्दके अभावमें हम प्रेरणा कहते है।

क्लेयर शेरीडन

बापू का प्रिय भजन

वैष्णव जन तो तेने कहीए जे पीड पराई जाणे रे,
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे,
सकल लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे,
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेरी रे,
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे,

जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर धन नव झाले हाथ रे,
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे,
रामनामशुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे,
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे,
भणे नरसैंयो तेनुं दरसन करतां, कुल एकोतेर तार्या रे !

बापू की सायंकालीन प्रार्थना

बौद्ध मन्त्र—

नम्यो हो रेंगे क्यों

उपनिषत् मन्त्र—

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥
यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥

गीता; अध्याय—२

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ?
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥ ५४ ॥
प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ५५ ॥
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५६ ॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहः तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५७ ॥
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥
विषया विनिवर्त्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्ज रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्त्तते ॥ ५९ ॥
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥
ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ ६२ ॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६३ ॥
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥

प्रसादे सर्वदुखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥
नास्तिबुद्धिरयुक्तस्य नचायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतःसुखम् ॥ ६६ ॥
इन्द्रियाणा हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञा वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ ६७ ॥
तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्या जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ ६९ ॥
आपूर्य्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा य प्रविशति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥ ७० ॥
विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥ ७१ ॥
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैना प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्म निर्वाणमृच्छति ॥ ७२ ॥

एकादश व्रत—

अहिंसा सत्यमस्तेय ब्रह्मचर्यमसग्रहः शरीरश्रमोऽनास्वादः सर्वत्र भयवर्जनम्।
सर्वधर्मे समानत्व स्वदेशि-स्पर्शभावना, इत्येकादश सेवाभिर्नम्रत्वेव्रतनिश्चये ॥

जरतुश्ती गाथा—

मजदा अत मोइ वहिश्ता स्रवा ओस्चा श्योथनाचा वओचा
ता—तू वहू मनघहा अशाचा हूपुदेम स्तुतो
क्षमा का अथ्या अहूरा फेरपेम् वस्ना हइ श्येम दाओ अहूम।

कुरानकी आयत—

अऊजु बिल्लाहिं मिनश् शैत्वानिर रजीम्।
बिस्मिल्लाहिर् रहमानिम् रहीम् ॥
अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन्।
अर रहमानिर् रहीमि मालिकी यौमिद्दीन् ॥
ईयाक, नअबुदु व ईयाक नस्तईन्।
इह् दिनस्, सिरावत्ल् मुस्तकीम् ॥
सिरात्वल् लजीन्त अनूअम्त अलै हिम्।
गैरिल मन दूबूबि अलै हिम् वलद् द्वाल्लीन् ॥

रामधुन

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम
सीताराम जय सीता राम, पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान
रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम

जय राम जय राम जय जय राम
पतित पावन सीताराम
भज मन प्यारे राम रहीम
भज मन प्यारे कृष्ण करीम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम।